वाणी

2023-24

महाविद्यालय भवन – वर्तमान स्वरूप

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय
शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

Our student Akshita Sharma receiving NSS award from Hon'ble President.

Achievements

SUO Sangmitra Singh secured Grade-A
In All India Basic Mountaineering camp 20

वाणी

वार्षिक पत्रिका

2023-24

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय
शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

नूतन गौरव गान

प्रदेश का है आकर्षण, नूतन महाविद्यालय
सरोजिनी नायडू कन्या महाविद्यालय
छात्राएँ संचित करतीं
संस्कारों का ज्ञान...
जहाँ आदर्शों का है मान
माँ सरस्वती का वरदान
उच्च कोटि का अनुसंधान
शिक्षक देते ऐसा ज्ञान
छात्राएँ संचित करतीं, संस्कारों का ज्ञान
शिक्षा के संग-संग में
नैतिकता का पाठ पढ़ें
सामाजिक कार्यों में भी
कर्तव्य अपना निभाएँ
पवित्र ज्ञान की भूमि से
अलग अलग क्षेत्रों में
वर्चस्व अपना बना के
जग में छात्राएँ चमकें
छात्राएँ संचित करतीं, संस्कारों का ज्ञान
प्रदेश का है आकर्षण, नूतन महाविद्यालय
छात्राएँ संचित करतीं, संस्कारों का ज्ञान
प्रदेश का है आकर्षण, नूतन महाविद्यालय
सरोजिनी नायडू कन्या महाविद्यालय

गीतकार - अनुभी राठी (पूर्व छात्रा)
संगीतकार - डॉ. वीनस तरकसवार (पूर्व छात्रा)

वाणी
2023-24

संरक्षक
डॉ. शैलबाला सिंह बघेल
प्राचार्य

सम्पादक
डॉ. कीर्ति शर्मा

सह-सम्पादक
डॉ. सोनल चौधरी
डॉ. राजकुमारी सुधीर
डॉ. श्रीजा त्रिपाठी शर्मा

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय
शिवाजी नगर, भोपाल (म. प्र.) 462 016

VISION

CREATING NEW PARADIGMS OF PROGRESSIVE, INCLUSIVE AND ETHICAL EDUCATION.
प्रगतिशील, समावेशी एवम् नैतिक शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रतिमान स्थापित करना।

MISSION

TO EMPOWER YOUNG WOMEN WITH MULTI-SKILL EDUCATION AND PREPARE THEM FOR A RESPONSIBLE DYNAMIC ROLE IN SOCIETY

युवा महिला शक्ति को बहुमुखी कौशल विद्या में सशक्त करने एवम् समाज के प्रति उत्तरदायी व उर्जावान भूमिका के लिए तैयार करना।

भारतदेशम

भारत देश नाम भयहारी, जन जन इसको गायेंगे
सब शत्रु भाव मिट जायेंगे।।
विचरण होगा हिमाच्छन्न शीतल प्रदेश में,
पोत संतरण विस्तृत सागर की छाती पर
होगा नव निर्माण सब कही देवालय का
पावनतम भारत भू की उदार माटी पर
यह भारत है देश हमारा, कह कर मोद मनायेंगे
सब शत्रु भाव मिट जायेंगे।।
छत्री बाड़े से खीले से वायुयान तक
अपने घर ही तैयार करायेंगे हम
कृषि के उपयोगी यंत्रों के साथ ही
इस धरती पर वाहन अन्य बनायेंगे हम
दुनिया को कम्पित कर दे ऐसे जलयान चलायेंगे
सब शत्रु भाव मिट जायेंगे।।
मंत्र तंत्र सीखेंगे, नभ को भी नापेंगे
अतुल सिन्धु के तल पर से होकर आयेंगे
हम उड़ान भर चन्द्रलोक में चन्द्रवृत का
दर्षन कर मन को आनंदित पायेंगे
गली गली के श्रमिकों को भी शस्त्र ज्ञान सिखलायेंगे
सब शत्रु भाव मिट जायेंगे।।

सुब्रहमण्यम भारती
(11 दिसम्बर 1882 - 11 सितम्बर 1921)
अनुवादक - श्री विश्वनाथ सिंह

मंगुभाई पटेल
MANGUBHAI PATEL

राज भवन
भोपाल-462052
RAJ BHAVAN
BHOPAL-462052

राज्यपाल, मध्यप्रदेश
GOVERNOR OF MADHYA PRADESH

क्रमांक 11 /राजभवन/2024
भोपाल, दिनांक-24 जनवरी, 2024

संदेश

हर्ष का विषय है कि सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, भोपाल की वार्षिक पत्रिका वाणी का प्रकाशन किया जा रहा है। विद्यालय की बौद्धिक संपदा को प्रदर्शित करने का पत्रिका सराहनीय पहल है।

छात्राओं में मौलिक सोच एवं इच्छाशक्ति को प्रकट करने का महत्वपूर्ण मंच शैक्षणिक संस्थानों की पत्रिकाएँ होती हैं। रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों को मिल जुलकर कार्य करने और जीवन के व्यवहारिक अनुभव प्रदान करती हैं। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यंत उपयोगी एवं सार्थक होती हैं। महाविद्यालय की प्रतिभा और विद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों की गुणवत्ता से समाज के साथ संवाद का पत्रिका माध्यम होती है।

आशा है, पत्रिका वाणी का उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन छात्राओं की सृजनात्मकता को मूर्त रूप प्रदान करने का सार्थक प्रयास सिद्ध होगा।

शुभकामनाएं,

(मंगुभाई पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858832, ई-मेल : mprajbhavan@mp.gov.in

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेश

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका "वाणी" का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिका में उपयोगी महत्वपूर्ण जानकारियों तथा उपलब्धियों का समावेश होता है जिससे छात्राओं में सामाजिक एवम् राष्ट्रीय दायित्व का बोझ उत्पन्न होता है। वर्तमान के प्रतियोगी युग में छात्राओं में शिक्षा तथा कौशल दक्षता होना अति आवश्यक हो गया है।

मुझे आशा है कि "वाणी" का प्रकाशन छात्राओं के सामाजिक, बौद्धिक एवम् सांस्कृतिक मूल्यों के विकास और उनकी रचनात्मक प्रतिभा को निखारने में सफल होगा।

"वाणी" के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. मोहन यादव)
माननीय मुख्यमंत्री,
म.प्र. शासन

6, श्यामला हिल्स, भोपाल - 462 002

इन्दर सिंह परमार

मंत्री
उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष
मध्यप्रदेश शासन

जावक क्रमांक 177 मंत्री/उ.शि.त.शि. एवं आ./2024
दिनांक : 23-01-24

// संदेश //

अत्यंत हर्ष का विषय है कि सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल द्वारा वार्षिक पत्रिका **'वाणी'** का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिका में महाविद्यालयीन गतिविधियों एवं उपलब्धियों के उल्लेख के साथ-साथ छात्राओं की रचनात्मक गतिविधियों का समावेश किया है, जो कि अत्यंत सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका जीवंत अभिलेख के रूप में छात्राओं के लिए अपनी उपयोगिता सिद्ध करेगी।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली वार्षिक पत्रिका **'वाणी'** के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(इन्दर सिंह परमार)

प्रति,

प्राचार्य,
सरोजिनी नायडू शा. कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल।

कार्यालय : कक्ष क्रमांक ई-206, वल्लभ भवन-III, मंत्रालय, भोपाल, दूरभाष : 0755-2708685
निवास : बी-4, श्यामला हिल्स, भोपाल, दूरभाष (नि.) : 0755-2446227, 2471875
ई-मेल एड्रेस : office.minse@gmail.com

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय

भोपाल -462026 मध्यप्रदेश (भारत)

प्रो. एस.के. जैन
कुलपति

Prof. S.K. JAIN
Vice Chancellor

Date 19/01/2024

Ref. 12/VC/2024

संदेश

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल से सम्बद्ध 'सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, भोपाल' महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में स्थापित है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि संस्थान की वार्षिक पत्रिका "वाणी" 2023–24 प्रकाशित की जा रही है। महाविद्यालयीन पत्रिका संस्थान की अकादमिक एवम् पाठ्येत्तर गतिविधियों की जानकारी के साथ छात्राओं को अपनी मौलिक अभिव्यक्तियों के प्रकट करने का एक सशक्त मंच उपलब्ध कराती है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामानाएँ।

(प्रो. सुरेश कुमार जैन) 19/01/24
कुलपति

Phone : + 91-755-2517001, 2517002 E-Mail : buvcmp@nic.in, Web. : www.bubhopal.ac.in

फोन : 0755-2551574
0755-2441271

कार्यालय आयुक्त, उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश शासन

सतपुड़ा भवन, भोपाल-462004

निशांत बरबडे
आयुक्त

अर्द्ध शा.पत्र क्र.73/45/आउशि/24
दिनांक–6/02/2024

संदेश

हर्ष का विषय है कि प्रदेश की राजधानी में स्थित और महिला शिक्षा में संलग्न सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल की वार्षिक पत्रिका 'वाणी' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय का मूल उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए अकादमिक गतिविधियों का सुचारू संचालन होता है, परंतु छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए शैक्षणेत्तर गतिविधियाँ भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

वार्षिक पत्रिका अध्ययनरत छात्राओं की लेखन प्रतिभा निखारने में सहायक होती है। साथ ही पत्रिका में संकलित सामग्री तत्कालीन छात्राओं की सुनहरी स्मृतियों का दर्पण भी होती है।

'वाणी' के सफल तथा सार्थक प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

(निशांत बरबडे)
आयुक्त, उच्च शिक्षा

प्रति,
प्राचार्य,
सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल

From the Principal's desk.....

It gives me immense pleasure to present another issue of our college magazine 'VAANI' which is a collection of artistic and literacy talent of our students and faculty. Established in 1970, Sarojini Naidu Govt. Girls Post Graduate (Autonomous) College, popularly known as Nutan College, Bhopal is a premier multi-faculty education institution catering to the educational needs of female students of Bhopal and its peripheral areas. This institute is an Autonomous college and is affiliated to the Barkatullah University, Bhopal.

I am delighted to be a part of this esteemed and prestigious institution, having a NAAC 'A' Grade. The top priority of the college is to provide an inclusive platform to women by imparting quality education with special focus on skill development so that no woman is devoid of fruitful education and employment. The Indian system of education is slightly different from that of other countries but with the implementation of new policies of education, it is evolving. Our college also believes in evolving as per the advancements in education technology. The overall range of courses and college ambience provides an environment for holistic development and growth of female students. We as educationists are invigorated by the sheen energy that surrounds us. I have a long association with the education sector, and the relation with the young blood has always kept me motivated to dedicate something fruitful to the field of women's education.

From this vantage point, we feel pride in saying that many generations entered the threshold of this institution, filled its classrooms, performed in its Auditorium, played on its fields and then excelled in their careers to mark their prestigious place in this world. These female students are our strength and also the validation of our existence.

My message for the students is based on a quote from Lord Alfred Tennyson's poem 'Ulysses', which says "to strive, to seek and never to yield". The women must strive to mark their place as the strong and indispensable part of the society and should seek knowledge to reach new horizons; above all, they should never yield before tough circumstances and should practice perseverance, resilience and patience with utmost fortitude.

With best wishes.

(Shailbala Singh Baghel)
Principal

सम्पादकीय

संसार की प्रत्येक भाषा में उसे बोलने वाले समाज की समस्त संचार-अभिव्यक्ति को पूरा करने की स्वभाविक क्षमता होती है। सम्पूर्ण विश्व के विद्वजनों ने स्वीकार किया है कि मानव विकास में मातृभाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मातृभाषा ही वह भाषा है जिसमें कोई व्यक्ति स्वभाविक रूप से सोचना, समझना और सीखना प्रारम्भ करता है। मातृभाषा रूपी इस उपकरण के माध्यम से चिंतन, मनन के लिए किसी अतिरिक्त श्रम या किसी अनुवाद की आवश्यकता नहीं होती। जैसे जैसे व्यक्ति बढ़ता है वह उस भाषा की शब्दावली को आत्मसात करता जाता है और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता भी विकसित होती है। प्रकृति की यही स्वभाविक प्रक्रिया है। इसलिए मातृभाषा को पहली मूल भाषा के रूप में सीखना चाहिए। मातृभाषा बौद्धिक क्षमता का वह हिस्सा है जो बच्चे के मानसिक, नैतिक और भावनात्मक विकास में सहायक है। इसी तथ्य को केन्द्रित कर इसरो के पूर्व अध्यक्ष डॉ. कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020में कहा गया है कि जैसे किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी मातृभाषा के महत्व की सबसे अच्छी और सटीक तुलना करने के लिए माँ का स्पर्ष सर्वश्रेष्ठ होता हैं वैसे ही उसके सम्वेगात्मक, बौद्धिक और भाषिक विकास के लिए माँ की बोली। मातृभाषा की इस भूमिका पर सम्पूर्ण विश्व में कहीं भी मत भिन्नता नहीं है।

शिक्षा में मातृभाषा की केन्द्रीय भूमिका होती है। मातृभाषा के माध्यम से सीखने में अपेक्षाकृत अधिक गहराई, अधिक तीव्रता और समग्र प्रभाव पड़ता है। महात्मा गाँधी का कहना था कि भारत में यदि विज्ञान की शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाती तो भारत में अधिक आविश्कारक होते। यूनेस्को के 2008के एक प्रतिवेदन में उल्लेखित किया गया है कि मातृभाषा में सीखने का संज्ञानात्मक और भावनात्मक मूल्य है। जब बच्चे मातृभाषा के माध्यम से सीखते हैं तो वे अवधारणाएँ और बौद्धिक कौशल सीख रहे होते हैं। पंडित मदनमोहन मालवीय ने भाषा के विषय में स्पष्ट रूप से कहा था- "राष्ट्रीय शिक्षा अपनी उत्तमता के शिखर पर तब तक नहीं पहुँच सकती जब तक जनता की मातृभाषा अपने उचित स्थान पर षिक्षा के माध्यम तथा सर्वसाधारण के व्यवहार के रूप में स्थापित न की जाए।"

वर्तमान में हमारा देश 'युवा देश' के विशेषण से अलंकृत है, अतएव, युवाओं को उच्चतर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही देश का सुनहरा भविष्य सुनिश्चित किया जा सकता है। भारत की नई शिक्षा नीति में इसी बात का विशेष ध्यान रखा गया है। भारतीय संस्कृति और दर्शन से समूचा विश्व प्रभावित रहा है। सनातन भारतीय ज्ञान और विचारों की समृद्ध परम्परा के आलोक में तैयार राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सन् 2021.22 से क्रियान्वित की जा रही है। यह नीति उच्च शिक्षा प्रणाली में आमूल चूल बदलाव और नव-उत्साह के संचार में सहायक होकर वर्तमान चुनौतियों का सामना करने में सक्षम युवा वर्ग का निर्माण करेगी।

हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'वाणी' शब्दांकित हुई है। प्रगति पथ पर निरंतर चलते हुए जब हम किसी उल्लेखनीय पड़ाव पर पहुँचते हैं तो यह पल अविस्मरणीय होता है। हमारी सभी सृजनात्मक गतिविधियों की प्रेरणा स्त्रोत हमारी प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल के स्नेहिल मार्गदर्शन से 'वाणी' का यह अंक प्रस्तुत हो सका। इसमें महाविद्यालय की शैक्षणिक और शैक्षणेत्तर गतिविधियों, सर्वतोन्मुखी प्रगति की दिशा में किए जा रहे अनथक प्रयासों तथा प्राध्यापकवृंद और छात्राओं की मौलिक अभिव्यंजनाओं की छटा दिखाई पड़े तो हम अपने इस प्रयास को सार्थक एवम् सफल समझेंगे।

डॉ. कीर्ति शर्मा
सम्पादक

अनुक्रमणिका

क्र.	अंतर्वस्तु	रचनाकार	पृ.संख्या
1	प्रशासकीय अधिकारी की कलम से	डॉ. अशोक नेमा एवं डॉ. मनीषा शर्मा	1
2	महाविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियाँ	संकलित	2
3	स्वशासी प्रकोष्ठ	डॉ. वंदना शर्मा	4
4	वनस्पति शास्त्र विभाग	डॉ. संजय सहाय	6
5	Department of Chemistry	Dr. Shailja Kamle	7
6	वाणिज्य विभाग	डॉ. सुरिन्दर कौर बतरा	8
7	Department of Computer Science	Dr. Seema Hardikar	9
8	छात्रा संघ परामर्श समिति	डॉ. सीमा पाठक	10
9	अर्थशास्त्र विभाग	डॉ. अर्चना गौड़	11
10	चित्रकला विभाग	डॉ. रश्मि जोशी	15
11	English Department	Dr. Indira Javed	17
12	Geography Department	Dr. Kusum Mathur	19
13	हिन्दी विभाग	डॉ. कीर्ति शर्मा	21
14	इतिहास विभाग	डॉ. चित्रा आम्रवंशी	23
15	पुस्तकालय	डॉ. अमर नायक	24
16	Department of Mathematics	Dr. Kavita Shrivastava	26
17	संगीत विभाग	डॉ. सुधा दीक्षित	28
18	संस्कृत विभाग	डॉ. छाया चंद्रवंशी	28
19	राजनीति शास्त्र विभाग	डॉ. वंदना सिंह	29
20	मनोविज्ञान विभाग	डॉ. संतोष रलवानिया	30
21	उर्दू विभाग	डॉ. छाया चंद्रवंशी	31
22	समाज शास्त्र एवम् समाज कार्य विभाग	डॉ. माधवी लता दुबे	32
23	भौतिक शास्त्र विभाग	डॉ. प्रतिष्ठा खरे	34
24	क्रीड़ा विभाग	डॉ. रश्मि केला होलानी	35
25	टेक्सटाईल एवम् क्लोदिंग विभाग	डॉ. रंजना त्रिवेदी	39
26	आहार एवम् पोषण विभाग	डॉ. अनिता चौरसिया	41
27	प्राणी शास्त्र विभाग	डॉ. मुकेश दीक्षित	42
28	Internal Quality Assurance Cell	Dr. Mukesh Dixit	46
29	E- Cell & Incubation Center	Dr. Ranjana Upadhyay	47
30	लीगल एड क्लिनिक - समाधान	डॉ. मनीषा शर्मा	50
31	हिन्दी साहित्यिक गतिविधि समिति	डॉ. कीर्ति शर्मा	52
32	Activities of English Literary Society	Dr. Sonal Choudhary	56
33	ईको क्लब	डॉ. दीप्ति संकत	58
34	शिक्षक अभिभावक योजना	डॉ. श्रद्धा दुबे	58
35	Earn while you learn	डॉ. लक्ष्मी अग्निहोत्री	60
36	स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन सेल	डॉ. प्रमोद चतुर्वेदी	60
37	एन. सी. सी.	डॉ. अर्चना सिंह	63
38	वरिष्ठजन/जराचिकित्सा क्लब	डॉ. अर्चना चौहान	67
39	हमारा संग्रहालय धरोहर	डॉ. ममता सिंह	68
40	युवा उत्सव 2023	डॉ. संजना शर्मा	69

41	Enabling Unit	Dr. Rohit Trivedi	70
42	राष्ट्रीय सेवा योजना	डॉ. मंजुला विश्वास	71
43	नूतन ओल्ड गर्ल्स एसोसियेशन (नोगा)	डॉ. अर्चना गौड़	72
44	हमारा छात्रावास	डॉ. भावना रमैया	74
45	बचपन की स्मृतियाँ	डॉ. माधवी लता दुबे	76
46	कुण्ठाग्रसित विश्व और भटकते युवाओं को दिशा देती भारतीय ज्ञान-परम्परा	डॉ. चित्रा आम्रवंशी	80
47	सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक एवं पर्यटन का एक गौरवशाली केन्द्र-विदिशा स्थित हिलियोडोरस स्तंभ	डॉ. संजना शर्मा	83
48	आज कल और कल आज बन जाता है	डॉ. सूरेन्द्र बिहारी गोस्वामी	85
49	बच्चों के मानसिक विकास में पोषक तत्वों की महत्ता	डॉ. सविता खरे	88
50	मध्यप्रदेश की लोक नाट्य कला	डॉ. अर्पणा बादल	89
51	नृत्य विभाग	डॉ. रिचा पाठक	92
52	Importance of Algebra in Real Life	Akanchha Singh	92
53	Special Needs Education and Funding Provisions	Dr. Mona Khare (NOGA)	93
54	भारत में चुनाव व्यवस्था : महत्वपूर्ण मुद्दे	सुश्री अंजू सिंह, शोधार्थी, हिन्दी	96
55	मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा- वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ	सुश्री सुचिता श्रीवास्तव, शोधार्थी, हिन्दी	98
56	हिन्दी में रोजगार के बढ़ते अवसर	सुश्री सुकन्या देवी (पूर्व छात्रा)	103
57	Social media: The new villain for happy marriages?	Tahoora Khan, B.A. III	104
58	जीवन उपवन	डॉ. रानू वर्मा	106
59	My dear 14 year old self	Akanksha Dabral B.A. II	107
60	भारत का गणतंत्र	अपर्णा चौबे बी.ए. तृतीय वर्ष	108
61	भारत की संस्कृति	दीपा शर्मा बी.ए. तृतीय वर्ष	109
62	हाँ मैं लड़की हूँ	वैष्णवी जया	110
63	Nature's Poem	Shivali Dubey M.A.	110
64	स्वाधीनता	संजना लोधी बी.ए. प्रथम वर्ष	111
65	हमारी संस्कृति	दिव्यांशी लिटोरिया बी.ए. द्वितीय वर्ष	111
66	Mist	Sonam Upadhyay B. Sc. I	112
67	As you begin with your 80's	Durva Sharma B. Com. III	113
68	Dreams	Shreya Upasani M.A.	114
69	The Blue Canvas	Sneha Dehariya B.A. I	114
70	Soldier never die	Deepa Sharma B.A. II	115
71	जीवन संघर्ष	अर्चिता चावड़ा एम.एस-सी	116
72	विजय पताका	मान्या गुर्जर बी.ए. द्वितीय वर्ष	116
73	पूर्ण	प्रियंका चौधरी एम. ए.	117
74	जिंदगी बसर करना	मदीहा हफीज बी. कॉम तृतीय वर्ष	117
75	The Blue Blanket	Aasiya Zehra B. Sc. I	118
76	The Only Moon	Shreya Dehariya B.A. I	118
77	नदी	कंचन पाटेकर एम. ए.	119
78	एक बेटी के मन के विचार	निधि अहिरवार एम.ए.	120
79	बच्चा हूँ बच्चा रहने दो	रविना प्रजापति एम. ए.	120
80	क्या कहूँ किससे कहूँ	शिफा हुसैन	121
81	हमारा महाविद्यालयः मीडिया में	संकलन	124

प्रशासकीय अधिकारी की कलम से.....

मध्य प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग की सक्रिय इकाई महाविद्यालय होता है जो कि शारीरिक, मानसिक एवम् बौद्धिक क्षमताओं का विकास कर छात्राओं को राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार कर के समाज को सौंपने के नैतिक दायित्व का वहन करता है। हमारे महाविद्यालय की संरचना निम्नानुसार है।

महाविद्यालय में प्राचार्य की केन्द्रीय भूमिका है। प्रशासनिक, शैक्षणिक एवम् शैक्षणेत्तर गतिविधियों के सुचारू संचालन हेतु महाविद्यालय की छात्राओं की विशाल संख्या तथा विस्तृत गतिविधियों को ध्यान में रखकर दो प्रशासनिक अधिकारियों को उक्त कार्य का दायित्व दिया गया है। सत्र 2022-23 के दौरान राज्य शासन से प्राप्त नीति निर्देशों और योजनाओं का महाविद्यालयीन स्तर पर क्रियान्वयन के प्रशासकीय कार्य में योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण कर प्राचार्य की सहायता करना, महाविद्यालय के मूल उद्देश्यों एवम् लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए योजना बनाकर उसका सफल क्रियान्वयन किया गया। प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा विगत् सत्र 2022-23 के दौरान शासकीय योजनाओं, दिशा निर्देशों, समाज तथा छात्राओं के मध्य परस्पर सफल समन्वय स्थापित किया गया। महाविद्यालय में NAAC मूल्यांकन की प्रक्रिया में निरंतर आवश्यक सहयोग कर महाविद्यालय को ऊँचाईयों तक पहुँचाने की दिशा में कार्य निष्पादित किया गया। प्रशासनिक अधिकारी तथा प्रबंधक की भूमिका में महाविद्यालय के दानों प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा निम्न उल्लेखनीय सहयोग प्रदान किया गया-

1. महाविद्यालय की शैक्षणिक एवम् शैक्षणेत्तर गतिविधियों एवम् प्रशासनिक कार्य हेतु नियोजन,
2. महाविद्यालय में दक्षता तथा कार्य क्षमता के अनुसार कार्य विभाजन एवम् निष्पादन,
3. महाविद्यालयीन स्टॉफ और छात्राओं को निरंतर सहयोग एवं समन्वय द्वारा प्रोत्साहित करना,
4. प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा महाविद्यालय की अधोसंरचना में विकास तथा रखरखाव को सुनिश्चित करना, एवम्
5. सभी स्तरों पर समन्वय कर प्राचार्य के मार्गदर्शन में महाविद्यालय में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण निर्मित करने का यथासम्भव प्रयास किया गया, परिणामस्वरूप महाविद्यालय को NAAC मूल्यांकन में 'A' श्रेणी से पुरस्कृत किया गया। सत्र के दौरान महाविद्यालय परिवार तथा छात्राओं में सकारात्मक तथा खुशनुमा माहौल बना रहा।

सत्र के दौरान प्राचार्य, प्राध्यापकवृंद, सहयोगी अधिकारी/कर्मचारियों एवम् छात्राओं से प्राप्त अपेक्षित सहयोग हेतु हृदय से आभार व धन्यवाद। समस्त अध्ययनरत छात्राओं को सुखद एवम् सफल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

डॉ. अशोक नेमा
प्रशासनिक अधिकारी

डॉ. मनीषा शर्मा
प्रशासनिक अधिकारी

महाविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियाँ

1. सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग के प्रशासकीय नियंत्रण में कार्यरत एक स्वशासी कन्या महाविद्यालय है। राज्य शासन ने सन् 1970 में इस महाविद्यालय की स्थापना की। सन् 1981 से यह महाविद्यालय अपने वर्तमान भवन से कार्यरत है।
2. मध्य प्रदेश के एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय होने के साथ इसे राष्ट्रीय मूल्यांकन एवम् प्रत्यायन परिषद् (नैक) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त है।
3. उल्लेखनीय है कि इस महाविद्यालय में नई शिक्षा नीति – 2020 के अंतर्गत आधुनिक पद्धति से शिक्षण कार्य संचालित किया जा रहा है।
4. Education World द्वारा आयोजित सर्वेक्षण के आधार पर हमारा महाविद्यालय सन् 2021-22 में मध्य प्रदेश राज्य के स्वशासी महाविद्यालयों में प्रथम स्थान पर तथा राष्ट्रीय स्तर पर चतुर्थ स्थान पर रहा है।
5. महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों, उपलब्धियों तथा शिक्षण सम्बंधी अद्यतन जानकारी संस्थान की वेबसाइट snggpg.in से आसानी से प्राप्त की जा सकती है।
6. राज्य में शासकीय स्वशासी महाविद्यालयों के प्रबंधन के लिए प्रचलित व्यवस्थाओं के अनुरूप ही इस महाविद्यालय का प्रबंधन किया जाता है।
7. जनभागीदारी समिति के सहयोग से महाविद्यालय के अकादमिक और विकासात्मक कार्यों का अनुमोदन किया जाता है।
8. एक प्रभावशाली अकादमिक कार्यक्रम और शिक्षण के अतिरिक्त यह महाविद्यालय छात्राओं को विभिन्न साहित्यिक, सांस्कृतिक एवम् वैज्ञानिक प्रकृति की पाठ्येत्तर गतिविधियों में प्रतिभागिता करने तथा अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के अनेक अवसर प्रदान करता है।
9. सभी वैधानिक समितियों यथा अध्ययन मण्डल, अकादमिक परिषद्, कार्यकारी परिषद्, वित्त समिति आदि का नियमानुसार गठन एवम् नियमित रूप से बैठकों का आयोजन किया जाता है।
10. महाविद्यालय में अनेक निर्माण तथा उन्नयन कार्य RUSA तथा World Bank के सहयोग से किए जा रहे हैं जिनमें कक्षाओं एवम् कैन्टीन का Renovation, नवीन कम्प्यूटर प्रयोगशाला का निर्माण, नए कम्प्यूटर, प्रिन्टर्स तथा फर्नीचर की उपलब्धता, नया पुस्तकालय और उन्नत स्वशासी भवन सम्मिलित हैं।
11. महाविद्यालयीन 'नूतन छात्रावास' में 115 छात्राओं के आवास की सुव्यवस्था है। छात्रावास में मनोरंजन तथा चिकित्सा, कम्प्यूटर, जिम तथा खेल कक्ष की व्यवस्था भी उपलब्ध है।
12. महाविद्यालय में नवीन ऑडिटोरियम, सोलर पैनल द्वारा उर्जा संरक्षण का कार्य, water harvesting units, नए वॉटर कूलर्स एवम् स्वच्छ पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता, common room एवं wash rooms आदि कार्य पूर्ण हो चुके हैं।
13. महाविद्यालय की छात्राओं के लाभार्थ समय समय पर आधार कार्ड, वाहन चालन लायसेंस तथा पैन कार्ड बनवाने हेतु शिविरों का आयोजन भी किया जाता है।
14. महाविद्यालय में आई टी प्रकोष्ठ सन् 2015 से निरंतर सक्रिय है जिसमें विभिन्न शैक्षणिक जानकारियाँ projector के माध्यम से दर्शाया जाती हैं। स्थानीय तथा राष्ट्रीय स्तर के live telecast भी इसी प्रकोष्ठ के सहयोग से छात्राओं तथा शिक्षकों तक उपलब्ध कराए जाते हैं।
15. महाविद्यालय में छात्राओं को उचित मार्गदर्शन तथा सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विभिन्न समितियाँ सतत् क्रियाशील हैं जैसे अनुशासन, रैगिंग विरोधी, पुस्तकालय, एन सी सी, एन एस एस, छात्रा संघ परामर्श, खेलकूद,

सांस्कृतिक समिति, स्वामी विवेकानंद व्यवसायिक मार्ग दर्शन योजना, छात्रवृत्ति आदि। इन समितियों के संयोजकों तथा सदस्यों से सम्पर्क कर छात्राएँ लाभान्वित होती हैं।

16. छात्राओं में कानूनी जागरूकता एवम् कानूनी सहायता के लिए जिला विधिक प्राधिकरण के समन्वय से लीगल एड क्लिनिक भी कार्यरत है। मध्य प्रदेश राज्य में महाविद्यालयीन स्तर पर कानूनी सहायता उपलब्ध कराने के आरम्भ का प्रथम गौरव इसी महाविद्यालय को है।

17. जनभागीदारी समिति के सहयोग से इनक्यूबेशन सेन्टर भी महाविद्यालय में क्रियाशील है जो इच्छुक छात्राओं को स्वरोजगार हेतु प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा आवश्यक प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध कराता है।

18. महाविद्यालय में मनो विज्ञान, समाज शास्त्र और मानव विकास विभागों ने संयुक्त रूप से दिनांक 09/01/2024 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

19. अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर सांकेतिक भाषा में राष्ट्रगीत की प्रस्तुति छात्राओं द्वारा प्रभावी ढंग से की गई।

20. दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) में आयोजित अखिल भारतीय पर्वतारोहण प्रशिक्षण शिविर में महाविद्यालय की कैडेट सुश्री संघमित्रा सिंह को 'A' ग्रेड प्राप्त हुआ।

21. क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय की छात्राओं ने 13 स्वर्ण तथा 12 रजत पदक प्राप्त किए। राष्ट्रीय स्तर पर शूटिंग प्रतियोगिता में सुश्री मोनिसा का चयन हुआ तथा सुश्री भव्या जैन ने बाँस कूद प्रतियोगिता में काँस्य पदक प्राप्त किया। सुश्री महक ठाकुर ने राष्ट्रीय स्तर पर आयेजित हॉकी प्रतियोगिता में सहभागिता की।

22. महाविद्यालय की छात्रा सुश्री रजनी तोमर ने 13-16 जनवरी 2024 में हैदराबाद में आयोजित राष्ट्रीय टारगेट बॉल प्रतियोगिता में राष्ट्रीय कोच की भूमिका निभाई।

23. सुश्री रजनी तोमर अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता में राष्ट्रीय टीम की कप्तान रही।

24. महाविद्यालय के हिन्दी विभाग की पूर्व छात्रा सुश्री आकृति द्विवेदी भारतीय रिजर्व बैंक में राजभाषा अधिकारी के पद पर नियुक्त हुई।

25. हिन्दी विभाग की ही पूर्व छात्रा सुश्री साक्षी राय का चयन सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में राजभाषा अधिकारी के पद पर हुआ।

26. अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस 2023 में सुश्री रक्षंदा खान को सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

27. सुश्री रक्षंदा खान के, लोकतांत्रिक संस्थाओं तथा लोकतांत्रिक शासन उन्नयन विषय पर दिए गए भाषण को संयुक्त राष्ट्र द्वारा सराहा गया।

28. रोटरेक्ट क्लब, दिल्ली द्वारा आयोजित "भारतीय राजनैतिक दलों की फन्डिंग में पारदर्शिता" विषय पर सुश्री रक्षंदा खान द्वारा लिखित निबंध को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

29. वन्य प्राणी सप्ताह 2023 में जलवायु परिवर्तन विषय पर आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में सराहनीय प्रदर्शन पर सुश्री रक्षंदा खान को माननीय राज्पाल, मध्य प्रदेश द्वारा सम्मानित किया गया।

30. महाविद्यालय की छात्रा सुश्री ऋतु राजा ने गणतंत्र दिवस समारोह 2024 की परेड में सहभागिता की।

31. डॉ. अर्चना सिंह, सहायक प्राध्यापक, भौतिक शास्त्र द्वारा निर्मित हस्तचालित टेबलेट पंचिंग मशीन का डिजाइन पेटेण्ट हेतु पंजीकृत हुआ है।

सुश्री अंकिता धाकड़
बी.ए. तृतीय वर्ष की कृतियाँ

स्वशासी प्रकोष्ठ

डॉ. वंदना शर्मा
परीक्षा नियंत्रक

1. सत्र 2022-2023 के अकादमिक कैलेंडर का पूर्णत: पालन किया गया।
2. 2022-2023 की प्रमुख उपलब्धि स्वशासी प्रकोष्ठ द्वारा छात्राओं का परिणाम एवं अंक सूची का डी जी लॉकर में अपलोड की गई। 2021-2022 से स्नातक कक्षाओं की छात्राओं के परीक्षा परिणाम अपलोड किये गये है जिसमे छात्राये अपने परीक्षा परिणाम डाउनलोड कर प्राप्त कर सकती है।
3. हमारा महाविद्यालय एकेडेमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC पोर्टल) (abcgov.in) पर रजिस्टर्ड है। निर्देशानुसार छात्राऐं स्वयं ही अपने आप को ABC पोर्टल पर रजिस्टर करने के उपरांत ABC ID को परीक्षा प्रकोष्ठ से साझा करेगी, अत: सभी छात्राओं के ABC ID प्राप्त होने पर उनके क्रेडिट ABC पोर्टल पर अपलोड किये जा सकेंगे। इस प्रकार छात्रा पंजीकृत होने के पश्चात स्वयं के क्रेडिट देख सकेगी एवं अन्य विश्वविद्यालय को आनलाइन ट्रांसफर भी कर सकेगी।
4. इस सत्र से आधार पाठ्यक्रम के प्रश्न पत्र 100% वैकल्पिक प्रकार से तैयार किये गये है । छात्राएं OMR शीट पर उत्तर मार्क करेंगी । इस प्रकार आधार पाठ्यक्रम में OMR शीट के उपयोग से मूल्यांकन समय की बचत होगी साथ ही साथ चेकिंग कास्ट में वित्तीय भार भी कम होगा। इस प्रकार स्वशासी प्रकोष्ठ परीक्षा कार्य की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर उन्नयन करते हुए समय, कागज़ एवं अन्य संसाधनो की बचत करने हेतु सतत् प्रयत्नशील है।
5. सत्र 2022-2023 मे परीक्षा मे विभिन्न संकायो से कुल 6272 छात्राऐं ने सम्मिलित हुईं जिसमें से 5776 छात्राएं उत्तीर्ण हुई।
6. स्वशासी प्रकोष्ठ द्वारा 6272 छात्राओं की CCE सैद्धातिक एवं प्रायोगिक परीक्षाएँ सफलता पूर्वक संचालित की गई।
7. परीक्षा परीणाम में उत्तीर्ण छात्राओं का प्रतिशत 90.62% रहा है।
8. सत्र 2022-2023 में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की उपाधि अर्जित करने वाली छात्राओं की संख्या 2010 रही।
9. विगत वर्ष में NAAC टीम के द्वारा स्वशासी प्रकोष्ठ की परीक्षा प्रणाली की सराहना की गई।
10. स्वशासी प्रकोष्ठ, महाविद्यालय एवं छात्राओं के हित को दृष्टिगत रखते हुए निर्देशों के अनुमोदनोपरांत सतत नवाचार करने हेतु प्रयत्न करेगा।

विभागीय गतिविधियां

वनस्पतिशास्त्र विभाग

डॉ. संजय सहाय
विभागाध्यक्ष

वनस्पतिशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय सहाय द्वारा भारत सरकार के प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विभाग के विज्ञान विभागों में शोध को प्रोत्साहन से संबंधित Curie योजना के अंतर्गत प्रस्ताव बनाये एवं प्रस्तुत किये गये। जिसके फलस्वरूप रूपये 63 लाख तथा 03 वर्ष के लिये 01 प्रोजेक्ट फेलो की स्वीकृति दी गयी है। इस योजना के Project Investigator डॉ. संजय सहाय है।

1. वनस्पतिशास्त्र विभाग की स्नातकोत्तर चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा सुश्री सौम्या राजपूत द्वारा GATE Exam 2023 परीक्षा एवं MP SET 2023 उत्तीर्ण किया गया।
2. वनस्पतिशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. संजय सहाय की शोध छात्रा सुश्री कनक चौधरी द्वारा MP SET 2023 परीक्षा उत्तीर्ण की।
3. Ph.D. Awareded to Dr. Tejpal Singh Parmar working under the supervision of Dr. Sanjay Sahay, HOD, Department of Botany
4. A Guest lecture on "Basics of immunity with special reference to viral infection" was delivered by Professor Himanshu Kumar, Professor, Department of Bioscience, IISER, Bhopal. The lecture covered molecular aspects of all innate and induced immunity. The lecture highlighted current interest in the immunology worldwide especially in the wake of COVID-19 pandemic and global effort to develop appropriate vaccine to protect human being.
5. A National Webinar on "Biodiversity Conservation: Challenges and Mitigation Measures" organized by jointly the department of Botany and Zoology on 28th Aug. 2023. This webinar sponsored by Department of Higher Education Govt. of M.P.
6. वनस्पतिशास्त्र विभाग की स्नातकोत्तर छात्राओं के लिये मेंटर मेंटी योजना के अंतर्गत छात्राओं की प्रथम बैठक का आयोजन दिनांक 02.12.2023 को किया गया। जिसमें उनके दायित्वों को विस्तार से बताया गया ।

Department of chemistry

Dr. Shailja Kamle
Head

In session 2022-23 department of chemistry organized many activity for the overall development of students. In the series of activities, World ozone day is celebrated by the department of chemistry on 16th September 2022.the purpose of celebrating this day is to make students aware of the protection of ozone layers. We are conducting a power point presentation program for M.Sc. students to exhibit their creativity and ideas towards importance to save our environment and save our ozone layer out of depletion. All M.Sc. final students presented their creativity by power point presentation. All faculty members of the department are present there.

Educational visit- on 24 Nov 2022 Educational visit organized by the department of chemistry for students of M.Sc. at "Minor forest produce processing and research centre, Vindhya Herbal, Barkheda Pathani, Bhopal". Student learns about the procurement of raw material for production of ayurvedic medicines and equipment used for extraction of herbal plants.The visit was mainly focused on to understand the procedure involved during production of ayurveda and herbal medicines and learn about technology and equipment used for quality testing of products. Students gain to knowledge about resource mobilization, research and development, and quality control unit of Vindhya Herbal .Students Learnt various process involved in procurement of herbs,separation,storage, griding,tablets formation and quality testing process explained by Mr Sonu Mehra.

Workshop : on 21 &22 Dec 2022 twodays' workshop organized by the department of chemistry for students of M.Sc. Students. FIRST DAY OF WORKSHOP (Venue – Chemistry Instrumentation Lab) Date - 21/12/2022 Experimental session consisted of demonstration of various screening methods for different compounds. All students were equally divided into seven groups. Each group attended all the equipment on a rotation.First instrument was UV-Visible spectrometer, then Flame-photometer after this pH Meter, Conductivity meter, Analytical and Digital balances, extraction unit than distillation unit.SECOND DAY OF WORKSHOP (Venue – Scan Laboratories Bhopal) Date – 22/12/2022 Students visited SCAN Laboratories. Learnt HPLC, Column Chromatography, TLC Participants agreed that the workshop had effectively demonstrated to them the importance of the instruments and the benefits that it could generate for their community. This will also benefit to them in identification of compounds and in qualitative and quantitative analysis of the substances.

Ozone day Celebration

Two days' workshop

वाणिज्य विभाग

डॉ. सुरेन्दर कौर बतरा
विभागाध्यक्ष

वाणिज्य विभाग में सत्र 2023-2024 में कुल 2500 छात्राएँ Computer Application, व्यावहारिक अर्थशास्त्र, विज्ञापन, विक्रय संवर्द्धन एवं विक्रय प्रबंधन में अध्ययनरत है।

दिनांक 10/01/2023 को स्नातक अंतिम वर्ष की 160 छात्राओं को वित्तीय साक्षरता जागरूक करने हेतु दो दिवसीय NISM के संयुक्त तत्वाधान मे कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 15/02/2023 का विभाग की छात्राओं द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। अंतिम वर्ष की छात्राओं द्वारा Income Tax विषय के पोस्टर एवं वर्किंग मॉडल की प्रदर्शनी में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

दिनांक 16/02/2023 को Resume Building Workshop का आयोजन किया गया जिसमें स्नातक अंतिम वर्ष की 75 छात्राओं ने भाग लिया। बी. काम प्रथम वर्ष की छात्राओं हेतु व्यावसायिक नियमन रूपरेखा मेजर विषय की online Quiz प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्नातकोत्तर की 57 छात्राओं को औद्योगिक भ्रमण हेतु वर्धमान फैब्रिक बुधनी व्यावहारिक ज्ञान हेतु ले जाया गया। माह अगस्त 2023 में 200 किलो चावल, 150 किलोआटा एवं 60 किलो मसाले कपड़े विभाग की छात्राओं एवं प्राध्यापकों द्वारा "अन्नदान महादान ड्राईव के अन्तर्गत एकत्र कर दिनांक 02.09.2023 को NGO प्रेरणासेवा ट्रस्ट हमीदिया अस्पताल में गरीब जरूरत मंद लोगों को अन्नदान किया गया। 05.09.2023 शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में विभाग की छात्राओं द्वारा मेंटरमेंटी योजना के अन्तर्गत कनिष्ठ कक्षाओं की विषय संबंधित शैक्षणिक कार्य किया। दिनांक 20/09/23 एवं 21/09/2023 को दो दिवसीय Learn to Earn विषय पर ट्रेनिंग का आयोजन किया गया दिनांक 07/08/23 को विभाग द्वारा International Commerce Day का आयोजन किया गया जिसमें NISM की प्रशिक्षक सुश्री श्रुति गुप्ता द्वारा वित्तीय साक्षरता पर व्याख्यान दिया। दिनांक 22.12.2023 को राष्ट्रीय उपभोक्ता दिवस का आयोजन किया गया जिसमें प्रथम वर्ष की छात्राओं द्वारा महाविद्यालय प्रागंण में उपभोक्ता अधिकारों पर नुक्कड़ नाटक का मंचन किया गया।

विभाग की पूर्व छात्रा कुमारी नमिता का चयन IDBI Bank सहायक प्रबंधक के पद पर हुआ। सुश्री निधि पुरिया का चयन मध्यप्रदेश ग्रामीण विकास बैंक में अधिकारी के रूप में चयन हुआ हैं। कुमारी उर्विशी रहेजा ने CAT परीक्षा उत्तीर्ण कर IIM शिलांग में प्रवेश लिया। बी. कॉम. की छात्रा कुमारी तनु उप्रीत ने CA- Executive की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुमारी नैना जैसवानी एवं मौसमी समीर ने CS - Executive की परीक्षा में सफलता प्राप्त की। विभाग की छात्राएँ NCC, NSS एवं खेलकूद में सतत् रूप से अपनी भागीदारी से महाविद्यालय का नाम रोशन कर रही है।

यदि पुरूष देश की शान हैं तो महिला उस देश की नींव है।

सरोजिनी नायडू

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE AND APPLICATIONS

DR. SEEMA HARDIKAR
In-Charge Department

The department of Computer science and Applications was established in the year 2001 with an objective of imparting quality education in the field of Computer Science and Applications and strives to shape outstanding computer professionals. The department is at present having nine guest faculty and one visiting faculty working tirelessly to empower students with their knowledge. The department has modern facilities like Smart classes, Interactive Panel and latest configuration Computers distributed in three labs for teaching and learning. The Department offers wide range of courses that include PGDCA, B.C.A., B.Sc. (CA), B.Sc. (CS) and B.Com. (CA). At present there are 1078 students registered in our department. The subjects like Java, Python, PHP and Cloud Computing are a part of our syllabus among other regular subjects. The students are getting intensive hands-on training related to programming, the important Academic activities done by our department are as follows:

Field visit to NIC Bhopal State Unit on 21.08.2023 which included students from BCA II and III year. The students enriched themselves with the knowledge about Cloud computing, Computer networking and Cyber security.

The Final year students BCA were felicitated by the AISECT academy on 14.09.2023. AISECT academy also distributed bags to the meritorious students. The program also included training on skill development and information was provided to the students on data science and animation.

A placement drive was organized by the department in collaboration with Anudip Foundation for B.Sc. and B.C.A. final year students on 20.09.2023. The objective of this drive was to make students aware of the different fields like Java basic, Java advanced and digital marketing that would help the students to get more job opportunities. The training imparted aimed to prepare young minds for challenging opportunities in the IT industry.

Alumni guest lecture was organized by the Department on 14.10.2023. The lecture was given by Ms. Mahima Kushwaha. She gave very important information related to preparation for IBPS exam proving thereby that the alumni are central to our success.

Department organized an online quiz on 04.11.2023 for all final year students. Almost 139 students participated in this quiz competition. Winners of this competition were given certificates by our Principal Madam.

With rapidly evolving technology and continuous need for innovation the faculty of the department is working hard to produce quality professionals for holding important positions in the IT industry.

छात्रा संघ परामर्श समिति

डॉ. सीमा पाठक
संयोजक

छात्रा संघ परामर्श समिति महाविद्यालय की प्रमुख समिति है। यह प्रत्यक्ष रूप से छात्राओं की प्रत्येक अकादमिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ी है। छात्र संघ के सदस्य इस समिति से जुड़कर महाविद्यालय की प्रगति में तो योगदान देते ही हैं, साथ ही स्वयं अपने व्यक्तित्व का श्रेष्ठ विकास भी कर पाते हैं। यह समिति छात्राओं को अनेक अवसर प्रदान करती है कि वे अपनी रचनात्मक, कलात्मक एवम् अकादमिक प्रतिभा को विकसित करें। इस प्रकार छात्रायें अपने भविष्य निर्माण के लिये नींव तैयार करती है। वार्षिक स्नेह सम्मेलन में आयोजित विभिन्न विधाओं तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन कर छात्राओं को पुरस्कृत एवम् प्रोत्साहित किया जाता है।

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ. अर्चना गौड़
विभागाध्यक्ष

अर्थ शास्त्र विभाग सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नात्कोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय के पुराने विभागों में से एक है जिसकी स्थापना 1971 में हुई। अपनी स्थापना के बाद से विभाग द्वारा अर्थ शास्त्र विषय में स्नातक एवं स्नात्कोत्तर पाठयक्रम संचालित किया जा रहा है। अंतः विषय पाठयक्रम के अंतर्गत दो विषय समूह प्रथम : बी.एस.सी. कम्प्यूटर एप्लीकेशन, मैथ्स, अर्थ शास्त्र एवं द्वितीय : कम्प्युटर साइंस, मैथ्स, अर्थ शास्त्र संचालित है। आधार पाठयक्रम के अंतर्गत स्नातक द्वितीय वर्ष की बी.ए., बी.एस.सी. ,बी.एच.एस.सी., एवं बी.सी.ए., की छात्राओं को उद्यमिता विकास का प्रश्नपत्र पढ़ाया जाता है। व्यावसायिक पाठयक्रम (Vocational Course) के अंतर्गत बी ए द्वितीय वर्ष की संपूर्ण कला संकाय की छात्राओं को पर्यटन, उत्पाद एवं संसाधन प्रश्न पत्र पढाया जाता है। विभाग में सत्र 2023-24 में स्नातक, स्नातकोत्तर, वोकेशनल एवं आधार पाठयक्रम कोर्स में कुल 5,370 छात्राएं अध्यनरत है। विभाग द्वारा फरवरी माह 2024 में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी से संबंधित रोजगारोन्मुखी पाठयक्रम (Value Added Course) संचालित किया जाना प्रस्तावित है। विभाग में सभी कार्यक्रम गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता के उचित मिश्रण पर केन्द्रित है, साथ ही सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अर्थशास्त्र पर समान रूप से जोर देने के साथ विषय में ज्ञान के उच्च लक्ष्यों के अनुरूप पाठयक्रम को समय समय पर अद्यतन करके इसे प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। अर्थशास्त्र विषय में अपना कैरियर बनाने के लिए विभाग द्वारा यू.जी.सी. नेट/सेट, एवं जे. आर.एफ./ बैंकिंग आदि प्रतियोगी परीक्षा हेतु मार्गदर्शन दिया जाता है।

विभागीय गतिविधियां ग्रुप डिस्कशन

दिनांक 11/1/ 23 को बीए/बीएससी तृतीय वर्ष की छात्राओं हेतु अपने अधिकारों की जागरूकता एवं सशक्त व्यक्तित्व निर्माण के उद्देश्य से महिला सशक्तिकरण विषय पर ग्रुप डिस्कशन गतिविधि का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने अलग-अलग विषय पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम में 55 छात्राओं ने भाग लिया।

क्विज कंपटीशन

दिनांक 23/1/23 को अर्थशास्त्र विषय की छात्राओं हेतु अर्थव्यवस्था के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से क्विज कंपटीशन आयोजित किया गया जिसमें 50 छात्राओं द्वारा भाग लिया गया। छात्राओं के चयन हेतु चार राउंड आयोजित किए गए। अंतिम राउंड में 8 छात्राओं का चयन किया गया जिन्हें दो टीमों में बांटा गया। क्विज में भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधित समसामयिक प्रश्न पूछे गए।

बजट एनालिसिस

दिनांक 14/2/23 को छात्राओं में वित्तीय प्रबंधन एवं कौशल विकास के उद्देश्य से बजट एनालिसिस गतिविधि आयोजित की गई। छात्राओं द्वारा वर्ष 2023-24 के आम बजट के मुख्य बिन्दुओं पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया, जिसमें लगभग 60

छात्राओं द्वारा सहभागिता की गई।

एनहांसिंग रिसर्च मेथाडोलॉजी एंड क्वानटिटेटिव टेक्निक पर राष्ट्रीय सेमीनार

दिनांक 9/3/23 से 11/3/23 तक तीन दिवसीय एनहांसिंग रिसर्च मेथाडोलॉजी एंड क्वानटिटेटिव टेक्निक पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन मोड पर नेशनल सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें 169 छात्रों द्वारा भाग लिया गया वर्कशाप का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में अनुसंधान के प्रति लगन पैदा करना था। यह वर्कशॉप बहुत ही महत्वपूर्ण रही क्योंकि डाटा को समझना, संभालना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। छात्राओं ने अनुसंधान पद्धति समझकर उसका पूरा लाभ उठाया वर्कशॉप में ६ आमंत्रित अतिथियों द्वारा व्याख्यान दिए गए साथ ही एक पूर्व छात्रा रिया अग्रवाल एवं वर्तमान सत्र की ५ छात्राओं द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किये गये।

प्रतियोगी परीक्षा यूजीसी नेट/सेट की कोचिंग क्लास

दिनांक 20/04/2023 से 25/05/2023 तक महाविद्यालय की पूर्व छात्रा सुश्री रिया अग्रवाल JRF & Assistant Professor (National Institution of Technical Teacher's Training and Research) जो कि चार बार यूजीसी नेट उत्तीर्ण हैं, के द्वारा यूजीसी नेट/ सेट की तैयारी कैसे करें विषय पर एक माह की कोचिंग दी गई, जिसमें 25 छात्राओं ने सहभागिता की। दिनांक 11/9 / 23 को महाविद्यालय की पूर्व छात्रा सुश्री रिया अग्रवाल यूजीसी नेट/ सेट की तैयारी कैसे करें पर व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें 93 छात्राओं ने सहभागिता की।

लाइब्रेरी ओरिएंटेशन प्रोग्राम

दिनांक 10 अक्टूबर 2023 को अर्थशास्त्र विभाग द्वारा अर्थशास्त्र विषय में अध्यनरत स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं को लाइब्रेरी द्वारा प्रदान की गई विभिन्न सुविधाओं एवं संसाधनों की जानकारी प्रदान करने हेतु लाइब्रेरी ओरिएंटेशन प्रोग्राम लाइब्रेरी के सहयोग से आयोजित किया गया जिसमें मोनिका श्रीवास्तव द्वारा पीपीटी के माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। विभाग द्वारा इस गतिविधी को आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य छात्राओ में पुस्तकालय में जाकर पढ़ने की रुचि जाग्रत करना साथ ही ई ग्रन्थालय की प्रकिया से परिचित कराना था ताकि अधिक से अधिक पुस्तकों को पढ़कर छात्राएं इसका लाभ उठा सके।

अर्थशास्त्र विषय में रोजगार की संभावनाओं पर व्याख्यान

दिनांक 17/10/23 को अर्थशास्त्र विषय में रोजगार की संभावनाओं पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया। व्याख्यान ईकोहोलिक्स के फाउंडर श्री सनत श्रीवास्तव द्वारा दिया गया। व्याख्यान में उनके द्वारा छात्राओं को बताया गया कि सरकारी और निजी क्षेत्र में अर्थशास्त्र विषय की छात्राओं के लिए रोजगार की क्या संभावनाए है और वे इन क्षेत्रों में किस तरह से अप्लाई कर सकते हैं। साथ ही उनके द्वारा विषय में आगे अध्ययन की संभावनाओ पर मार्गदर्शन दिया गया। व्याख्यान में 94 छात्राओं ने भाग लिया।

वोकेशनल कोर्स टूरिज्म की छात्राओं हेतु ओरिएंटेशन प्रोग्राम

दिनांक 7/11/23 को स्नातक द्वितीय वर्ष वोकेशनल कोर्स पर्यटन उत्पाद एवं संसाधन विषय की छात्राओं हेतु एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें छात्राओं को पाठ्यक्रम, सीसीई, प्रैक्टिकल आदि की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में 80 छात्राएं सम्मिलित हुई।

प्रश्न बैंक वर्कशॉप

दिनांक 9/12/23 को अर्थशास्त्र विभाग द्वारा स्नातक द्वितीय वर्ष के मेजर 1 और 2 माइनर इलेक्टिव एवं जेनेरिक इलेक्टिव प्रश्न पत्रों के लिए प्रश्न बैंक तैयार करने हेतु "प्रश्न बैंक वर्कशॉप" आयोजित की गई जिसमें छात्राओं हेतु वस्तुनिष्ठ, लघु एवं दीर्घ उत्तरी प्रश्न विभिन्न महाविद्यालय से उपस्थित पांच विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए गए।

विकसित भारत 2047 के अंतर्गत सशक्त एवं सुदृढ़ भारत पर परिचर्चा

दिनांक 22/12/23 को विकसित भारत 2047 के अंतर्गत सशक्त एवं सुदृढ़ अर्थव्यवस्था विषय पर अर्थशास्त्र विभाग द्वारा परिचर्चा का आयोजन किया गया परिचर्चा में अर्थशास्त्र विभाग की 14 छात्राओं एवं विभागाध्यक्ष ने सशक्त एवं सुदृढ अर्थव्यवस्था का तात्पर्य बताते हुए भविष्य की संभावनाओं पर अपने विचार रखे एवं महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

तीन दिवसीय व्याख्यान माला

दिनांक 4,5,6 जनवरी 2024 को विभाग द्वारा स्नातक द्वितीय वर्ष वोकेशनल कोर्स की छात्राओं हेतु टूरिज्म प्रोडक्ट एंड रिसोर्सेस पर तीन दिवसीय व्याख्यान माला आयोजित की गई जिसमें मध्य प्रदेश इंस्टिट्यूट ऑफ़ हॉस्पिटैलिटी ट्रैवल एंड टूरिज्म स्टडीज की विजिटिंग फैकल्टी डॉ श्रुति सिंह एवं विभाग के समस्त प्राध्यापकों द्वारा अपने व्याख्यान दिए गए। डॉ श्रुति सिंह द्वारा विषय के महत्व एवं उसमें रोजगार की संभावनाओं के साथ विषय को गहराई से किस तरह अध्ययन किया जाए, किस तरह उसका प्रेक्टिकल नॉलेज प्राप्त किया जाए तथा प्रैक्टिकल फाइल किस तरह बनायी जाए आदि पर छात्राओं को मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यक्रम में प्रतिदिन लगभग 250 छात्राएं सम्मिलित हुई।

चित्रकला विभाग

डॉ. रश्मि जोशी
विभागाध्यक्ष

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल का चित्रकला विभाग अपने विभाग के अध्ययनरत छात्राओं के सृजनात्मक विकास एवं प्रोत्साहन हेतु निरंतर प्रयासरत रहता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विभाग में पाठ्यक्रम से अतिरिक्त भी अनेक कार्यक्रमों के आयोजन अनौपचारिक रूप से आयोजित किए जाते है। इसके अतिरिक्त महाविद्यालयांतर्गत, अन्य महाविद्यालयों, संस्थानों/संस्थाओं के कला संबंधी कार्यक्रमों में भी उपयुक्तता के आधार पर छात्राओं की भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। महज भागीदारी ही नही वरन् प्रतियोगिताओं में छात्राएं अपनी कुशलता भी सिद्ध करती रही हैं। इसी तारतम्य में सत्र 2022-23 एवं 2023-24 में वर्तमान समय तक की कुछ भागीदारियों का उल्लेख निम्नानुसार है।

वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल के द्वारा राज्य स्तरीय वन्य प्राणी संरक्षण सप्ताह के अंतर्गत सत्र 2022-23 एवं 2023-24 में चित्रकला विभाग की स्नातक एवं स्नातकोत्तर की छात्राओं ने प्रतिभागिता की। सत्र 2022-23 में चित्रकला विभाग की एम. ए. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा कुमारी नेहा पाण्डेय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- जनजातीय संग्रहालय, भोपाल में आयोजित 10 दिवसीय दृश्यचित्रण कला शिविर एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभाग के स्नातकोत्तर कक्षा की छात्राओं ने भागीदारी कर कार्यशाला का लाभ उठाया।
- रवीन्द्र भवन मे उच्चशिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित कार्यशाला "कॉमिक फोर चेन्ज" (10 दिवसीय कार्यशाला) में भी विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर की चुनिन्दा छात्राओं ने भागीदारी कर प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यशाला के अंत में रवीन्द्र भवन की कलादीर्घा में छात्राओं द्वारा सृजित कलाकृतियों का भव्य प्रदर्शन किया गया।
- सत्र 2022-23 व 2023-24 में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित "मोदी/20" प्रदर्शनी में भी चित्रकला विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर की छात्राओं ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पर केंद्रित अपने चित्रों को प्रदर्शित किया। यह प्रदर्शनी सत्र 2022-23 में स्थानीय एवं 2023-24 में ललित कला अकादमी, दिल्ली की कला दीर्घा में किया गया।
- वैल्यू ऍडेड कोर्स के अंतर्गत विषय विशेषज्ञ के निर्देशन में 15 दिवसीय "मिथला कला" प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने प्रत्येक चरण में मधुबनी चित्रण की बारीकियों को प्रारंभ से अंत तक सीखकर अति सुन्दर चित्र बनाए। अंत में इस कार्यशाला में निर्मित कलाकृतियों को विभाग में ही प्रदर्शित किया गया।
- विगत दो वर्षों में चित्रकला विभाग की कुमारी आशना आशिफ, कुमारी अंकिता मिश्रा एवं शुभांगी गायकवाड़ ने नेट (NET) की परीक्षा उत्तीर्ण करने का गौरव प्राप्त किया।
- दिनांक 04-08-2023 को मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड, भोपाल द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष की कुल 09 छात्राओं ने भागीदारी कर प्रमाण पत्र प्राप्त किए। इसी प्रतियोगिता में एम. ए. की कुमारी प्रियंका शुक्ला एवं कुमारी निकिता डेविड ने पुरस्कार प्राप्त किए।
- पंचायत विकास परिषद, भोपाल द्वारा कला, संस्कृति के संरक्षण हेतु कला कुंभ का आयोजन किया गया जिसमें भारतीय लोककला के प्रति जागरुकता हेतु समूह प्रदर्शिनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में चित्रकला विभाग की 04 छात्राओं की कलाकृतियाँ भी चयनित एवं प्रदर्शित की गई। साथ ही प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं महाविद्यालय को स्मृति चिन्ह प्रदाय किया गया।
- चित्रकला विषय का यूं तो स्नातक से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक सम्पूर्ण पाठ्यक्रम ही ऐसा बनाया गया है कि शिक्षा अवधि में तथा शिक्षा के उपरांत भी छात्राएं व्यावसायिक तौर पर स्वयं को स्थापित कर आर्थिक रूप से

स्वावलंबी हो सकें। विभाग छात्राओं के हित में अनेकानेक पाठ्येत्तर गतिविधियाँ कराता रहता है जिसमें 'क्राफ्ट' में भी प्रशिक्षण संबंधी कार्यशालाएं भी सम्मिलित है। इन सभी कार्यक्रमों में प्रशिक्षण प्राप्त कर छात्राएं महाविद्यालय में ही नहीं वरन् स्थानीय मेलों, बाजारों में अपनी कलाकृतियों के प्रदर्शन एवं विक्रय हेतु स्टॉल लगाकर संतोषजनक आर्थिक लाभ प्राप्त करती हैं। नगर निगम द्वारा भी विभाग की छात्राओं को भित्ति चित्रण हेतु समूह में कार्य प्राप्त होता रहता है।

इस प्रकार से हमारा सम्पूर्ण विषय छात्राओं के लिए अत्यंत उपयोगी, हितकर एवं रुचिकर है। समस्त कार्यक्रमों में महाविद्यालय की संरक्षक - प्राचार्य महोदया का प्रेरणास्वरूप मार्गदर्शन व प्रोत्साहन सदैव अवश्यमेव रहा है।

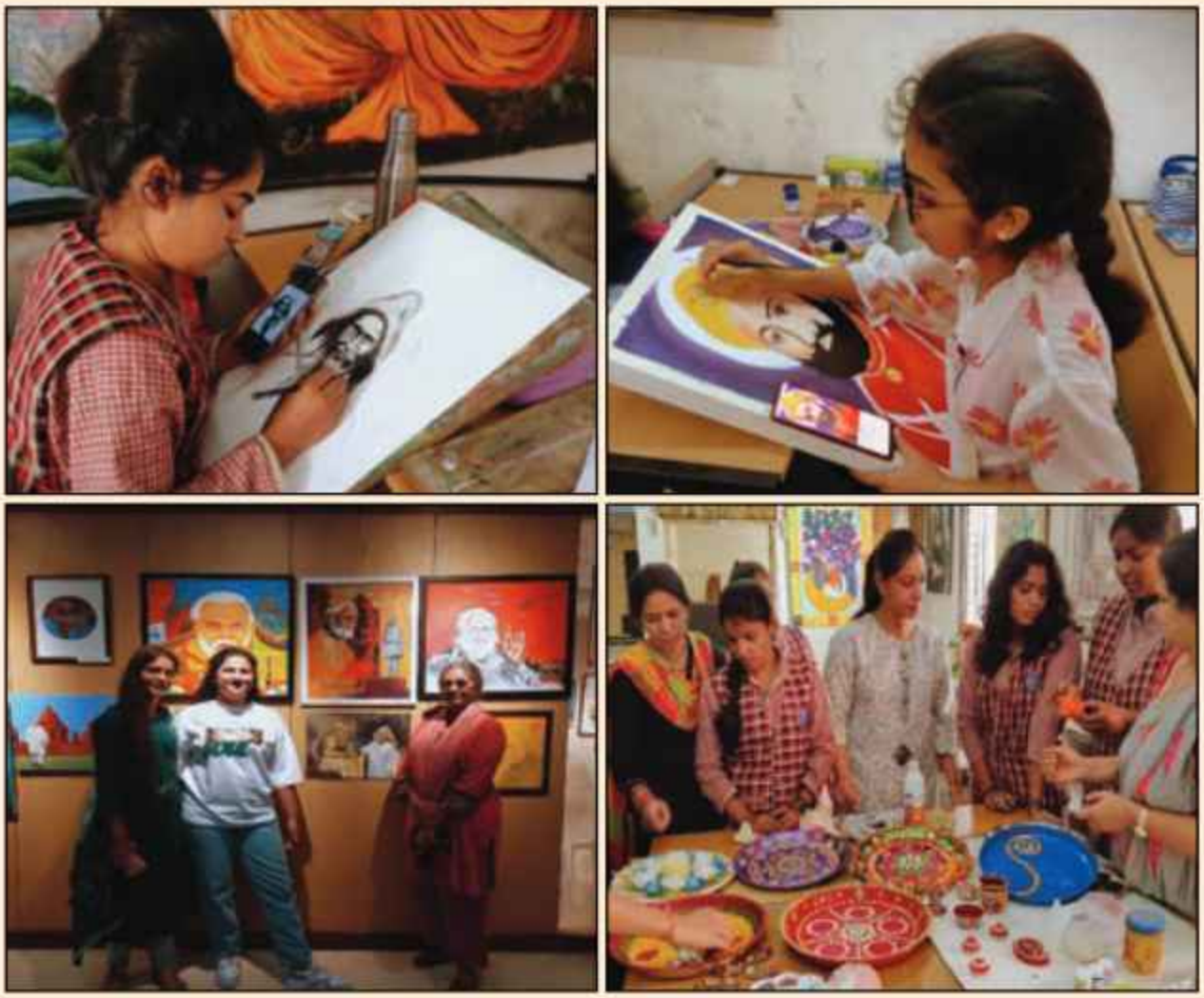

ENGLISH DEPARTMENT

Dr. Indira Javed
Head

Mind- Mapping Activity

A mind mapping activity was organized by the department for the students of MA in English on 13.07.2023 to reinforce concept-based class-room learning.

English Language Learning Activity

A listening and speaking skills activity was organized by the department on 15.07.2023 for students of MA Final to impart skills of English language learning in real life situations.

Library Visit

A library visit of PG students of English literature was conducted on 22.07.2023 to equip the students with text-books as a learning resource.

Invited Lecture

Invited lecture by Ms. Jasleen UGC-NET-JRF scholar at MANIT, Bhopal was organised on 05.08.2023 to orient the students with the strategy of exam preparation for NET in English.

Enactment based on Rasa Theory of Indian Aesthetics

"Rasa Theory" was enacted by PG third Semester students as a part of collaborative learning activity on 12.08.2023.

Enactment based on Rasa Theory of Indian Aesthetics

"Rasa Theory" was enacted by PG third Semester students as a part of collaborative learning activity on 12.08.2023.

Athena Literary Workshop

Literary Workshop "Athena" was conducted on 04.10.2023 on the theme "Science and Adventure". Masquerade, inter-collegiate extempore and self-composed poems were conducted in the workshop.

Invited Lecture

Guest lecture on "Science and Adventure" was delivered on 04.10.2024 by Dr. Asma Rizwan, Dean, Peoples University, Mass Communication.

Seminar for UG students

Seminar for the UG students was conducted on 24.11.23 by the department of English on the topics from the syllabus. Literature students of UG first year, second year and third year participated in the in the seminar.

Geography Department

Dr. Kusum Mathur
Head

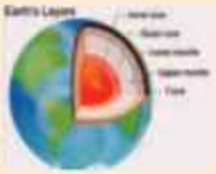

- On 11th July 2023, On the occasion of 'World Population Day' a quiz competition was organized in the Department. In which 7 students participated.
- On 28th July 2023; 'The World Nature Conservation Day' was celebrated in the Department. On this occasion an essay competition was organized entitled 'भारतमेंप्राकृतिकसंसाधनोंका संरक्षण'. In which 10 students participated. Aayushi Rajpoot of MA I Sem got 1st Prize, Sakshi Sharma of BA III Year and Simran Borasi of BA. II Year secured 2nd and 3rd position, respectively.
- On 27th September 2023, The Inaugural function of Geo-Club was held in the Department of Geography at 12:30 PM. The Rtd. Prof. Dr Lalita Bakshi was the chief guest of the function. She delivered a lecture on 'Possibilities of Employment in the field of Geography' and also motivated the students by referring to the book 'Hyper focus' written by Chris Bailey. The same day was observed as 'World Tourism Day'. On this occasion Miss Kavita Yadav; Junior Research Fellow, threw light on the various aspects of Tourism. Total 53 students were present in the program. The event was followed by an 'Online Quiz on the World Tourism Day' dated 29th of Sept 2023. In which 73 students participated. The winners of the quiz are Miss Anjali Gehlot of BA III Year, Miss Shivani Lowanshi of BAI Year and Miss Anshika Singh Jadon of BA II Year; who secured First, Second and Third position respectively.
- Visit to Disaster Management Institute - On 1/12/2023, 14 post-graduation girl students and 1 professor of Department of Geography visited to the Disaster Management Institute located in Arera Colony Bhopal, where a lecture on Bhopal gas tragedy was organized and the students were about industrial demister. Precautions and suggestions were also discussed. The students visited the institute and understood the intricacies of the working system there.

One-day visit to DMI

World Conservation Day

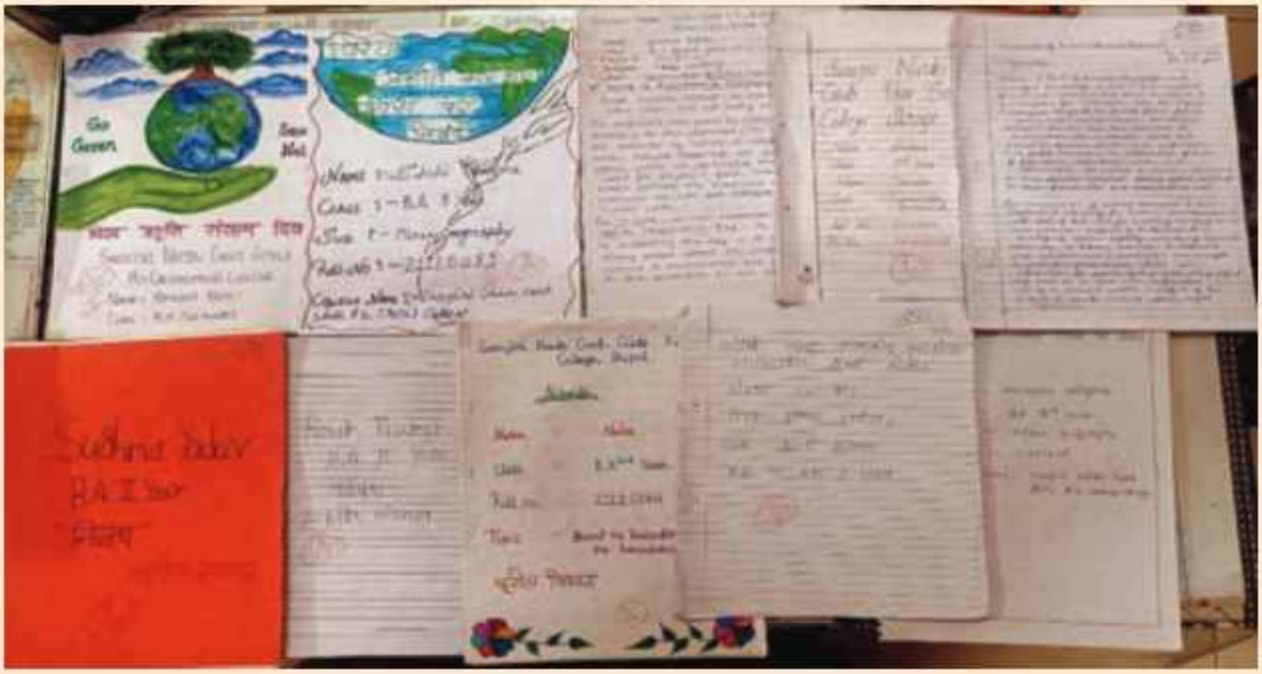

हिन्दी विभाग

डॉ. कीर्ति शर्मा
विभागाध्यक्ष

महाविद्यालय का हिन्दी विभाग इस संस्था की स्थापना वर्ष से ही संचालित किया जा रहा है। हिन्दी विभाग अपने उपलब्ध भौतिक एवम् तकनीकी संसाधनों की सहायता से अपनी सम्पूर्ण कर्तव्यनिष्ठा के साथ महाविद्यालय मे प्रवेशित छात्राओं का अध्यापन, परीक्षण, मूल्यांकन आदि कार्य पारम्परिक तथा नवाचारों के माध्यम से क्रियान्वित कर रहा है। विभाग में स्नातकोत्तर स्तर पर हिन्दी शिक्षण का कार्य सन् 1989 से आरम्भ हुआ। विभाग में हिन्दी साहित्य जैसे विषय को समसामयिकता से जोड़कर पढ़ाया जा रहा है। विभिन्न अध्यापन शैलियों यथा रोजगारपरक परियोजनाएँ, पटकथा लेखन, साक्षात्कार विधा, रिपोर्ट लेखन, समूह चर्चा एवम् परिचर्चा आदि के माध्यम से शिक्षण कार्य किया जा रहा है। महत्वपूर्ण दिवस एवम् जयंतियों के अवसर पर स्वरचित कवितापाठ, कहानी पाठ, कहानी मंचन का आयोजन विभाग में किया जाता है। नवाचार गतिविधियों में शोधपत्र लेखन, वाचन तथा प्रस्तुतीकरण, सोशल मीडिया का शिक्षा एवं शिक्षण में प्रयोग आदि से सम्बंधित गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं का प्रदर्शन उत्साहजनक है। हिन्दी विभाग में संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों की पाठ्य सामग्री राज्य में क्रियान्वित नवीन शिक्षा पद्धति द्वारा अनुमोदित है। इस पाठ्यक्रम पर आधारित विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण एवम् दक्षता प्राप्त करने हेतु छात्राओं को विभिन्न संस्थानों में भेजा जाता है।

विभाग में अत्यंत समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें पाठ्यक्रम आधारित प्राचीन तथा नवीन पुस्तकें उपलब्ध हैं। इनमें समीक्षात्मक पुस्तकें तथा संदर्भग्रंथ शोधार्थियों/छात्राओं हेतु उपलब्ध हैं। विभागीय पुस्तकालय में डॉ. कीर्ति शर्मा द्वारा पूर्ण की गई वृहद शोध परियोजना की पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। विभाग के शिक्षक सदस्यों द्वारा पी. एच - डी. हेतु शोध मार्गदर्शन, शोधपत्र प्रकाशन/वाचन और ई-कन्टेंट निर्माण का कार्य भी किया जाता है।

1. स्नातकोत्तर की छात्रा सुश्री आकृति द्विवेदी का रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में राजभाषा अधिकारी के पद पर चयन हुआ। सुश्री साक्षी राय का चयन सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में राजभाषा अधिकारी के पद पर हुआ। सुश्री गीतांजलि भैरम का चयन शासकीय विद्यालय में अध्यापक के पद पर हुआ।
2. हिन्दी विषय की छात्रा सुश्री रजनी तोमर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कबड्डी टीम की कप्तान रही तथा वर्तमान में विभिन्न राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही है।
3. दिनांक 10 जनवरी 2023 को हिन्दी विभाग द्वारा विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने हिन्दी भाषा पर अपने विचार प्रस्तुत किए।
4. दिनांक 11 दिसम्बर 2023 को विभाग में भारतीय भाषा दिवस का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में गीत तथा भजनों की प्रस्तुति दी।

5. महाविद्यालय शोध केन्द्र से डॉ. कीर्ति शर्मा के मार्गदर्शन में तीन शोधार्थियों को पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई।
6. राज्य स्तरीय बालरंग की साहित्यिक प्रतियोगिताओं में तथा बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में मध्य प्रदेश स्थापना दिवस के अवसर पर वर्ष 2022-2023 तथा 2023-2024 में डॉ. कीर्ति शर्मा ने निर्णायक के रूप में सहभागिता की।
7. देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इंदौर में बाह्य परीक्षक के रूप में शोधार्थी का पी-एच. डी. उपाधि हेतु साक्षात्कार डॉ. कीर्ति शर्मा द्वारा लिया गया।
8. अंतर्राष्ट्रीय महिला काव्य मंच भोपाल इकाई तथा विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज की मध्य प्रदेश इकाई की संगोष्ठियों में डॉ. कीर्ति शर्मा ने विशिष्ट वक्ता और मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता की।
9. डॉ. अर्पणा बादल ने विषय आधारित ई- पाठ्य सामग्री का निर्माण किया।
10. दिनांक 19/01/2024 को नवीन शिक्षा पद्धति के अनुसार बी.ए. प्रथम वर्ष के हिन्दी साहित्य विषय पर प्रश्न बैंक कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया।

इतिहास विभाग

डॉ. चित्रा आम्रवंशी
विभागाध्यक्ष

स.क्र.	दिनांक	गतिविधियाँ	विवरण
1.	22/11/2022	संग्रहालय "धरोहर" का उद्घाटन	विश्व धरोहर संरक्षण - संवर्धन सप्ताह के शुभ अवसर पर इतिहास विभाग ने संग्रहालय "धरोहर " का लोकार्पण किया। इसका उद्घाटन राष्ट्रीय वाकणकर पुरस्कार प्राप्त पुराविद् डॉ. नारायण व्यास द्वारा किया गया।
2.	29/11/2022	साँची का शैक्षणिक भ्रमण	स्नातकोत्तर कक्षाओं की 50 छात्राओं को विश्व धरोहर सॉची शैक्षणिक भ्रमण के लिए ले जाया गया।
3.	12/12/2022	आजादी के स्थानीय नायक विषय पर परिचर्चा	इस परिचर्चा के लिए मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष इतिहास, डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर उपस्थित हुए।
4.	26/07/2023	अहिल्या देवी पुण्यतिथि	इतिहास विभाग की छात्राओं ने मालवा में मराठा राजवंश की शासिका रानी अहिल्या देवी होल्कर की पुण्यतिथि मनाई।
5.	26/09/2023	राजा शंकर शाह – रघुनाथ शाह बलिदान दिवस	इतिहास विभाग ने वर्चुवल स्वरूप में इस कार्यक्रम का आयोजन किया जिसके मुख्य अतिथि श्री जानकीरमण महाविद्यालय के विभागाध्यक्ष डॉ. आनंद राणा थे।
6.	03/11/2023	नेट एवं सेट की तैयारी विषय पर व्याख्यान	सुश्री आयुषी चौरे (नोगा) जो कि नेट उत्तीर्ण छात्रा हैं तथा कोचिंग व्यवसाय से जुडी हैं, ने छात्राओं को विषय से संबंधित जानकारी दी।

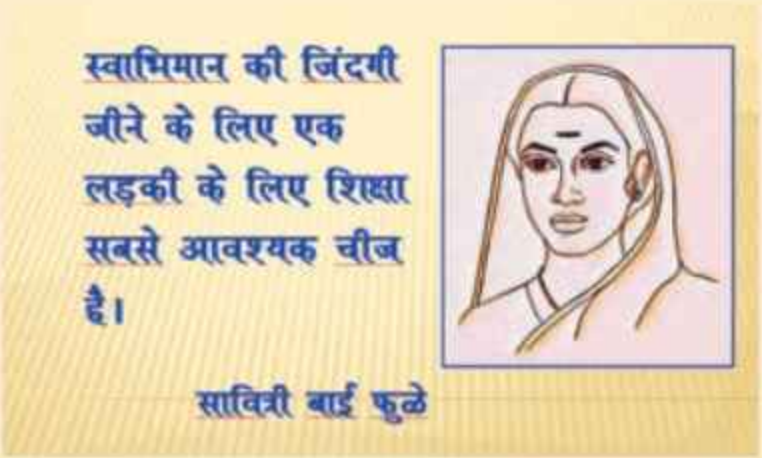

पुस्तकालय

डॉ. अमर नायक
सहा. प्राध्यापक एवं प्रभारी, पुस्तकालय

- महाविद्यालय में एक समृद्ध पुस्तकालय है, जिसमें विभिन्न विषयों की लगभग 66077 पुस्तकें हैं। छात्राओं के लिए 45 जर्नल्स एवं 28 ई-जर्नल्स 14 पत्र - पत्रिकाएं एवं 11 समाचार पत्र उपलब्ध हैं।
- महाविद्यालयीन पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से सबंधित 37 e-books है, एवं महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों, सहायक प्राध्यापकों, अतिथि विद्वानों एवं समस्त कर्मचारियों साथ ही छात्राओं को लॉगिन आई डी एवं पासवर्ड प्रदान किए गए जिससे वह सभी लांभावित हो सके।
- पुस्तकालय में पुस्तकें एवं जर्नल्स के e-accessgsrq दो online Access Platform, (1) N-List एवं (2) DELNET की सदस्यता ली गई है। N-List के माध्यम से 3164309 ई - बुक्स एवं 6150 ई-जर्नलस अध्ययन हेतु उपलब्ध है। डेलनेट द्वारा उसके Discovery portal के माध्यम से तीन करोड़ से अधिक पुस्तकें, जर्नल्स, आर्टिकल्स आदि एवं उसके Knowledge Gainer portal के माध्यम से डेढ़ करोड़ से अधिकम books, e-journals, e-article आदि के अध्ययन हेतु उपलब्ध करवायी जाती है। महाविद्यालय के सभी छात्राओं, शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टॉफ का N-List एवं DELNET के membership Login Password सुविधा प्रदान कर उनको ज्ञान संपदा का लाभ प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया है।
- पुस्तकालय द्वारा स्वामी विवेकानंद पुस्तकालय की सदस्यता (membership access plan) ली गई है, जिससे छात्राएं लाभांन्वित हो रहीं हैं।
- अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को बुक- बैंक योजना के अंतर्गत रु. 1500 मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क प्रदान की जाती हैं।
- पुस्तकालय में अध्ययन के लिए सुसज्जित रीडिंग रूम एवं शोध कक्ष भी उपलब्ध है, जिसमें प्रतियोगी परीक्षाओं संबंधी एवं पाठ्यक्रम की समस्त पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ उपलब्ध है एवं छात्राएँ वाचनालय में बैठकर अध्ययन करती है।
- वर्तमान सत्र में पुस्तकालय स्वचालन (Software SOUL 3.0) से ई- ग्रंथालय 4-0 पर हस्तांतरित किया गया।
- पुस्तकालय कम्प्यूटरीकृत है, एवं पुस्तकालय के स्वचालन और नेटवर्किंग के लिए राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र (NIC) भारत सरकार द्वारा संचालित पुस्तकालय प्रबंधन सॉफ्टवेयर ई- ग्रंथालय 4-0 का उपयोग किया जा रहा है। यह क्लस्टर एमओपीसी मोबाईल रिस्पॉन्सिव ओपेक और ई- ग्रंथालय मोबाईल ऐप का उपयोग करके पुस्तकालय सदस्यों को सार्वजनिक डोमेन में ई- कैटलॉग और डिजिटल पुस्तकालय सेवाओं तक पहुंच प्रदान करता है।
- पुस्तकालय में नियमित रूप से 'आज का विचार' पुस्तकालय सूचना पटल पर चस्पा किया जा रहा है। उदाहरणार्थ : "If you want to shine like a sun, first burn like a sun." (APJ abdul kalam)
- पुस्तकालय में 12 अगस्त 2023 को पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. एस. आर. रंगनाथन जी के जन्मदिवस पर महाविद्यालय की प्रभारी प्राचार्य डॉ. अर्चना गौर की अध्यक्षता में पुस्तकालय स्टाफ के सहयोग से पुस्तकालय दिवस आयोजित किया गया।
- पुस्तकालय में दिनांक 10/10/2023 को महाविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग के प्राध्यापकों एवं छात्राओं को पुस्तकालय में N-List एवं DELNET (E- Resource Access) पर उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- पुस्तकालय में जनभागीदारी पुस्तकालय एवं स्वशासी विकास मद से विभिन्न विषयों से सबंधित पुस्तकें एवं जर्नल्स क्रय किये जाते हैं।
- पुस्तकालय द्वारा NEP 2020 के अंतर्गत छात्राओं के प्रोजेक्ट वर्क (Internship) की सुविधा प्रदान की जाती है। स्नातक कक्षाओं की छात्राएं पुस्तकालय में सात दिवसीय प्रशिक्षण (Internship) कर रहीं है।

RESEARCH
SECTION

Department of Mathematics

Dr. Kavita Shrivastava
Head

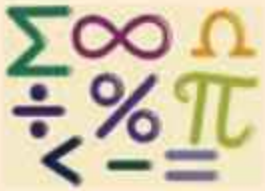

The Department of Mathematics was established in 1970 with two sanctioned posts of regular faculties. Earlier the courses offered by the department was B. Sc Mathematics. M.Sc. (Mathematics) course was started under self – financing scheme in 2002 to 2013 and received overwhelming response from the students. After 2013 the M. Sc Mathematics runs on regular basis. A well-furnished department with ample space has been provided by college administration together with five classrooms for conduct of teaching of various classes.

The Board of studies is constituted in the subject with chairman as the Head of the Department together with two subjects' experts, one University nominee, staff member of the department. One staff member from allied discipline, one expert from industry/corporate sector and one meritorious student. The meetings of the Board of Studies are held whenever necessary for the approval of syllabi of various classes and for any other change in pattern of question paper etc. Minutes of Board of Studies are regularly maintained in the department.

Innovative methods of Continuous Comprehensive Evaluation of students have been adopted over past years so as to acquaint the students with patterns of various competitive examinations and interviews. Some of these are like group discussions, objective questions, presentations, viva-voce, etc. The students are encouraged to refer to books of eminent authors to cover their syllabi. They are motivated by teachers to obtain additional information on various topics of their syllabi through internet surfing. Modern teaching aids like OHP are also used for teaching purpose. Expert Lectures are also arranged to upgrade knowledge of students.

Department of Mathematics conduct many activities in the session 2023-2024.

In month of September and October the department of mathematics organized the series of mathematical writing competition for Under Graduate Mathematics Students. In this competition students of B. Sc student participated enthusiastically.

First event of mathematical writing competition was conducted on 27 September 2023 entitled, **"Historical background of partial differential equation in Indian Context".** Eighteen students of B.Sc. II year were participated in this event to enhance our knowledge and skill development.

After this the next event of Mathematical Writing Competition was conducted on 5th October 2023.Fifty-sixstudents of B.Sc. Iyearprepared themselves for the topic entitled, **"Know Your Mathematicians"** participated enthusiastically, they gave their best performance in terms of thoughts in writing.

The third competition in the series of celebration of Mathematical Writing Competition entitled, **"Indian Logic".** It was conducted on 16th October, 2023. Students of B.Sc. III year participated enthusiastically to enhance the knowledge and skill development. In this competition 35 students of B.Sc. III year were participated.

In month of December Tutor Guardian Meet was conducted on 2nd December 2023 under the agies of IQAC. In this meet department of mathematics release of newsletter prepared by M. Sc. III semester students (2023) by honorable principal Dr. Shailbala Singh Baghel along with our HOD Dr. Kavita Shrivastava and convener of TG meet Dr. Shraddha Dubey ,after that samvad setu was recited by our faculties (Dr. Jyoti Nema, Sheeba khan and Akanchha singh) in front of students, then we conducted some activities with our students like singing ,mathematical rangoli , posters and mind game viz, matchstick game ,card game and dumb charades. Students took participated enthusiastically in each activity. In last students filled TG book and give their suggestions.

In the same month the Department of Mathematics conducted a one-day workshop entitled, **"Question Bank NEP 2023"** for the students of B. Sc. second year, paper-I, named- **"Abstract Algebra and Linear Algebra".** This workshop had been started in the first week of October on date 09/10/2023. The motive of this workshop was to frame questions for the benefit of students. Professors from other colleges were invited to prepare questions of the allotted unit in prescribed format.

After received questions in proper format all questions were checked by faculties of the Department of Mathematics and brought it into a booklet form. These questions were read out and after discussion finalized on date 11th Dec 2023.

In last, of December the great Mathematician Srinivasa Ramanujan's birthday was occurred, we celebrate this as a series of National Mathematics Day (The Joy of Learning Mathematics) from 20.12.23 to 22.12.23. The students of B.Sc. 1st year, 2nd year and 3rd yearof department of Mathematics of our college, prepared themselves for the three days program 'The Joy of Learning Mathematics'activities entitled **"Slogans & Puzzles"** was conducted on 20.12.23, **"Skit on Women Empowerment"** was conducted on 21.12.23 and **"Skit on Life of the Great Mathematician Ramanujan"** was conducted on 22.12.23, on the behalf of occasion of National Mathematics Day, under the agies of IQAC. In this competition all students of under graduation were participated enthusiastically, they gave their best performance in terms of awareness for Mathematics.

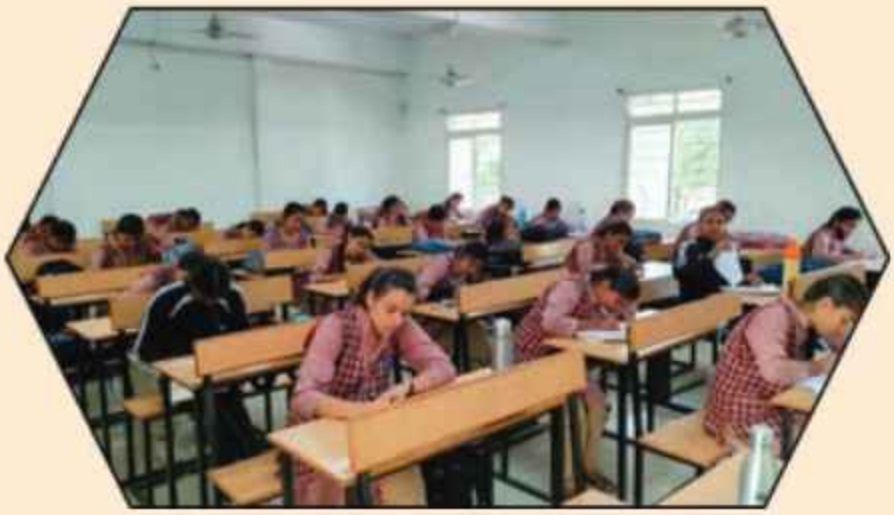

संगीत विभाग

डॉ. सुधा दीक्षित
विभागाध्यक्ष

संगीत विभाग द्वारा सत्र 2023 - 24 में निम्न गतिविधियाँ संपन्न कराई गई

- जुलाई माह में "सावन और संगीत " विषय पर कार्यक्रम किया गया जिसमें छात्राओं ने उक्त विषय पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए तथा सावन से संबंधित लोकगीत, कजरी एवं गीत प्रस्तुत किए।
- स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को संगीत विभाग द्वारा महाविद्यालय की 100 छात्राओं को लेकर "वन्देमातरम्" गान की सामूहिक प्रस्तुति आयोजित की गई।
- सितम्बर माह से युवा उत्सव प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। कक्षा स्तर पर शास्त्रीय गायन, वादन एवं सामूहिक देशभक्ति (भारतीय) एवं पाश्चात्य समूह गान का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में विभाग की छात्राओं कु. सिद्धा साईं (शास्त्रीय गायन) कु. तनु हरोणे (सुगम संगीत) कु. अलंकृता तिवारी (तबला) ने विश्वविद्यालयीन स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

संस्कृत – विभाग

डॉ. छाया चंद्रवंशी
विभागाध्यक्ष

हमारे महाविद्यालय में संस्कृत विषय में भी अध्ययन अध्यापन का कार्य प्रारंभिक दौर से ही हो रहा है। महाविद्यालय में छात्राओं में संस्कृत विषय को पढ़ने में अपनी रुचि दिखाई है। विगत वर्ष एवं इस वर्ष भी संस्कृत विभाग द्वारा छात्राओं को प्रोत्साहित करने एवं विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करने हेतु विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गए एवं कार्यशालाएं कराई। जिनमें 2022-23 में दिनांक 22 02 – 22 एवं 26 – 02 – 22 को "संस्कृत साहित्य नाटक कला एवं कालिदास" तथा "संस्कृत साहित्य की विधाएं एवं महाकाव्य विषय पर व्याख्यान् प्रस्तुत किया गया। जो छात्राओं के लिए काफी ज्ञानवर्धक एवं उत्साह वर्धक रही। दिनांक 12-9-23 को एवं 14 – 9 – 23 को छात्राओं के ज्ञानवर्धन हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया जो निम्नानुसार है -

1. संस्कृत भाषा का महत्व एवं विकास

2.संस्कृत महाकाव्य एवं उनकी रचनाएं

संस्कृत विभाग द्वारा समय-समय पर महाविद्यालय में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया जाता है। संस्कृत विभाग द्वारा महाविद्यालय में होने वाली गतिविधियो में भाग लेकर कार्य को सम्पन्न कराया जा रहा है।

राजनीति शास्त्र विभाग

डॉ. वन्दना सिंह
विभागाध्यक्ष

राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग द्वारा दिनांक 19.10.23 को बी. ए. प्रथम वर्ष के मेजर II / माइनर / इलेक्टिव प्रश्नपत्र भारतीय संविधान के प्रश्न बैंक बनाने हेतु एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन विभाग में किया गया। कार्यशाला में डॉ. रेणु पाटीदार, डॉ. अर्चना श्रीवास्तव, डॉ. मंगला गौरी, डॉ. सोनल खरे, डॉ. मनीष दुबे ने विभिन्न इकाइयों के वैकल्पिक, लघु एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न तैयार किये। कार्यशाला में विभागाध्यक्ष डॉ. वंदना सिंह एवं विभागीय सदस्य उपस्थित रहे।

दिनांक 26 नवम्बर 2023 को संविधान दिवस के उपलक्ष्य में राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग द्वारा संविधान प्रस्तावना वाचन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया, इसके पश्चात छात्राओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये इसमें उन्होंने संविधान दिवस का महत्व एवं संविधान की प्रस्तावना में उल्लेखित महत्वपूर्ण प्रावधानों के बारे में बताया तथा संविधान निर्माण में भीमराव अंबेडकर जी की भूमिका का उल्लेख किया गया। साथ ही मौलिक अधिकारों और कर्तव्यों के महत्व को उल्लेखित किया। प्रतियोगिता में छात्राओं ने बड़े उत्साह के साथ बडी संख्या में भाग लिया। कंचन पाटेकर एम ए हिंदी, रक्षंदा खान एम ए राजनीति विज्ञान एवं सेजल दांगी बी ए फर्स्ट ईयर ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य एवं विभाग के प्राध्यापकगण उपस्थित रहे।

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राजनीतिक विज्ञान एवं लोक प्रशासन विभाग द्वारा आज दिनांक 27.09.2023 को भाषण प्रतियोगिता एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर आयोजित की गई। जिसमें महाविद्यालय की 30 छात्राओं द्वारा प्रतिभागिता की गई। छात्राओं द्वारा सर्वप्रथम बताया गया कि एक राष्ट्र एक चुनाव से तात्पर्य क्या है लोकसभा राज्य विधानसभाओं के साथ-साथ जब स्थानीय निकायों के चुनाव भी एक साथ कराए जाएं। इस संबंध में छात्राओं ने पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी की अध्यक्षता में गठित समिति का भी उल्लेख किया। छात्राओं ने जहां एक राष्ट्र एक चुनाव से होने वाले लाभ एवं हानियों को बताया वहीं इससे व्यवस्थाओं में किस प्रकार का सुधार होगा उसी की भी चर्चा की लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होने से जहां धन की बचत होगी, समय कम लगेगा वहीं पर प्रशासनिक अमलें एवं सुरक्षा बलों का कार्यभार भी काम होगा। बारी-बारी सबकी बारी आपकी बारी एक राष्ट्र एक चुनाव की बारी जैसे शब्दों से जोशीले तरीके से मजबूत शासन एवं अखंड भारत के लिए एक राष्ट्र एक चुनाव का समर्थन किया छात्राओं ने इसको अपने से आने वाली संभावित समस्याओं को भी बताया जैसे लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं का समय अवधि पूर्ण भंग हो जाना एक राष्ट्र एक चुनाव संघीय विषय होने के कारण बिल पास करने के लिए संसद का विशेष बहुमत एवं 50 प्रतिशत राज्यों की विधानसभाओं की सहमति आवश्यक होगी। सरकार के लिए चुनौती पूर्ण होगा। उक्त प्रतियोगिता में कु. रक्षदा खान प्रथम, कु. निधि भार्गव द्वितीय, कु. आयुषी पटेल तृतीय स्थान पर रही। कार्यक्रम का संचालन रक्षंदा खान एवं आभार प्रदर्शन विभागाध्यक्ष डॉ. वंदना सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग के सभी सदस्यों के साथ भारी संख्या में छात्राएं उपस्थित रही।

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान एवं लोकप्रशासन विभाग की स्नातकोत्तर स्तर की छात्राओं को दो दिवसीय दिनांक 21-22 सितम्बर 2023 को पंडित कुंजीलाल दुबे राष्ट्रीय संसदीय विद्यापीठ संस्थान में प्रशिक्षण हेतु ले जाया गया। उक्त प्रशिक्षण में छात्राओं को विधानमंडल का गठन, संरचना, अवधि सत्र, विधि निर्माण, विधानसभा प्रश्न, स्थगन, ध्यानाकर्षण, शून्यकाल, लोकमहत्व के विषय पर चर्चा तथा सूचना का अधिकार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान हुए। उक्त प्रशिक्षण में 42 छात्राएं उपस्थित थी। प्रशिक्षण में छात्राओं ने अपनी जिज्ञासा को प्रश्न पूछकर शांत किया। प्रशिक्षण के अंत में छात्राओं को प्रमाण-पत्र वितरित किये गए।

मनोविज्ञान विभाग

डॉ. संतोष रलवानिया
विभागाध्यक्ष

एक दिवसीय कार्यशाला

22 सितंबर 2023 को मनोविज्ञान विभाग के द्वारा छात्राओं के कल्याण के लिए मध्य प्रदेश सरकार के आनंद विभाग के सहयोग से एक दिवसीय आनंद कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को आनंद के वास्तविक आशय से परिचित कराना और जीवन में नियमित रूप से अभ्यास योग्य आनंदवर्धक गतिविधियों को सीखना था।

राज्य आनंद संस्थान के मास्टर ट्रेनर एवं जिला समन्वयक श्री मुकेश बिल्ले द्वारा मनोविज्ञान की छात्राओं से जीवन में आनंद का मतलब एवं महत्व संबंधी अनेक प्रश्न पूछे जिनका विभाग की छात्राओं बहुत कुशलता के साथ उत्तर दिए।

कार्यशाला से छात्राओं को सीखने को मिला कि खुश होने के लिए बड़े कारण जरूरी नहीं है। यदि हमारा चिंतन व्यापक और सकारात्मक है तो छोटे कारण भी हमें खुशी प्रदान करने में सक्षम हो सकते हैं। हमारा संकीर्ण दृष्टिकोण ही हमारे दुखों का कारण है और व्यापक दृष्टिकोण ही हमें सुखी बनाता है।

मानसिक स्वास्थ्य दिवस रैली एवं नुक्कड़ नाटक

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस (World Mental Health Day) प्रत्येक वर्ष 10 अक्टूबर को मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए मनाया जाता है। यह पहली बार 1992 में विश्व मानसिक स्वास्थ्य संघ की पहल पर मनाया गया था, जो एक वैश्विक मानसिक स्वास्थ्य संगठन है जिसके सदस्य और संपर्क 150 से अधिक देशों में हैं। इस दिन, हजारों समर्थक मानसिक बीमारी और दुनिया भर में लोगों के जीवन पर इसके प्रमुख प्रभावों पर ध्यान देने के लिए इस वार्षिक जागरूकता कार्यक्रम को मनाने के लिए आते हैं। कुछ देशों में जैसे ऑस्ट्रेलिया में यह दिन मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह का हिस्सा होता है। मनोविज्ञान विभाग ने 10 अक्तूबर 2023 को रैली एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से महाविद्यालय परिसर में जागरूकता कार्यक्रम कराया। विभाग की स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं ने विभिन्न विभागों में जाकर मानसिक स्वास्थ्य की आवश्कता, महत्व एवं मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के अनेक मनोवैज्ञानिक उपाय बताएं। छात्राओं ने पोस्टर, स्लोगन एवं नारे लगाते

हुए परिसर में मानसिक स्वास्थ्य रैली निकाली। मानसिक स्वास्थ्य संबंधी प्रश्नों के उत्तर भी छात्राओं द्वारा दिए गए। नुक्कड़ नाटक के माध्यमानसिक स्वास्थ्य संबंधी तथ्यों और मिथकों को समझाया। अवसाद, चिंता, तनाव एवं मानसिक उद्वेगो को प्रबंधित करने के उपाय सुझाए।

उर्दू विभाग

डॉ. छाया चंद्रवंशी
विभागाध्यक्ष

सन् 1975 से ही महाविद्यालय में उर्दू विषय की शिक्षा छात्राओं को दी जा रही है। छात्रों में भी इस विषय को लेकर उत्साह और लगन मेहनत से पढ़ते हुए हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई। उर्दू विषय का परीक्षा परिणाम भी उत्तम रहा है। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी उर्दू विभाग ने कई मुकाबलों का एहतेमाम किया।

12 अक्टूबर 2023 को उर्दू विभाग की छात्राएं दुष्यंत कुमार संग्रहालय का भ्रमण करने गयी वहाँ छात्राओं ने जोश और उत्साह से संग्रहालय की पांडुलिपियों को देखा वह बहुत प्रसन्न नजर आईं। दिनाँक 30 नवंबर 2023 को राष्ट्रीय भक्ति पर आधारित स्वयं की लिखी कहानियों पर आधारित कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आए प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र दिया गया। प्रथम स्थान पर मदीहा हफीज द्वितीय स्थान पर जिरवा तृतीय स्थान पर राहत तौसीफ रहीं। इसी प्रकार उर्दू विभाग ने हिंदी अंग्रेजी विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपनी सहभागिता निभाई इस कार्यक्रम में छात्राओं ने प्रकृति और पर्यावरण पर नज्में पढ़ी। सारी प्रक्रिया काबिले तारीफ है स्टूडेंट्स ने अपने अपने अंदाज में अपनी सलाहियत का मज़ाहिरा किया।

समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग

डॉ. माधवी लता दुबे
विभागाध्यक्ष

कला संकाय के अंतर्गत समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग महाविद्यालय में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। सत्र 2023 - 24 के अंतर्गत विभाग में एक प्राध्यापक, एक सह प्राध्यापक, तीन सहायक प्राध्यापक व दो अतिथि विद्वान कार्यरत हैं। स्नातक स्तर पर समाजशास्त्र विषय में प्रथम, द्वितीय, तृतीय वर्ष में एनइपी के तहत 825 छात्राएं पंजीकृत हैं। स्नातकोत्तर स्तर पर समाजशास्त्र में 105 एवं समाज कार्य में 16 छात्राएं पंजीकृत हैं। 2022-23 में स्नातकोत्तर समाज कार्य से छात्राओं का शत प्रतिशत उत्तीर्ण परीक्षा परिणाम प्राप्त हुआ एवं स्नातकोत्तर समाजशास्त्र में 98% छात्राएं उत्तीर्ण रहीं। सत्र 2022-23 में छात्रा प्रियांशी गोस्वामी ने यूजीसी नेट परीक्षा पास की। विभाग में स्नातकोत्तर कक्षा की छात्राओं की अध्ययन सुविधा हेतु विभागीय पुस्तकालय भी है जिसमें 642 सम्मिलित रूप से संदर्भ एवं पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध हैं।

समाजशास्त्र विभाग द्वारा महाविद्यालय के द्वारा चयनित गोद ग्राम शांति नगर, पड़रिया सांकल की सरपंच श्रीमती रोशनी इंदौरिया की उपस्थिति में 12 सितंबर 2023 को बैठक संपन्न हुई जिसमें गोद ग्राम के विकास से संबंधित प्रयासों पर चर्चा की गई। सत्र के दौरान समाजशास्त्र विभाग द्वारा जो शैक्षणेतर गतिविधियां आयोजित की गई उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है. माह जुलाई में विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर "Unleashing the power of Gender Equality : Uplifting the voice of women and girls to unlock our world's infinite possibility." विषय पर एक वेबीनार का आयोजन स्नातकोत्तर कक्षा की छात्राओं की सहभागिता से आयोजित किया गया। माह अगस्त, 2023 में विश्व जनजाति दिवस के अवसर पर (9 अगस्त 2023) स्वतंत्रता आंदोलन में जनजातियों की भूमिका विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें जनजातीय विषयों के अध्येता श्री बसंत निर्गुण के द्वारा छात्राओं को प्रेरणास्पद व्याख्यान दिया गया। माह सितंबर में दिनांक 6 सितंबर2023 को बदलते दौर में शिक्षक विद्यार्थी संबंध विषय पर महाविद्यालय की भूतपूर्व छात्राओं द्वारा परिचर्चा में अपने अनुभवों को साझा करते हुए विषय पर प्रकाश डाला गया। इसके अलावा माह सितंबर में ही 13 सितंबर 2023 को Knowledge, attitude and practice regarding menstrual hygiene in college going girls विषय पर मानव विकास, मनोविज्ञान विभाग एवं समाजशास्त्र व समाज कार्य विभाग के संयुक्त तत्वाधान में कार्यशाला का आयोजन शासकीय हमीदिया महाविद्यालय के चिकित्सकों के वक्तव्य द्वारा संपादित किया गया।

अक्टूबर माह में 17 अक्टूबर 2023 को गोद ग्राम में जाकर लीगल एड क्लीनिक के सहयोग से बाल विवाह के विरुद्ध जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया एवं ग्राम की प्राथमिक आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त की गई। साथ ही स्थानीय वृद्ध महिलाओं को स्थानीय आंगनबाड़ी केंद्र में आमंत्रित कर फल वितरित किए गए। 21 एवं 22 दिसंबर को महाविद्यालय में यूजीसी सेल द्वारा आयोजित विकसित भारत मिशन 2047 के अंतर्गत सशक्त भारत के संबंध में समाजशास्त्र विभाग की छात्राओं ने भागीदारी की। इसके अलावा समय समय पर महाविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिताओं में विभाग की छात्राएं अपनी सहभागिता करती हैं। समाज कार्य की छात्रा शिवाली दुबे ने महाविद्यालय में जैव विविधता संरक्षण विषय पर आयोजित प्रश्न मंच में पुरस्कार प्राप्त किया।

मनोविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विभाग ने मानव विकास विभाग के साथ सहआयोजक की भूमिका का निर्वाह किया, आयोजन 9 जनवरी 2023 में Psychosomatic disorder के संबंध में किया गया। माननीय शिक्षा मंत्री की उपस्थिति में आयोजित इस संगोष्ठी में राष्ट्रीय स्तर के विद्वत जनों के अलावा स्थानीय लोगों ने बढ़ चढ़कर भागीदारी की। सत्र के दौरान विभाग द्वारा सेवा भारतीय समाजसेवी गैर शासकीय संस्था भोपाल से एम. ओ. यू. किया गया एवं विगत सत्र में किए गए एमओयू के आधार पर जो अन्य गैर शासकीय संस्थाओं से जैसे 'एफ. पी. ए. और बचपन' से किए गए थे इनमें सम्मिलित रूप से विद्यार्थियों ने विस्तार गतिविधियों एवं इंटर्नशिप के अंतर्गत कार्य किया।

विभाग के सभी प्राध्यापक गण अकादमिक क्षेत्र में निरंतर अग्रगामी प्रयास कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि सत्र के दौरान विभागाध्यक्ष डॉ माधवी लता दुबे के द्वारा दो पुस्तकों में सह लेखन का कार्य किया गया। मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के परीक्षार्थियों के लिए (मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित) पाठ्यक्रम पर आधारित पाठ्य सामग्री के संकलन में समाजशास्त्र विषय का आलेखन किया एवं नगरीय समाजशास्त्र पुस्तक में सह लेखक के रूप में कार्य किया। महाविद्यालय

SPN unit में दिव्यांग छात्राओं के लिए बी ए द्वितीय वर्ष की पाठ्यक्रम पर आधारित स्व लिखित पुस्तकों के ध्वनि मुद्रण हेतु सामग्री उपलब्ध कराई गई एवं महाविद्यालय की छात्राओं में से 20 छात्राओं को संगठित कर एक स्व सहायता समूह का गठन किया तत्पश्चात पंजीकरण 'नूतन स्वसहायता समूह के रूप में स्वावलंबन की दृष्टि से बेस्ट प्रैक्टिस के रूप में निर्देशित कर किया गया। Diaspora Women and Patriarchy विषय पर आयोजित हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन दिनांक 18-19 दिसंबर 2023 में Motivetional spread as function of Ethnic food: Study on Indian Diaspora Women शीर्षक पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। नरोन्हा प्रशासन अकादमी में दिनांक 18 जनवरी 2024 को आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में Tribal Development in MP विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया एवं मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्व विद्यालय की वीडियो व्याख्यान श्रृंखला में स्नातक स्तर की कक्षाओं हेतु 6 व्याख्यान रिकॉर्ड किए गए। इस सबके साथ ही डॉ माधवी लता दुबे बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, अटल बिहारी वाजपई हिंदी विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, IEHE कॉलेज, साधु वासवानी कॉलेज में समाजशास्त्र विभाग की बोर्ड ऑफ स्टडी की मेंबर हैं। आपके निर्देशन में वर्तमान में दो शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं।

डॉ. आरती श्रीवास्तव, सह प्राध्यापक समाजशास्त्र 48th All India Sociological Conference में 28 दिसंबर 2023 को Homosexuality; Crime or Right विषय पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया एवं 29 दिसंबर को इसी अधिवेशन में Co chaired one session on 29th December 2023 अपनी भूमिका का निर्वाह किया। डॉ. आरती श्रीवास्तव सेंट्रल बोर्ड ऑफ स्टडी (समाजशास्त्र व समाज कार्य) की सदस्य हैं इसके अलावा भोज मुक्त विश्वविद्यालय, IEHE कॉलेज में भी बोर्ड ऑफिस स्टडी की मेंबर हैं। महाविद्यालय में यूजीसी प्रभारी, गोद ग्राम समिति प्रभारी, विकसित भारत मिशन 2047 जैसे अनेक समितिगत दायित्वों का निर्वाह कर रही हैं।

डॉ मनीषा शर्मा, सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र महाविद्यालय के प्रशासनिक दायित्व का कार्यभार संभालते हुए रूसा, वर्ल्ड बैंक, आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुए अकादमिक क्षेत्र में भी अपनी उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह कर रही हैं सत्र के दौरान आपके द्वारा सेंट्रल जेल में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं जेल विभाग के सहयोग से कैदियों हेतु मनो सामाजिक व्यवहार ट्रेनिंग पर प्रोजेक्ट कार्य किया। वह आठ महाविद्यालय में स्टेट नेक प्रकोष्ठ की ओर से मास्टर फैसिलिटेटर के रूप में कार्य किया। लीगल ऐड क्लीनिक में संयोजक के रूप में सत्र के दौरान जागरुकता कार्यक्रम मे टीम के साथ समन्वय किया.

डॉ. अर्चना चौहान, सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र महाविद्यालय में एक नवाचारी पहल Geriatric club का गठन प्राचार्य महोदय के निर्देशन में किया। सामाजिक परिवर्तन की द्रुत गति में सामाजिक संबंधों में आ रहे तीव्र परिवर्तन और अंत:पीढ़ी संघर्ष का सामना करती हुई युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के मूल्य से जोड़ने, प्रेरित करने की यह पहल दूरगामी वांछित परिणाम को लेकर की गई है। इसके अलावा वे स्वशासी प्रकोष्ठ में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही हैं।

डॉ. रानू वर्मा, सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र ने सत्र के दौरान डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित पुनश्चर्या कार्यक्रम में सहभागिता की एवं आपके द्वारा शोध पर आधारित लिखित पुस्तक "पंचायती राज से धरतीपुत्र उत्थान की ओर (मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति के विशेष संदर्भ में) प्रकाशित हुई। आप महाविद्यालय की पुस्तकालय की प्रबंध समिति में बतौर सहायक पुस्तकालय अधीक्षक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही हैं।

विभाग के सभी प्राध्यापक गण व अतिथि विद्वान डॉ. कीर्ति वर्मा ने राष्ट्रीय लोक अदालत में समाज कार्य की छात्राओं के भ्रमण का नेतृत्व किया। 9 जनवरी को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सभी प्राध्यापक गणों के साथ अतिथि विद्वान डॉक्टर कीर्ति वर्मा ने भी शोध पत्र प्रस्तुत किया।

भौतिक शास्त्र विभाग

डॉ. प्रतिष्ठा खरे
विभागाध्यक्ष

क्रीडा विभाग

डॉ. रश्मि केला होलानी
क्रीडा अधिकारी

- शारीरिक शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य छात्राओं की शारीरिक क्षमता को विकसित करना उनकी गतिविधियों को मजबूत करना और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाना है। शारीरिक गतिविधियों मे शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है। जो कि शारीरिक स्वस्थता एवं व्यक्ति में स्फूर्ति बनाये रखता है। व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए शारीरिक व मानसिक स्वस्थता की आवश्यकता होती है। नियमित शारीरिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए खेल सबसे अच्छा तरीका है। किसी भी व्यक्ति की सफलता मानसिक और शारीरिक ऊर्जा पर निर्भर करती हैं।
- खेल सभी के व्यस्त जीवन में विशेष रुप से विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूरे दिन की दिनचर्या में कम से कम कुछ समय सभी को खेलों में सक्रिय रुप से भाग लेना चाहिये। चाहे वह योग हो, घूमना हो, विभिन्न खेल हो, पी. टी. हो, जिम में क्रियाये करना हो, यह मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं व्यक्ति विकास में अहम भूमिका निभाता है।
- महाविद्यालय भी छात्राओं के शारीरिक, मानसिक विकास एवं स्वस्थता के लिए कई गतिविधियाँ करवाता है।
- महाविद्यालय में 4 हाउसेज बनायें गये :- 1. सरस्वती 2. कमलापति 3. अहिल्या, 4. कोकिला बनाये गये है। जिनमें आपस में प्रतियोगिता करके महाविद्यालय की टीम बनाई गई है। जिसका उदेश्य अधिक से अधिक संख्या में छात्राओं की खेल में भागीदारी हो।
- महाविद्यालय से व्हालीबॉल, बास्केटबॉल बेडमिन्टन, टेबिल टेनिस, चैस (शतरंज), बॉल बेडमिन्टन, ताईक्वांडो, जूडो, कराटे, बाक्सिंग, कुश्ती, सॉफ्टबॉल, खोखो, योग, कबड्डी, एथेलेटिक्स, रोपस्किपिंग, क्याकिंग केनोइंग वाटर स्पोटर्स, तीरंदाजी एवं बेस बॉल में विभिन्न टीमों ने जिला स्तरीय, संभाग स्तरीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया एवं अपना उत्कृष्ट प्रर्दशन किया।
- महाविद्यालय में खेल सप्ताह मेजर ध्यानचंद्र जी के जन्म दिवस पर मनाया गया जो 21/8/2023 से 29/8/2023 के मध्य का आयोजित किया गया, एवं हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद्र जी को याद किया जिसमें बास्केट वॉल, बेडमिटन, चैस, टेबिल-टेनिस, लंगड़ी, रोप जपिंग एवं प्लेक खेलों का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।
- महाविद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में दिनाँक 13/8/2023 से 15/8/2023 के मध्य क्रीडा विभाग द्वारा खेलों का आयोजन किया गया। जिसमें बास्केट बॉल, बेडमिटन, टेबिल टेनिस, चैस, योग आदि खेलों का आयोजन किया गया।
- महाविद्यालय में 20 कमान्डोज क्रीडा - विभाग द्वारा तैयार किये गये है। जो महाविद्यालय में सतत घूमकर छात्राओं की समस्याओं का समाधान एवं सुरक्षा करती है। साथ ही महाविद्यालय में खिलाड़ी ओपन जिम में अपनी शारीरिक क्षमता को बढ़ाने के लिए लगातार उपयोग करते है।
- आत्म रक्षा शिविर का एक माह आयोजन किया गया जिसमे 100 छात्राओं ने आत्मरक्षा के गुण सीखे हैं। जिससे छात्राओं का बौद्धिक, मानसिक एवं शारीरिक विकास हो सके।
- 15 दिवसीय योग शिविर का आयोजन किया गया जिसमे 50 छात्राओं ने योग अभ्यास किया।
- महाविद्यालय के क्रीडा विभाग द्वारा जिलास्तरीय टेबिल-टेनिस (म.) प्रतियोगिता का आयोजन 12/09/2023 किया गया।
- महाविद्यालय में क्रीडा विभाग द्वारा संभागस्तरीय टेबिल-टेनिस (म.) प्रतियोगिता का आयोजन दिनाँक 22/09/2023 किया गया।

संभाग स्तर प्रतियोगिता में महाविद्यालय की निम्न छात्राये चयनित हुई एवं स्थान प्राप्त किया।

- टेबिल-टेनिस — मोनिका वर्मा, कशिश राजपूत — विजेता
- योग — पलक अहिरवार — विजेता
- जूडो — स्मिता रानी — विजेता (48 kg.)
- ताईक्वान्डो — वैश्नवी रावत — विजेता (58 kg.)
- कबड्डी — स्मिता रानी, संजना शाह — प्रतिनिधित्व
- चैस — लासिका, सोनालिका, सलोनी — विजयी
- बेस बॉल — स्नेहा अहिरवार, सीमा मिश्रा, आरती, हसीना खातून – विजयी
- साफ्ट बॉल — स्नेहा अहिरवार, सीमा मिश्रा, आरती, हसीना खातून – विजयी
- व्हॉली बॉल — अनुकृति सारथी — विजयी
- एथलेटिक्स — भव्या जैन — विजयी
- तीरंदाजी — ईश्वरी मरकाम — विजयी
- शूटिंग — मोनिसा — विजयी

राज्य स्तर प्रतियोगिता में महाविद्यालय की निम्न छात्राये चयनित हुई :-

- टेबिल-टेनिस — कशिश राजपूत
- योग — पलक अहिरवार
- चैस — लासिका
- बास्केटबॉल — राशि नाम्बियार, मरियम खान
- एथलेटिक्स — भव्या जैन

अंतर विश्वविद्यालयीन एवं वेस्टजोन प्रतियोगिता में चयनित छात्राये :-

- टेबिल-टेनिस — कशिश राजपूत
- जूडो — स्मिता रानी
- योग — पलक अहिरवार
- चैस — लासिका
- एथलेटिक्स — भव्या जैन
- तीरंदाजी — ईश्वरी मरकाम
- साफ्ट बॉल — स्नेहा अहिरवार, सीमा मिश्रा, हसीना खातून
- बेस बॉल — हसीना खातून, सीमा मिश्रा
- शूटिंग — मोनिसा, सुभाना
- ताईववान्डो — वैश्नवी रावत
- बास्केट वॉल — राशि नाम्बियार, मरियम खान
- हॉकी — मेहक ठाकुर
- कराटे — लावन्या

राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने अपना उत्कृष्ठ प्रदर्शन किया। म.पू. का नेतृत्व महाविद्यालय की छात्राओं ने किया।

- राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में कु. मोनिसा छात्रा का चयन शूटिंग में हुआ।
- कु. भव्या जैन ने जूनियर एथलेटिक्स के पोल वाल्ट कूद में ब्रान्स मेडल प्राप्त किया।
- कु. भव्या जैन ने एथलेटिक्स प्रतियोगिता में चतुर्थ एवं दसवां स्थान प्राप्त किया।
- कु. मोनिका भदोरिया ने राष्ट्रीय स्तर रोइंग प्रतियोगिता में भाग लिया।
- सॉफ्ट बॉल राष्ट्रीय स्तर प्रतियोगिता में कु. रजनी तोमर, कु. स्नेहा, कु. हसीना, कु. मेहक ठाकुर एवं हर्षिता ने भाग लिया।
- कु. महक ठाकुर ने राष्ट्रीय स्तर पर हॉकी प्रतियोगिता में भाग लिया।

7
Bhopal, Madhya Pradesh,
Lat 23.186013°
Long 77.417513°
15/12/23 02:01 PM GMT +05:30

टेक्सटाइल एवं क्लोदिंग विभाग

डॉ. रंजना त्रिवेदी
विभागाध्यक्ष

राष्ट्रीय हेण्डलूम दिवस का आयोजन

महाविद्यालय के टेक्सटाइल एवं क्लोदिंग विभाग द्वारा दिनांक 7 अगस्त 2023 को राष्ट्रीय हेण्डलूम दिवस मनाया गया। छात्राओं में हेण्डलूम सेक्टर की जानकारी एवं भारत के सामाजिक आर्थिक विकास में हैण्डलूम के योगदान की जागरूकता देने के उद्देश्य से हेण्डलूम दिवस पर विभिन्न विधाओं का आयोजन किया गया, इसके अन्तर्गत हेण्डलूम उत्पादों पर क्विज प्रतियोगिता (गूगलफॉर्म के माध्यम से), हेण्डलूम वस्त्रों पर पोस्टर प्रस्तुतिकरण, एवं मध्यप्रदेश के हेण्डलूम वस्त्रों की जानकारी दी गई तथा भारत की विभिन्न हेण्डलूम साड़ियों को डिस्पले के माध्यम से अलग अलग राज्यों हेण्डलूम साड़ियों के बारे में बताया गया एवं छात्राओं ने बहुत उत्साह से इस कार्यक्रम में सहभागिता दी। महाविधालय की प्राचार्य महोदया प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल द्वारा हेण्डलूम वस्त्रों एवं उसके उपयोग की महत्ता पर छात्राओं को जानकारी दी

Sustainable Textile Sustainable Textile and fashion पर व्याख्यान

दिनाँक 14/10/2023 को 'Sustainable Textile and fashion' विषय पर विषय विशेषज्ञ द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान में महाविधालय के समस्त संकायों की छात्राओं ने सहभागिता दी। इसमें छात्राओं को Sustainability and Textile fashion sustainability से संबंधित मुद्दो पर विस्तृत रूप से जानकारी दी गई तथा Sustainability के माध्यम से वातावरण की सुरक्षा पर भी जानकारी दी गई।

हैंडलूम फैशन शो का आयोजन

दिनांक 18.10.2023 को टेक्सटाइल एवं क्लोदिंग विभाग एवं इन्क्यूबेशन सेंटर की छात्राओं द्वारा "पुर्नकल्पन" कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में छात्राओं ने खादी स्वनिर्मित परिधान तैयार किये एवं उन पर कशीदाकारी, बॉधनी, ब्लॉक प्रिंटिंग, हेड पेंटिंग एवं कलमकारी आदि से सुंदर तरीके से अंलकृत किया व सभी छात्राओ ने परिधानों के साथ गरिमामय प्रस्तति दी।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल ने छात्राओं के कार्य की बहुत प्रशंसा की। इस कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी गण डॉ. अशोक नेमा, डॉ. मनीषा शर्मा, टेक्सटाइल एवं क्लोदिंग विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. रंजना त्रिवेदी एवं इन्क्यूबेशन सेंटर की समन्वयक डॉ. रंजना उपाध्याय उपस्थित हुये।

आहार एवम् पोषण विभाग

डॉ. अनिता चौरसिया
विभागाध्यक्ष

आहार एवम पोषण विभाग गृह विज्ञान संकाय के अंतर्गत आता है। इस विषय में स्नातक गृह विज्ञान, विज्ञान एवम स्नातकोत्तर आहार एवम पोषण और वोकेशनल में न्यूट्रीशन एंड डायटेटिक्स तथा फूड प्रोसेसिंग के सभी विषय का अध्यापन किया जाता है।

विभाग में तीन प्राध्यापक और एक सहायक प्राध्यापक हैं। उपरोक्त सभी कोर्सेस के 30 विषय के सैद्धांतिक पेपर एवम 30 प्रायोगिक पेपर का अध्यापन आहार एवम पोषण विषय विशेषज्ञ कराते हैं।

विभाग द्वारा अगस्त में ब्रेस्ट फीडिंग वीक और सितंबर में न्यूट्रीशन मंथ बहुत अच्छे से मनाया जाता है। जिसमे जागरूकता अभियान, निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, बीएमआई मापन, न्यूट्रिशियस रेसिपी प्रतियोगिता, प्रश्नमंच प्रतियोगिताए हीमोग्लोबिन मापन, तत्कालीन भाषण आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त आंगनवाड़ी केन्द्र, माइक्रोबोलॉजी एवम बायोकेमिस्ट्री लैब्स विभिन्न हॉस्पिटल्स विजिट और ट्रेनिंग के लिए छात्राओं को भेजा जाता है। एम - एस-सी. आहार एवम पोषण पूर्ण करने के बाद छह माह की ट्रेनिंग डाइटीशियन बनने के लिए अनिवार्य होती है। छात्राओं की रूचि इस विषय में बढ़ती जा रही है साथ ही नई शिक्षा नीति में इस विषय का समावेश होने से प्रदेशभर में छात्राओं के अतिरिक्त छात्र भी इस विषय का रूचि से अध्यन कर रहे हैं।

आहार एवम पोषण विषय की छात्राएं नेट स्लेट, एम पी पीएससी, डाइटीशियन, महिला एवम बाल विकास विभाग गेस्ट फैकल्टी, लेक्चरर, जिम, फ्री लेंसिंग, ऑनलाइन काउंसलिंग आदि विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत होती हैं। इस प्रकार आहार एवम पोषण विषय रोजगारोन्मुखी है साथ ही व्यक्ति परिवार और समाज के बहुत उपयोगी है। आहार एवम पोषण विभाग गृह विज्ञान संकाय के अंतर्गत आता है। इस विषय में स्नातक गृह विज्ञान, विज्ञान (ZNC) एवम स्नातकोत्तर आहार एवम पोषण और वोकेशनल में न्यूट्रीशन एंड डायटेटिक्स तथा फूड प्रोसेसिंग के सभी विषय का अध्यापन किया जाता है।

He who is not courageous enough to take risks, will accomplish nothing in life.

Aruna Asif Ali

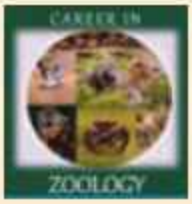

प्राणीशास्त्र विभाग

डॉ. मुकेश दीक्षित
विभागाध्यक्ष

प्राणीशास्त्र विभाग का मूल उद्देश्य छात्राओं को वर्तमान परिवेश की ज्वलंत समस्याओं से परिचय कराना है साथ ही पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण के लिए जागरुक करना है। उक्त उद्देश्य के लिए प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। विश्व पर्यावरण दिवस पर प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. शारिक अली का व्याख्यान दिनांक 05/06/2023 को आयोजित किया गया। दिनांक 29/07/2023 अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस पर, वन-विहार द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में बाघ गणना एवं विभिन्न अभ्यारणों की जानकारी छात्राओं ने प्राप्त की। दिनांक 28/08/2023 को विभाग द्वारा जैवविविधता पर राष्ट्रीय बेबीनार का आयोजन किया गया। दिनांक 01 से 07 अक्टूबर, 2023 तक "वन्यप्राणी सप्ताह" के अवसर पर वन विहार द्वारा आयोजित विभिन्न अंर्तमहाविद्यालयीन प्रतियोगिताओं मे छात्राओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। इस अवसर पर महाविद्यालयीन स्तर पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं जैवविविधता पर प्रश्नोतरी का आयोजन किया गया। दिनांक 30/11/2023 को प्रसिद्ध वन्यप्राणी विशेषज्ञ डॉ. सुदेश बाघमारे द्वारा विशेष व्याख्यान में " वन्यप्राणी संरक्षण" पर छात्राओं को जानकारी दी गई। दिनांक 09/12/2023 को प्रसिद्ध पक्षी विशेषज्ञ मोहम्मद खलीक द्वारा "शीतकालीन प्रवासी पक्षियों" पर विशेष व्याख्यान दिया गया। नवीन शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत बी.एससी. प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में शामिल आधुनिक सहायक प्रजनन तकनीक पर दिनांक 21/12/2023 को बंसल अस्पताल की वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. प्रिया भावे चित्तावर का विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

छात्राओं में नेतृत्व एवं सामूहिक कार्य दक्षता हेतु दिनांक 23/09/2023 को "जुलोजिकल ऐसोसिएशन" का गठन किया गया। " जुलोजिकल ऐसोसिएशन" के अंर्तगत छात्राओं ने दिनांक 29/11/2023 को महाविद्यालय स्तर पर एड्स जागरुकता संबंधी पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया। दिनांक 01/12/2023 "जुलोजिकल ऐसोसिएशन" की छात्राओं द्वारा महाविद्यालय में एड्स जागरुकता रैली का आयोजन किया गया।

दिनांक 17/05/2023 छात्राओं को रोजगार के अवसर एवं प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित जानकारी विभाग की पूर्व छात्रा एवं नेट परीक्षा में सफल कु. स्वाती बारदिया एवं योगिता ठकुरिया द्वारा दिया गया।

दिनांक 11/05/2023 को शिक्षा विस्तार के अंतर्गत बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय की शोध छात्राओं ने स्नातकोत्तर की छात्राओं को मत्स्य संवर्धन के विभिन्न प्रकारों की जानकारी प्रदान की।

छात्राओं के ज्ञानवर्धन हेतु विभाग द्वारा विभिन्न राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में शैक्षणिक भूमण करवाया गया। छात्राओं के हित में विभाग द्वारा दिनांक 09/12/2023 को प्राणीशास्त्र विभाग एवं भोपाल बर्ड्स ऐसोशिएशन के मध्य एम. ओ. यू. सम्पन्न हुआ।

छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु विभाग द्वारा नवीन शिक्षा नीति – 2020 के तहत बी. एससी. प्रथम वर्ष के मेजर प्रथम एवं मेजर द्वितीय, माइनर एवं इलेक्टिव पाठ्यक्रम के लिए दिनांक 07/11/2023 को प्रश्नबैंक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें भोपाल के प्रतिष्ठित महाविद्यालय, संस्थान एवं अशासकीय विश्वविद्यालय के 05 प्राध्यापकों की सहभागिता रही। प्रश्न बैंक नवीन शिक्षा नीति – 2020 के ब्लूम टैक्सोनॉमी पर आधारित रही।

छात्राओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक बनाने के लिए दिनांक 12/09/2023 को ब्रेस्ट कैंसर पर बेबिनार आयोजित किया गया, जिसमें सीनियर डायरेक्टर, मेदांता गुड़गॉव की डॉ. कंचन गौर ने कैंसर के लक्षण एवं उपचार की जानकारी प्रदान की। दिनांक 21/09/2023 को बंसल हॉस्पिटल भोपाल, की डॉ. प्रिया चित्तावर एवं डॉ. सचिन चित्तावर द्वारा स्वास्थ्य जागरुकता पर व्याख्यान दिया गया। जिसमें छात्राओं के खान पान जीवन शैली एवं व्यायाम के महत्व पर जानकारी दी गई। इस अवसर पर बंसल हॉस्पिटल के प्रशिक्षित स्टॉफ द्वारा महाविद्यालयीन कर्मचारियों के रक्त दाब एवं रक्त शर्करा की नि:शुल्क जॉच भी की गई।

वर्तमान में विभाग में 05 शोध विद्यार्थी शोध कार्य कर रहें हैं। 03 शोधार्थी के शोध निर्देशक डॉ. मुकेश दीक्षित एवं 02 शोधार्थी के शोध निर्देशक डॉ. सीमा दीक्षित हैं। कु. स्वाती बारदिया नेट, जेआरएफ की छात्रवृत्ति प्राप्त कर रही है एवं 2023 में मध्यप्रदेश सेट में चयनित हुई हैं। कु. काजल सिंह अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान कांग्रेस में सर्वश्रेष्ठ पोस्टर प्रदर्शन का पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है।

विभाग छात्राओं के विकास हेतु आगामी सत्र में भी विशेष व्याख्यान, शैक्षणिक भ्रमण एवं अकादमिक गतिविधियों को संचालित करता रहेगा।

छात्राओं के सफल एवं उज्जवल भविष्य की कामना के साथ।

एड्स दिवस पर प्राणीशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित की गयी जागरुकता रैली।

जुलॉजिकल एसोसियेशन का गठन।

सभी कामों में
अनुशासन की जरूरत
होती है, ये हमारे लक्ष्य
और परिणाम के बीच
का पुल है।

मदर टेरेसा

प्रतिवेदन : विभिन्न समितियां

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

Dr. Mukesh Dixit
I/c IQAC

Objectives :

The Primary Aim of IQAC is

To develop a system for conscious, consistent and catalytic action to improve the academic and administrative performance of the institution.

To promote measures for institutional functioning towards quality enhancement through internalization of quality culture and institutionalization of best practices.

Functions:

Some of the functions expected of the IQAC are

1. Development and application of quality benchmarks.
2. Parameters for various academic and administrative activities of the institution;
3. Facilitating the creation of a learner-centric environment conducive to quality education and faculty maturation to adopt the required knowledge and technology for participatory teaching and learning process;
4. Collection and analysis of feedback from all stakeholders on quality-related institutional processes;
5. Dissemination of information on various quality parameters to all stakeholders.
6. Organization of inter and intra institutional workshops, seminars on quality related themes and promotion of quality circles;
7. Documentation of the various programmes/activities leading to quality improvement;
8. Acting as a nodal agency of the Institution for coordinating quality-related activities, including adoption and dissemination of best practices;
9. Development and maintenance of institutional database through MIS for the purpose of maintaining /enhancing the institutional quality.
10. Periodical conduct of Academic and Administrative Audit and its follow-up10. Preparation and submission of the Annual Quality Assurance Report (AQAR) as per guidelines and parameters of NAAC.

E-Cell and Incubation Center

DR. Ranjana Upadhyay
Convenor

June 13, 2022: Seminar on Project Proposal Writing Mrs. Prerna Dobhal conducted a seminar guiding students on creating project proposals and registering with Bharat Sarkar and Vastra Mantralaya, M.P. (HSP), MSME, and the Ministry of Textile.

June 15, 2022: Workshop on DPR Preparation for Start-ups A one-day workshop in collaboration with AIC-RNTU educated students on preparing Detailed Project Reports (DPR) for startups. Students visited AIC-RNTU and engaged in four sessions to understand the DPR creation process.

September 6, 2022: Ideathon for Start-up Ideas an Ideathon encouraged 70 enthusiastic students to propose innovative startup ideas, fostering entrepreneurial thinking among participants.

September 15-28, 2022: Training on Computer-Aided Designing In partnership with Maya Academy Bhopal, a 10-day training program on Computer-Aided Designing using software like Coral Draw and Photoshop was conducted. 20 students benefitted from this program, providing significant learning and opportunities.

December 5, 2022: Workshop on Machine Embroidery A workshop aimed at equipping students with essential embroidery skills and various machine techniques for embroidery was organized.

December 27-28, 2022 : Training by Dr. Vishakha Shrivastava on Innovative Design Methods and Fashion Trends Dr. Vishakha Shrivastava, a renowned designer, trained students on innovative design methods and current fashion trends.

February 20-25, 2023: Tie & Dye Workshop A workshop conducted by well-known designers, Mrs. Aditi Badal and Raakhi Rahangdale, focused on teaching students about tie and dye techniques, enabling them to create colorful patterns.

This comprehensive report highlights the diverse range of workshops, seminars, and training sessions conducted, providing students with valuable knowledge and skills in areas such as project proposal writing, startup preparation, design, and entrepreneurial thinking. These initiatives have significantly contributed to fostering creativity and skill development among the participating students.

September 12, 2023 : Orientation program – An orientation program was conducted with the primary aim of acquainting students with the objectives and goals of the E-Cell and Incubation Center. Dr. Ranjana Upadhyay took the lead in elucidating the various courses offered within these programs. The session provided students with comprehensive insights into the process of generating innovative startup ideas and encouraged them to pursue entrepreneurship, emphasizing the invaluable support and resources available through the

incubation center. Dr. Upadhyay's guidance equipped students with a clearer understanding of the opportunities and assistance provided, empowering them to explore entrepreneurial ventures confidently.

September 26, 2023 : Workshop on sewing skills - an engaging workshop focusing on enhancing sewing skills was meticulously organized. Delegates from the esteemed Usha Company led the workshop, offering insightful demonstrations and providing hands-on training to the participants. Fashion students gained invaluable knowledge about the intricate workings of sewing machines, exploring various stitching techniques under the expert guidance of the Usha representatives. The workshop proved to be immensely beneficial, empowering the students with practical skills and in-depth understanding, ultimately enhancing their proficiency in sewing and nurturing their expertise in the field of fashion.

August 21, 2023: World Entrepreneurship Day - was celebrated with a motivational lecture delivered by Dr. Ashok Nema. His insightful talk served as a catalyst, inspiring students to embark on the entrepreneurial path, emphasizing its potential to create job opportunities for numerous individuals. The event, named "Har Haath Kaam," witnessed an enthusiastic participation from students who were eager to delve into the world of entrepreneurship. Dr. Nema's words ignited a passion within the attendees, encouraging them to consider entrepreneurship as a means of not just self-fulfillment but also as a vehicle for broader societal impact through job creation.

October 18, 2023: "Punarkalpan"- Khaadi Garment Show took center stage, featuring creatively designed garments crafted by students from the textiles and E-Cell departments. This event was a tribute to Mahatma Gandhi, commemorating his profound values regarding the production of goods within our nation's borders as a means to bolster the economy and express patriotism. The students exhibited their exquisitely designed garments through an engaging ramp walk, captivating the audience who expressed high praise for their exceptional creations. The showcase not only celebrated the spirit of Mahatma Gandhi but also highlighted the students' talent and dedication, emphasizing the significance of supporting locally produced goods and fostering economic strength while honoring our country.

October 14, 2023: Seminar- A seminar on Sustainable Fashion was meticulously organized, featuring an enlightening lecture by Mr. Prince Gaba. His discourse deeply resonated with the attending students, shedding light on the paramount importance of utilizing sustainable fabrics in the realm of fashion. Additionally, Dr. Shail Baghel, the esteemed college Principal, underscored the significance of incorporating sustainable textiles, further emphasizing their value in the fashion industry. The seminar served as an educational platform, imparting crucial insights that underscored the pivotal role of sustainable materials in shaping the future of fashion, resonating profoundly with both Mr. Gaba's discourse and Dr. Baghel's valuable contributions.

Activities of E-Cell & Incubation Center

लीगल एड क्लीनिक - समाधान

डॉ. मनीषा शर्मा
संयोजक

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (NLSA) योजना के आधीन राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण (SLSA) म.प्र. के सौजन्य से जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (DL.SA), भोपाल के सहयोग व समन्वय से विधिक सेवा सहायता महाविद्यालय द्वारा "न्याय तक सबकी पहुँच" उद्देश्य से संचालित की जाती है।

कानूनी सहायता क्लिनिक का प्रबंधन स्वयंसेवकों (छात्रों) और संकाय सदस्यों द्वारा जरूरतमंद व्यक्ति की समस्याओं के प्रति प्रतिबद्धता, संवेदनशीलता और संवेदनशीलता की भावना के साथ किया जाता है। कानूनी सहायता क्लिनिक नियमित रूप से सोमवार से शुक्रवार दोपहर 1 से 3 बजे तक खुला रहता है। डीएलएसए टीम ने कॉलेज के कानूनी सहायता क्लिनिक को सुचारू रूप से चलाने के लिए दो वकीलों को नियुक्त किया। यह अनूठी प्रथा है जिसमें छात्र टीम जिला अदालत में लोक अदालत में वादकारियों को उनके मामलों के शीघ्र निपटान में सहायता करती है। कानूनी परामर्श और अपनी कानूनी कार्यवाही करने के लिए कॉलेज के एलएसी में अधिवक्ता श्रीमती चंदा ठाकुर और सुश्री अंजलि रॉय द्वारा साप्ताहिक दौरा किया जाता है विधिक सहायता टीम को डीएलओ श्री बी.एम सिंह द्वारा विषय लोक अदालत प्रबंधन 23 जुलाई 2021 प्रशिक्षण दिया गया जिसमे 5 छात्रों ने जिला अदालत का दौरा किया और 11 सितंबर 2021 को राष्ट्रीय लोक अदालत में भाग लिया और कानूनी कार्यवाही के बारे में सीखा. ज़ूम मीट पर लीगल एड क्लिनिक के लक्ष्य और उद्देश्यों पर एक ओरिएंटेशन प्रोग्राम (दिनांक 15.09.2021) आयोजित किया गया था जिसमें 885 छात्रों ने भाग लिया और श्री एस. पी. एस. बुंदेला सचिव (जिला विधिक सेवा प्राधिकरण) सर ने विधिक सहायता के बारे मे बताया। 11 अक्टूबर 2021 को अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. राका आर्य ने व्याख्यान दिया और विषय - कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न पर चर्चा की। 11 दिसंबर 2021 को लोक अदालत का दूसरा दौरा। संकाय सदस्यों के साथ 18 छात्रों की टीम ने कानूनी प्रक्रियाओं और कानूनी गतिविधियों के बारे में अध्ययन किया, जिन्हें अध्यक्ष, डीएलएसए और प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, भोपाल (म.प्र.) द्वारा निर्देशित किया गया था। दिल्ली, अलीगढ़, नागपुर, गांधी नगर, कोलकाता और केरल के एनएलयूआई छात्रों ने एक दिवसीय इंटर्नशिप कार्यक्रमों के लिए अलग-अलग तारीखों पर एसएनजीजीपीजी कॉलेज के कानूनी सहायता क्लिनिक का दौरा किया। दिनांक 24-01-2022 को राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन किया गया जिसे श्री एस.पी.एस. बुंदेला सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने ज़ूम प्लेटफॉर्म पर कन्या भ्रूण हत्या और लैंगिक समानता विषय पर चर्चा की। 11 सितंबर 2023 में हुई जिसमे हमने बेटियों की शिक्षा को लेकर नुक्कड़ नाटक करके जागरूकता बढ़ाई। साल की आखिरी लोक अदालत विजिट की जिसमें हमने बहुत कुछ सीखा जाना वह समझा।

लीगल ऐड क्लिनिक के उद्देश्य

- समाज के गरीब और कमजोर वर्गों को सेवाएँ प्रदान करना।
- कानूनी सलाह, याचिकाएं, नोटिस, उत्तर और कानूनी महत्व के अन्य दस्तावेजों का मसौदा तैयार करने जैसी बुनियादी प्रकृति की कानूनी सेवाओं को संभालने के लिए सस्ती स्थानीय मशीनरी प्रदान करना।
- स्थानीय लोगों के विवादों को मध्यस्थता और सुलह के माध्यम से हल करना और इस तरह विवादों को अदालतों तक पहुंचने से रोकना।
- व्याख्यान, सेमिनार और कार्यशालाओं जैसे विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना। छात्रों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों के बारे में ज्ञान प्रदान करना।
- सर्वेक्षण या अनुसंधान आधारित कार्यक्रम संचालित करना।

सफलता का प्रमाण

कानूनी सहायता क्लिनिक नियमित रूप से सोमवार से शुक्रवार दोपहर 1 से 3 बजे तक खुला रहता है। डीएलएसए ने कॉलेज के कानूनी सहायता क्लिनिक को सुचारू रूप से चलाने के लिए दो वकीलों को नियुक्त किया। यह अनूठी प्रथा है जिसमें छात्र टीम जिला अदालत में लोक अदालत में वादकारियों को उनके मामलों के शीघ्र निपटाने में सहायता करती है। राष्ट्रीय लोक अदालत में 18 छात्र-छात्राओं की टीम ने भाग लिया जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा कार्यवाही संचालित 11-09-2021 जिसमें करीब चौदह हजार कोर्ट का हवाला दिया गया. प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश भोपाल एवं अध्यक्ष डीएलएसए श्रीमती गिरिबाला सिंह द्वारा महाविद्यालय की एलएसी टीम को प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया. कॉलेज ने 15 सितंबर 2021 को लीगल एड क्लिनिक की कार्यप्रणाली पर एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को समाज की गतिविधियों, इसकी कार्यप्रणाली और संविधान के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम में कॉलेज के 800 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। उन्मुख छात्र कानूनी सलाह लेने वाले लोगों का मार्गदर्शन, सहायता और सहायता कर सकते हैं।

हिन्दी साहित्यिक गतिविधि समिति

डॉ. कीर्ति शर्मा
संयोजक

साहित्यिक गतिविधियाँ महाविद्यालय की छात्राओं के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है, जिसके माध्यम से छात्राएँ अपनी रचनात्मक प्रतिभा को प्रस्तुत कर सकती हैं। विभिन्न साहित्यिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से छात्राओं की ज्ञानवृद्धि तो होती ही है, साथ ही उनमें लेखन कौशल और वक्तृता शैली भी विकसित होती है। अध्ययन के साथ छात्राओं की रचनात्मकता प्रतिभा साहित्यिक गतिविधियों से निखर जाती है और छात्राओं के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है। सत्र 2023-24 के दौरान समिति द्वारा आयोजित कुछ प्रमुख गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत है।

सत्रारम्भ में दिनांक जुलाई 31, 2023 को महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर उनकी कहानियों का मंचन तथा कहानी पाठ का आयोजन किया गया। छात्राओं द्वारा 'नमक का दरोगा' तथा 'कफन' कहानियों का प्रभावी मंचन किया गया। छात्राओं ने अत्यंत प्रभावी अभिनय के माध्यम से संदेश दिया कि ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की सदैव जीत होती है। 'कफन' कहानी का सफल मंचन प्रथम वर्ष की छात्राओं द्वारा किया गया। इस मंचन में निर्धनता के कारण मनुष्य लाचार होकर कितना सम्वेदना शून्य हो जाता है, स्पष्ट किया गया। छात्राओं ने प्रेमचंद की कहानियों जैसे 'बड़े घर की बेटी', 'ईदगाह', 'पूस की रात', 'दो बैलों की कथा' 'बड़े भाई साहब' 'सद्गति', 'ठाकुर का कुआँ' का पाठन किया। प्रेमचंद की कहानियों के माध्यम से निर्धनता, जातिप्रथा, रिश्वत, भ्रष्टाचार तथा अन्य सामाजिक बुराईयों/समस्याओं की सजीव प्रस्तुति छात्राओं द्वारा की गई।

भारतीय स्वतंत्रता के अमृतकाल के अंतर्गत स्वाधीनता दिवस के संदर्भ में दिनांक अगस्त 11, 2023 को आजादी के किरदार, तथा स्वरचित काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आजादी के किरदार प्रतियोगिता में छात्राओं ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस, शहीद भगतसिंह, रानी लक्ष्मीबाई, महात्मा गाँधी, ऐनी बेसेन्ट, सरोजिनी नायडू, रानी चेनम्मा, बाबा साहेब अम्बेडकर, सावित्रीबाई फूळे, भीकाजी कामा तथा सुभद्राकुमारी चौहान की वेशभूषा धारण कर उनके संदेशों का प्रभावी प्रस्तुतीकरण किया। वेषभूषा प्रतियोगिता में रानी अवंतीबाई के भेष में सुश्री चंचल वर्मा, रानी लक्ष्मीबाई के रूप में सुश्री राखी भावसार तथा नेताजी सुभाषचन्द्र के भेष में सुश्री मोम्पिया चक्रवर्ती का प्रदर्शन सराहनीय रहा। सुश्री मदिहा हाफिज ने एनी बेसेन्ट के रूप में प्रभावशाली प्रदर्शन किया। स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में छात्राओं ने देशभक्ति पर आधारित अपनी मौलिक कविताओं का सस्वर पाठ किया। कवितापाठ के माध्यम से छात्राओं ने देश के प्रति अपने कर्तव्य, जागरूकता को साकार किया। स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में सुश्री दिव्यांशी लिटोरिया, सुश्री सृष्टि त्रिपाठी क्रमशः प्रथम तथा द्वितीय स्थान पर रही। सुश्री रक्षंदा खान और सुश्री संजना लोधी संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहीं।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अगस्त 15, 2023 को महाकवि जयशंकर प्रसादजी की कविता 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से ....' पर आधारित 'वीरा' नाटक का मंचन छात्राओं द्वारा किया गया। इस नाटक में एक माँ की प्रेरणा से पुत्री देशसेवा के लिए जाती

है और भारतमाता के प्रति कर्तव्यनिष्ठा एवम् दृढ़ता का परिचय देते हुए अपने प्राण न्योछावर कर देती है। इस नाटक में भारतवर्ष की महानता तथा भारतीय महिलाओं का देश के प्रति समर्पण को प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया। छात्राओं ने अत्यंत सजीव अभिनय द्वारा देश भक्ति की भावना को साकार किया। इस नाटक ने दर्शकों की सम्वेदना को जागृत कर मार्मिक एवम् महत्वपूर्ण संदेश दिया।

छात्राओं को भारतीय सनातन संस्कृति एवम् तुलसी साहित्य की प्रासंगिकता से परिचित कराने के उद्देश्य से दिनांक अगस्त 23, 2023 को संतशिरोमणी तुलसीदासजी की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर रामायण केन्द्र भोपाल के निर्देशक तथा मध्य प्रदेश तीर्थस्थल एवम् मेला प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में अत्यंत सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्राओं को वर्तमान में तुलसी साहित्य के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि किसी भी युग में जीवन की हर परिस्थिति में तुलसी का साहित्य प्रेरणा देता है। यह साहित्य प्रतिकूलता में संघर्ष करने हेतु मार्गदर्शन देता है। छात्राओं ने संत तुलसीदासजी का संक्षिप्त परिचय देते हुए रामचरितमानस की चंद चौपाईयो और दोहों का सस्वर पाठ किया। इस अवसर पर मानस गान के द्वारा सम्पूर्ण वातावरण राममय हो गया।

हिन्दी साहित्यिक गतिविधि समिति तथा बैंक ऑफ बड़ोदा के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी दिवस का आयोजन दिनांक सितम्बर 14, 2023 को किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल ने छात्राओं को हिन्दी भाषा के महत्व तथा वर्तमान प्रगति की जानकारी दी। समिति संयोजक डॉ. कीर्ति शर्मा ने हिन्दी भाषा के गौरवशाली इतिहास को प्रस्तुत करते हुए कहा कि हिन्दी भाषा में भारतीय संस्कृति की आत्मा बसती है। इस अवसर पर छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता कर भाषण प्रतियोगिता में अपनी वक्तृता प्रतिभा का प्रदर्शन किया। 'तकनीकी विकास के युग में हिन्दी' विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं सुश्री अर्पणा चौबे, सुश्री सुभाषिनी मिश्रा तथा सुश्री दिव्यांशी लिटोरिया को बैंक ऑफ बड़ोदा की राजभाषा अधिकारी सुश्री स्वाति ठाकुर द्वारा पुरस्कृत किया गया।

सत्य और अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता और गाँधी दर्शन से छात्राओं को परिचित कराने के उद्देश्य से गाँधी जयंती के संदर्भ में अक्टूबर 9, 2023 को रचनात्मक लेखन विधा का आयोजन किया गया। रचनात्मक

लेखन का विषय 'यदि आज महात्मा गाँधी होते' था जिसमें प्रतिभागी छात्राओं ने स्पष्ट किया कि देश में कुटीर उद्योग पल्लवित होता तो भ्रष्टाचार और बेराजगारी की समस्याएँ इतनी भयावह नहीं होती। उन्होंने इस बात को भी दोहराया कि महात्मा गाँधी का दर्शन आज भी देश में सत्य तथा अहिंसा की स्थापना में सहायक हो सकता है। छात्राओं ने लिखा कि महात्मा गाँधी यदि आज होते तो भारत के ग्रामीण क्षेत्र आत्मनिर्भर और सशक्त होते।

अक्टूबर 27, 2023 को 'प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें' विषय पर महाविद्यालय में पधारे अतिथि डॉ. रितेश सिंगारे के महत्वपूर्ण और उपयोगी व्याख्यान का आयोजन किया गया। डॉ. सिंगारे ने अपने वक्तव्य में छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के सम्बंध में उपयोगी जानकारी दी। उन्होंने छात्राओं को नियमित शिक्षा के साथ साथ लक्ष्य निर्धारित कर तैयारी हेतु मार्गदर्शन दिया। डॉ. सिंगारे ने स्पष्ट किया कि प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छात्राओं को स्वयं भी प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि केवल कोचिंग कक्षाओं में जाने भर से ही सफलता नहीं मिल सकती। छात्राओं ने अत्यंत रुचि एवम् जिज्ञासुओं के रूप में प्रतिभागिता की। यह व्याख्यान छात्राओं के लिए अत्यंत उपयोगी रहा।

हिन्दी भाषा के रचनाकारों की रचनाओं में प्रकृति के अद्भुत और अद्वितीय सौंदर्य चित्रण को प्रस्तुत करना तथा पर्यावरण के प्रति छात्राओं को जागरूक करने के उद्देश्य से 'प्रकृति और पर्यावरण' शीर्षक से दिसम्बर 06, 2023 को कविता पाठ का आयोजन किया गया। इस आयोजन में स्वरचित एवम् अन्य रचनाकारों की कविताओं का सस्वर पाठ छात्राओं द्वारा उत्साहपूर्वक किया गया। उल्लेखनीय है कि छात्राओं ने प्रकृति के अदभुत सौंदर्य को प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में पर्यावरण के स्वरूप को भी सामने रखा। इससे छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की भावना भी स्पष्ट हुई। कविता पाठ में सुश्री अर्पणा चौबे, एवम् सुश्री मान्या गुर्जर संयुक्त रूप से प्रथम स्थान पर, सूश्री अनुश्री त्रिपाठी द्वितीय तथा सुश्री संजना यादव तृतीय स्थान पर रहीं।

हिन्दी साहित्यिक गतिविधि समिति
सत्र 2023-24

हिन्दी साहित्यिक गतिविधि समिति
सत्र 2023-24

Activities of English Literary Society

Dr. Sonal Choudhary
Convenor

The English Literary Society, established in 2023, is a dynamic and inclusive community within our esteemed college dedicated to fostering a love for literature, encouraging intellectual curiosity, and providing a platform for the expression of diverse literary voices. The society operates under the auspices of the Literary Activities Committee, and is committed to uniting all literary enthusiasts within the college, and to create a vibrant literary community.

The primary objective of the English Literary Society is to enhance the literary skills of our members by providing them with opportunities to delve deep into the realms of literature. It aims to enrich their understanding of diverse literary forms and genres through workshops, seminars, and events. It aims to serve as a platform for students to engage in meaningful discussions, explore new perspectives, and strengthen the expression of diverse literary voices.

Recognizing the fundamental role of reading in the mental and intellectual growth of an individual, it aims to inculcate a reading habit among our members. It aims to provide an environment conducive to intellectual growth with its book clubs, reading circles, and literary discussions. Through thoughtful discussions and interactive sessions, it strives to promote critical thinking among our members. Its aim is to encourage them to question established notions, explore new perspectives, and develop analytical skills essential for a deeper understanding of literature.

The first Meeting of the English Literary Society was organized on 21 July 2023 at 12.30pm in the College Auditorium (MB-18). The aim of the meeting was to introduce and explain the scope, aims and activities of The English Literary Society to the students. It was decided that that it would organize literary activities at regular intervals with the aim of enhancing the Reading/ Writing/ Speaking/ Listening Skills of its member students. The Professors in charge of the English Literary Society are Dr. Sonal Choudhary, Dr. Rajkumari Sudhir, Dr. Rohit Trivedi, and Dr. Shreeja Tripathi Sharma. Office bearers were also announced during this session. Shreya

Sharma of MA Final (English Literature) was assigned the responsibility of the President of the English Literary Society, and Anshika Raghuwanshi was assigned responsibility of the Vice-President of the English Literary Society.

Shreya Sharma (MA Final)
President

Anshika Raghuwanshi (MA Pre.)
Vice- President

An Extempore Speech Event was organised on 19/08/23 at 12:30 pm in the Auditorium (MB-18). The aim was to provide the students with a platform to sharpen their oratory skills, and to instil in them a love for Literature.

A Self-Composed Poetry Competition, Poetry Unleashed, was organised on 22/09/23. The Competition aimed to provide a platform for students to express their creativity, thoughts, and emotions through poetry. Prizes were distributed to the winners of the Self-Composed Poetry Competition, Poetry Unleashed on 04/10/23 during the Athena, Literature Workshop conducted by the Department of English in collaboration with the English Literary Society.

The Literary Activities Committee (The English Literary Society and the Hindi Literary Society) organized a Kavita Path in collaboration with the Department of Sanskrit, and the Department of Urdu on 6/12/23. The event showcased the remarkable talents of our students and celebrated the beauty of poetry through a poetry recital competition in Hindi, English and Urdu. It was an unforgettable event filled with literary brilliance and artistic expression.

The English Literary Society has an unwavering commitment to enhancing literary skills, promoting diverse voices and inspiring love for literature. The entire college is invited to join us on this journey of exploration, intellectual curiosity and critical thinking. Let us together create a space where the magic of literature thrives, and adds beauty and meaning to all our lives.

ईको – क्लब

डॉ. दीप्ति संक्त
संयोजक

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय में बुधवार को युवा मंथन मॉडल जी 20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के निर्देशन में किया गया। सम्मेलन की थीम जलवायु परिवर्तन तथा आपदा जोखिम न्यूनीकरण में सभी संकाय की कुल 40 छात्राओं ने 20 देशों के प्रधानमंत्री राष्ट्रपति तथा विदेशमंत्री के रूप में प्रतिभागिता की। इस आयोजन का उद्देश्य भारतीय युवाओं को वास्तविक अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक मुद्दों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ शैल बाला सिंह बघेल ने अपनी उपस्थिति दी तथा युवामंथन संचालन संयोजक डॉ मुकेश दीक्षित एवं सह संयोजक डॉ दीप्ति संफत द्वारा किया गया।

वनस्पतिशास्त्र विभाग द्वारा दिनांक 21-11-2023 को लोक जैव वनस्पति विषय के अंतर्गत " आँवला नवमी कार्यक्रम" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वनस्पतिशास्त्र विभाग के प्राध्यापकों सहित महाविद्यालय के अन्य प्राध्यापकों एवं छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। वनस्पतिशास्त्र विभाग की प्राध्यापक डॉ. अलका वर्मा, सह-प्राध्यापक डॉ. अपर्णा लश्कर एवं डॉ. दीप्ति संकत ने छात्राओं को बताया कि इन पारंपरिक पर्वों को मनाने का वास्तविक उद्देश्य वानस्पतिक विविधता का संरक्षण करना है। ऑवला नवमी के वैज्ञानिक महत्व के बारे में साथ ही साथ आँवले के स्वास्थ्यवर्धक गुणों के बारे में बताया। इस कार्यक्रम में छात्राओं को आँवले के स्वास्थ्यवर्धक गुणों से अवगत कराने के साथ-साथ ऑवलें भी वितरित किये गये। कार्यक्रम की समाप्ति पर छात्राओं ने पेड़-पौधों के संरक्षण करने की प्रतिज्ञा ली।

शिक्षक अभिभावक योजना

डॉ. श्रद्धा दुबे
संयोजक

शिक्षक अभिभावक योजना मध्यप्रदेश शासन, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा महाविद्यालयों में लागू की गई एक अत्यंत प्रभावी योजना है। इस योजना के माध्यम से छात्राओं और महाविद्यालयीन परिवार के संबंध अधिक प्रगाढ़, पारदर्शी व सजीव हुए है। इस योजना के माध्यम से छात्राओं की समस्याओं का निराकरण व उन्हें सही मार्गदर्शन व दिशा-निर्देश देने का कार्य किया जाता है।

स्नातक व स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष के प्रवेश पूर्ण हो जाने पर Autonomous Cell द्वारा मेजर विषय के आधार पर Roll No. प्रदान करने के बाद समूह बनाने का कार्य संपादित होता है। प्रत्येक शिक्षक अभिभावक के पास लगभग 60 छात्राओं का एक समूह है, जिनकी समस्त जानकारी शिक्षक अभिभावक पुस्तिका में संकलित की जाती है। शिक्षक अभिभावक इन छात्राओं के लिए एक Whatsapp Group का निर्माण भी करता है। वर्ष भर महाविद्यालय में प्रसारित सूचनाएं व छात्राओं के हित से जुड़ी अनेक जानकारियां इस समूह में सांझा कर शिक्षक अभिभावक, छात्राओं तक पहुँचाते हैं।

इस वर्ष महाविद्यालय में अध्ययनरत लगभग 7500 छात्राओं तक समस्त सूचनाएं पहुँचाने हेतु लगभग 140 शिक्षक अभिभावक समूहों का सृजन किया गया है। महाविद्यालय की कर्मठ, अनुशासन प्रिय एवं लगनशील प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल के निर्देशन में गणित की प्राध्यापक डॉ. श्रद्धा दुबे के संयोजन में 04 Faculty Co-ordinators, डॉ. रेणुका राणा (वाणिज्य), डॉ. अनिता जैन (कला), डॉ. रंजना त्रिवेदी (गृह विज्ञान) डॉ. सीमा दीक्षित (विज्ञान) के माध्यम से सभी समूह अपना कार्य संपादित कर रहे है। यह समिति महाविद्यालय की समस्त गतिविधियों यथा प्रवेश शुल्क, परीक्षा टाइम टेबिल, परीक्षा शुल्क, खेल कूद, युवा उत्सव, पत्रिका, सांस्कृतिक गतिविधियों, विभिन्न शिविरों एवं दिवसों तथा महाविद्यालयीन, अंतरमहाविद्यालयीन विश्वविद्यालयीन सभी सूचनाओं को छात्राओं तक पहुचानें का कार्य अत्यंत प्रभावी ढंग से संपादित कर रही है। इसके अतिरिक्त शिक्षक अभिभावक एवं छात्राऐं प्रत्यक्ष रूप से भी सतत् संपर्करत रहते है। इसी कड़ी मे यह समिति शिक्षक अभिभावक बैठक भी आयोजित करती है। इस वर्ष स्नातकोत्तर स्तर की प्रथम शिक्षक अभिभावक बैठक का आयोजन दिनांक 02 दिसंबर 2023 दिन शनिवार को किया गया।

बैठक के आयोजन से पूर्व स्नातकोत्तर स्तर की सभी छात्राओं हेतु समूह निर्माण कर शिक्षक अभिभावक की नियुक्ति Faculty Coordinators के माध्यम से की गई। इन सभी का Computerised Time Table बना कर "नूतन जानकारी" समूह के माध्यम से समस्त छात्राओं व महाविद्यालयीन स्टॉफ को यह जानकारी प्रेषित की गई। रोल नं ज्ञात होने पर कोई भी प्राध्यापक/छात्रा Tutor Guardian का नाम व फोन नं ज्ञात कर सकते है। बैठक के आयोजन हेतु महाविद्यालय की विभिन्न समितियों, उनके संयोजको व उनके दायित्वों का विस्तृत विवरण देने के लिए "संवाद सेतु" का समिति की संयोजक डॉ श्रद्धा दुबे ने सृजन/लेखन कार्य किया। जिसे महाविद्यालय की प्राचार्य, प्राध्यापकों व छात्राओं ने उपयोगी बताते हुए प्रशंसा की।

शिक्षक अभिभावक योजना बैठक हेतु अन्य आवश्यक तैयारियां यथा बैठक का (Time Table) आवश्यक् निर्देश, कक्ष का आवंटन, समय का निर्धारण, शिक्षक अभिभावक के अवकाश पर होने की स्थिति में अन्य शिक्षक का आवंटन, संवाद सेतु की प्रति, उपस्थित प्रतिवेदन एवं सुझाव संकलन प्रोफार्मा इत्यादि कार्य संपादित किये गए।

इस वर्ष प्राचार्य डॉ शैल बाला सिंह बघेल मैडम के निर्देशानुसार शिक्षक अभिभावक बैठक मे एक नवाचार क्रियान्वित किया गया। संवाद सेतु का वाचन, पुस्तिका में प्रविष्टियां पूर्ण करने, अपने सुझावों से शिक्षक अभिभावक को अवगत कराने के साथ साथ इस बैठक को और अधिक रूचिकर बनाने के लिए शिक्षक अभिभावक द्वारा अपने समूह की छात्राओं के साथ एक Activity क्रियान्वित की गई जिससे उनका समय व शिक्षक अभिभावक बैठक मनोरंजक रूप से संपन्न हो और उनका बंधन अधिक प्रगाढ़ बने।

इस नवाचार द्वारा संपूर्ण स्नातकोत्तर कक्षाओं मे अलग अलग Activities संपादित की। जिनमे Mathematical Rangoli, News Letter का प्रकाशन, नृत्य, गायन, विभिन्न खेल, अंत्याक्षरी, Mind Games, Poster Making Identification of Birds, स्वरचित कविता पाठ, श्लोकवाचन, योगासन, इत्यादि भांति भांति की Activities शामिल थी। प्रत्येक विभाग व कक्षा ने विभिन्न गतिविधि संचालित की। समस्त कक्षाओं मे हर्ष व उल्लास का वातावरण था। सभी प्राध्यापकों व छात्राओं ने उमंग व उत्साह से इन गतिविधियों को पूर्ण किया।

प्राचार्य महोदया, प्रशासनिक अधिकारी डॉ. मनीषा शर्मा एवं शिक्षक अभिभावक योजना की संयोजक डॉ श्रद्धा दुबे द्वारा समस्त समूहों/कक्षाओं मे Activities का निरीक्षण कर छात्राओं से बातचीत व उनका उत्साहवर्धन किया। इन सभी गतिविधियों के लिए प्राचार्य महोदया समस्त शिक्षक अभिभावक व छात्राऐं बधाई एवं धन्यवाद की पात्र हैं। माह जनवरी मे स्नातक स्तर की समस्त कक्षाओं हेतु भी इसी प्रकार शिक्षक अभिभावक बैठक का आयोजन प्रस्तावित है।

Earn while you learn

डा. लक्ष्मी अग्निहोत्री
संयोजक

21 अगस्त विश्व उद्यमिता दिवस पर महाविद्यालय की अध्यनरत छात्राओं एवं NOGA की छात्रों द्वारा हस्तशिल्प उत्पाद जैसे ज्वेलरी, राखी, कशीदाकारी के वस्त्र एवं अन्य सामग्रियों की प्रदर्शनी लगाई गई। दिनांक 28 और 29 अगस्त को सावन राखी मेला गर्ल्स कामन रूम में आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन प्राचार्य डॉक्टर शैलबाला सिंह बघेल ने फीता काटकर किया। समिति संयोजक डा. लक्ष्मी अग्निहोत्री, सदस्य डॉ. सीमा रजा और अन्य शिक्षकों ने शामिल होकर मेले में छात्राओ का उत्साह बढ़ाकर उन्हे प्रोत्साहित किया। हस्तशिल्प उत्पाद जैसे हाथों द्वारा बनी राखी, पेंटिंग्स, ज्वेलरी, पिलो कवर, सलवार सूट, साड़ियां, फूड आइटम्स, कच्ची घानी का तेल जैसे उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई। लगभग 11 स्टॉल लगाए गए। छात्राओं द्वारा मेहंदी लगाकर "सीखो कमाओ " स्लोगन द्वारा खुद को प्रचारित किया। अन्य महाविद्यालय की प्रतियोगिता मे Earn while you learn की प्राध्यापक सदस्य डा. निशी शर्मा एवं चार छात्राएं शमा खान, हरजीत कौर सागो, जसविदर कौर सागो, अलसिया ने हमीदिया महाविद्यालय के करियर मेला में शामिल होकर पुरस्कार प्राप्त किया। सभी छात्राओ को बहुत- बहुत बधाई।

स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन सेल

डॉ. प्रमोद चतुर्वेदी
संयोजक

एलआईसी वित्तीय स्वतंत्रता कार्यशाला का आयोजन 21.08.2023 को दोपहर 2 बजे महाविद्यालय में स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन सेल के तहत भारतीय जीवन बीमा के अधिकारी द्वारा किया गया था। महाविद्यालय द्वारा एलआईसी वित्तीय स्वतंत्रता के तहत लड़कियों के लिए "नौकरी की संभावनाओं पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया था। व्याख्यान में प्राचार्य डॉ. शैलवाला सिंह बघेल, संयोजिका डॉ. कविता सिंह और समिति सदस्य उपस्थित थे। इस अवसर पर एलआईसी के मुख्य शाखा प्रबंधक श्री अजय खेर विकास अधिकारी श्री पदम भंडारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाविद्यालय के स्वामी विवेकानन्द कॅरियर सेल की समन्वयक डॉ. कविता सिंह द्वारा बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने में इस व्याख्यान की भूमिका

के बारे में जानकारी दी गई। एलआईसी अधिकारी ने एलआईसी नीतियों और इसके महत्व और भविष्य की सुरक्षा के बारे में बताया कि लड़कियां भविष्य में बिना लागत/पूंजी के एलआईसी सलाहकार के रूप में अपना खुद का व्यवसाय बना सकती हैं। एलआईसी के मुख्य शाखा प्रबंधक ने प्रश्न पूछे और उत्तर देने वाली छात्राओं को छोटे-छोटे पुरस्कार दिए। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शैल बाला सिंह बघेल ने बालिकाओं के आत्म-निर्भर होने का महत्व बताया। कार्यक्रम के अंत में संयोजक डॉ. कविता सिंह ने आभार व्यक्त किया।

महाविद्यालय में 24 अगस्त 2023 को स्वामी विवेकानन्द कैरियर मार्गदर्शन योजना के अंतर्गत विषय विशेषज्ञ अंकिता यादव द्वारा एमपी पीएससी सेट परीक्षा की अंतिम समय की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी हेतु एक महत्वपूर्ण व्याख्यान का आयोजन दोपहर 1:00 से 2:00 बजे तक किया गया।

इस अवसर पर विषय विशेषज्ञ ने सभी स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों पर प्रकाश डाला परीक्षा से संबंधित मुख्य बिंदु एवं छात्राओं की शंकाओं का समाधान। कार्यक्रम के अंत में संयोजक डॉ. कविता सिंह ने विषय विशेषज्ञ का आभार व्यक्त किया।

डॉ. मीना सक्सेना ने समाज में शिक्षकों की भूमिका के बारे में बताया, शिक्षक की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, हमारे पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्ण भी एक महान शिक्षक थे। उनका जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु में हुआ था। उनके सम्मान में उनके जन्म दिवस को भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वह एक आदर्श शिक्षक, महान विद्वान और लेखक थे। उन्हें 1954 में भारतीयों के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न " से सम्मानित किया गया। उन्होंने VNENCO में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

12/09/2023 और 13/09/2023 को पर्यावरण अनुकूल गणेश निर्माण कार्यशाला आयोजित की गई थी, जिसका आयोजन ललित कला विभाग में स्वामी विवेकानन्द करियर मार्गदर्शन सेल द्वारा किया गया था। डॉ . कविता सिंह, डॉ. इंदिरा जावेद, डॉ. अपर्णा अनिल और रिसोर्स पर्सन योगेश यादव और 66 छात्राएं। उन्होंने विद्यार्थियों को मोल्डिंग तकनीक, मिट्टी को रंगने में कितना पानी डालना चाहिए और सुखाने में लगने वाले समय के बारे में प्रशिक्षित किया। कार्यशाला में छात्राओं ने

उत्साहपूर्वक भाग लिया और मिट्टी, पानी, कागज और रंगों की मदद से सुंदर गणेश जी बनाए। प्रिंसिपल मैडम ने छात्राओं से कहा कि प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी गणेश जी की मूर्ति का उपयोग न करके अपने पर्यावरण को बचाना एक सामूहिक जिम्मेदारी है।

स्वामी विवेकानन्द कैरियर सेल मार्गदर्शन द्वारा दिनांक 23/08/23 को श्रीमती खुशबू भैया द्वारा राखी निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सत्र में अद्वितीय डिजाइन और सामग्री के साथ राखी बनाने के प्रशिक्षण की रूपरेखा तैयार की गई। सत्र में प्रोफेसर ने भाग लिया। कविता सिंह, डॉ. इंद्रा जावेद और स्वामी विवेकानन्द कैरियर सेल में 47 छात्राओं ने राखी बनाने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया, यह भविष्य में लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए राखी बनाने के प्रशिक्षण के साथ-साथ सीखने का बहुत अच्छा अवसर था। छात्र सत्र में शामिल होकर खुश थे। इस सत्र में जो छात्रों को ज्ञानवर्धक, रचनात्मक एवं भविष्य के लिए उपयोगी लगा। कार्यक्रम के अंत में संयोजक डॉ. कविता सिंह ने आभार व्यक्त किया।

MVM कॉलेज में दिनांक 12 सितंबर 2023 आयोजित कैरियर मेले में महाविद्यालय की चार छात्राओं ने भागीदारी की।

एन. सी. सी.

डॉ. अर्चना सिंह
प्रभारी

NCC COMPANY ARMY WING (SW)

- NCC company Army wing - Cadet strength 160
- Year of Authorization 1974
- B & C certificate exams are conducted every year
- Weekly parades and classes are organizes in the collage
- Motivational lectures by Dignitaries
- SSCD activities
- Participation of Cadets in the different camps: division, state & national level camps & bring laurels to the collage

Participation of Cadets in Camps

- CATC: Two camps every year
- Thal Sainik Camp (TSC)
- All India Basic Mountaineering camp
- Special National Integration Camp
- All India Trekking camp
- RDC Cultural & Drill
- EBSB Camp Kerala

Achievements

SUO Sangmitra Singh secured Grade-A
In All India Basic Mountaineering camp 2022

NCC COMPANY : Parade Training

UO Priyanka Saad participated in TSC Delhi in 2022, & won Gold in Obstacle Training in MPCG DTE level

Cadets won 1st Prize in Independence Day Parade, at LPG Bhopal
15 August 2022 Independence Day Parade at Lal Parade Ground

Our NCC company won 15 Gold & 10 Silver medals
in CATC VIII in MPU

Republic Day Parade in College campus, in 26 Jan. 2024

SSCD Activities: National Girl's Child Day Celebration

Motivational Talk on "Indian Army A way of Life

वरिष्ठजन/जराचिकित्सा क्लब

डॉ. अर्चना चौहान
संयोजक

दिनांक 30 सितंबर 2023 को महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल द्वारा 'जिरियाट्रिक क्लब' का गठन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य द्वारा क्लब के बैनर को लाँच किया गया। प्राचार्य ने क्लब के सदस्यों को बधाई के साथ ही वृद्धजनों के प्रति छात्राओं को सेवाभाव रखने का संदेश दिया। क्लब की संयोजक डॉ. अर्चना चौहान एवं सदस्य डॉ. मीना सक्सेना, डॉ. मंजुला विश्वास, डॉ. भावना रमैया, डॉ. कीर्ति वर्मा के साथ 50 से अधिक छात्रायें सदस्य हैं। क्लब का उद्देश्य छात्राओं के वृद्धजनों से जुड़े सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरुक करना और पीढ़ीगत अंतराल कम करना है। क्लब के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस को मनाया गया। क्लब ने भोपाल शहर की गौतम नगर स्थित झुग्गी बस्तियों के वरिष्ठ नागरिकों से सम्पर्क कर उनसे सम्वाद स्थापित कर मिष्ठान का वितरण किया गया।

"एक सेल्फी दादा-दादी/नाना-नानी" के साथ अभियान चलाया गया जिसमें छात्राओं और उनके वृद्धजन परिजनों ने उत्साह के साथ भाग लिया। इस गतिविधि का उद्देश्य छात्राओं का अपने वृद्धजनों के साथ क्वालिटी समय बिताना और वृद्धजनों को आधुनिक तकनीक से परिचित कराना था। सेजल, सुहानी, कल्पना, तान्या, काजल, जसिका, कविता, खुशबू आदि छात्राओं ने और उनके वृद्ध परिजनों ने भाग लिया। क्लब द्वारा वृद्धाश्रम में भ्रमण किया गया। साथ ही महाविद्यालय द्वारा लिये गये गोद ग्राम के बुजुर्गों के साथ क्लब सम्वाद सेतु स्थापित करना और गर्म कपड़े आदि वितरित करना भी प्रस्तावित है। क्लब का व्हाट्सएप ग्रुप निर्मित है जिसमें नियमित रूप से वृद्धजनों से संबंधित विषयों पर चर्चा की जाती है जिससे युवा छात्रायें वरिष्ठजनों के प्रति सम्वेदनशील रहें।

हमारा संग्रहालय 'धरोहर'

डॉ. ममता सिंह
इतिहास विभाग

माननीय प्राचार्य महोदय की प्रेरणा एवं प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. श्री नारायण व्यास जी के मार्गदर्शन में हमारे महाविद्यालय में इतिहास का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने हेतु इतिहास विभाग द्वारा 'धरोहर' नामक संग्रहालय की स्थापना की गई है। जिसमें श्री बी. के. लोखंडे बिरला संग्रहालय भोपाल, श्री एस. के. पांडे मानव संग्रहालय भोपाल तथा श्रीमती पूजा सक्सेना पुरातत्त्व धरोहर संस्था ने तकनीकी सहयोग प्रदान किया। संग्रहालय में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्य युग तक के ऐतिहासिक स्रोतों को दर्शाया गया है। यहां आदिमानव का चार पैरों से दो पैरों पर चलना

प्रदर्शित किया गया है। विश्व प्रसिद्ध भीमबैठका स्मारक के महत्व को दर्शाते हुए आदिमानव के द्वारा किए जा रहे शैल चित्र अलंकरण की तकनीक को 3D मॉडल के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। इस संग्रहालय की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें आदिमानव के द्वारा प्रयुक्त मूल पाषाण उपकरण, ताम्र पाषाणिक उपकरण तथा हड़प्पा सभ्यता की मूल मृदभांडों को प्रदर्शित किया गया है जो पुरातत्त्ववेत्ता डॉक्टर नारायण व्यास जी एवं श्री लोखंडे जी द्वारा सहर्ष उपलब्ध कराए गए। संग्रहालय में प्रतिमाओं की प्रतिकृतियां भी प्रदर्शित की गई हैं जिसमें सारनाथ का अशोक स्तंभ, भरहुत की यक्षिणी, मंदसौर के कार्तिकेय, विदिशा की महिषासुरमर्दिनी, आशापुरी के उमा-महेश, नचना की पार्वती मस्तक, मंदसौर की गौरी, सिहोनिया की सरस्वती, हिंगलाजगढ़ के गरुणासिंह विष्णु, एरण की देवकी - कृष्ण, ग्वालियर के बुद्ध तथा जबलपुर से प्राप्त जैन मस्तक आदि हैं। हिंदी भाषा की लिपि ब्राह्मी से देवनागरी तक के विकास क्रम को दर्शाते हुए भी एक प्रादर्श यहां रखा गया है। इसके साथ ही मंदिर स्थापत्य के विकास क्रम को भी छाया चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले किलों की मुख्य विशेषताएं और मध्य प्रदेश के मुख्य किलों की जानकारी भी यहां से प्राप्त होती है। राग-रागिनियों के चित्रों का भी प्रदर्शन किया गया है । संग्रहालय में सांची के स्तूप एवं महाकाल मंदिर की प्रतिकृति मुख्य आकर्षण है, यहां आहत से लेकर मध्य युग तक के सिक्कों को भी प्रदर्शित किया गया है।

यह संग्रहालय इतिहास के साथ ही अन्य विषयों के विद्यार्थियों को भी इतिहास की समझ एवं अभिरुचि प्रदान करता है। संग्रहालय की नेक कमेटी, उच्च शिक्षा के शीर्ष अधिकारी, जन भागीदारी की अध्यक्ष तथा हाल ही में पधारे माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री इंदर सिंह परमार जी के द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। यह संग्रहालय इतिहास विभाग एवं महाविद्यालय की अमूल्य धरोहर है।

युवा उत्सव 2023

डॉ. संजना शर्मा
प्रभारी

भारत सरकार के युवा एवम् खेल मंत्रालय के अंतर्गत प्रति वर्ष युवा उत्सव का कार्यक्रम चार चरणों में आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य देश के युवाओं में राष्ट्रीय एकता की भावना, परस्पर भाई-चारा, साहस, उत्साह एवम् सांस्कृतिक शक्ति का एक सशक्त तथा सक्रिय मंच प्रदान करना है।

युवा उत्सव विभिन्न शहरों तथा जिलों में बसे युवाओं में सम्मिलित रूप से गुण, प्रतिभा एवम् आनन्द के परस्पर आदान प्रदान के अवसर प्रदान करता है। साथ ही उन युवाओं को समाज में एक उपयोगी ताने बाने से जोड़ने का कार्य भी करता है।

महाविद्यालय में युवा उत्सव 2023 के प्रथम चरण की प्रतियोगिताएँ 14-16 सितम्बर 2023 को आयोजित की गई। महाविद्यालय में इस तीन दिवसीय अंतः कक्षा प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल द्वारा माँ सरस्वतीजी के सम्मुख दीप प्रज्जवलन से किया गया। प्रतियोगिताओं का प्रारम्भ चित्रकला प्रतियोगिता से हुआ। इस अवसर पर युवा उत्सव प्रभारी डॉ. संजना शर्मा और समिति के अन्य सदस्यगण डॉ. सुधा दीक्षित, डॉ. कीर्ति शर्मा, डॉ. नीना श्रीवास्तव, डॉ. अर्चना चौहान, डॉ. लोकेन्द्र सिंह, सुश्री ऋचा पाठक तथा डॉ. संतोष रलवानिया उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सांस्कृतिक, रंगमंच, साहित्यिक तथा चित्रकला श्रेणियों में 22 विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

द्वितीय चरण में जिला स्तरीय अंतर महाविद्यालयीन प्रतियोगिताएँ 5-7 अक्टूबर 2023 को भोपाल जिले के विभिन्न महाविद्यालयों में आयोजित की गई। जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में हमारे महाविद्यालय की उत्साही और प्रतिभावान छात्राओं ने निम्न पुरस्कार प्राप्त किए -

भारतीय सुगम संगीत एकल वादन : प्रथम स्थान – सुश्री तरु हरोदे एम. ए. (संगीत)

क्ले मॉडलिंग : प्रथम स्थान - सुश्री दिया डांगले बी. ए. द्वितीय वर्ष

शास्त्रीय संगीत एकल वादन : प्रथम स्थान – सुश्री सिद्धा सांई बी. ए. द्वितीय वर्ष

उपरोक्त छात्राएँ विश्व विद्यालय स्तर पर महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेंगी। महाविद्यालय परिवार समस्त प्रतियोगियों को उत्साह पूर्वक सहभागिता के लिए बधाई प्रेषित कर उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

Enabling Unit

Dr. Rohit Trivedi
Convenor

The Enabling unit is a special initiative of the college that aims to promote the inclusion and empowerment of students with disabilities. The unit was established in 2004 and has been actively involved in various activities to raise awareness, provide support, and create opportunities for students with special needs and concerns. Some of the major achievements of the unit in the last one and a half years are:

- Organizing a 'Disability Awareness Week' in December 2022, where student volunteers demonstrated the challenges faced by persons with disabilities through simulation and role play, such as using sign language, blindfolding, and using wheel chair. The unit also conducted a workshop to train the students in the use of sign language.
- Receiving appreciation from the NAAC peer team for the facilities and work of the unit during their visit in May 2023.
- Hosting a unique event on 23rd September 2023, where over a thousand students and faculty members performed the National Anthem in Sign language. The guest of honour for this event was Pooja Ojha, a para-canoeing player and a role model for persons with disabilities.

A workshop on 30th November 2023, to upskill and explore employment opportunities for persons with disabilities. The workshop was attended by 96 students from different colleges of Bhopal under the aegis of IQAC conducted by Swami Vivekananda Career Guidance and Placement Cell and Enabling Unit in collaboration with Samarthanam Trust for the Disabled.

राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ. मंजुला विश्वास
संयोजक

हमारे महाविद्यालय में रा.से.यो. की इकाई कार्यरत है। इसमें महाविद्यालय की छात्राएँ उत्साहपूर्वक सहभागिता करती हैं। विगत् वर्ष की प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नानुसार हैं।

दिनांक 29 सितंबर 2023 को सुश्री अक्षिता ने महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के द्वारा राष्ट्रपति भवन के दरबार हॉल में यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किया हमारे महाविद्यालय के इतिहास में 18 वर्षों बाद दूसरी बार यह अवसर आया अक्षिता शर्मा ही वह स्वयंसेवक थी जो 2020 में गणतंत्र दिवस परेड में मध्य प्रदेश के दल में शामिल हुई थी। वर्ष 2022 में कुमारी आंचल शर्मा ने कोविद प्रोटोकॉल में हुई गणतंत्र दिवस परेड में भाग लिया और वर्ष 2024 की गणतंत्र दिवस परेड में कुमारी रितु राजा का चयन हुआ है यहां में उल्लेख करना चाहूंगी कि पहली बार हमारे महाविद्यालय की दो स्वयंसेवकों कुमारी रितु राजा और कुमारी प्लाक्षा मिश्रा का चयन 2023 में प्री आरडीसी शिविर जो की हरिद्वार में आयोजित हुआ था उसके लिए हुआ। सत्र 2021-22 के राज्य स्तरीय नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर शिवपुरी में पहली बार था कि हमारे महाविद्यालय की चार स्वयंसेविकों ने एक साथ भाग लिया सुश्री अक्षिता शर्मा और कुमारी आंचल शर्मा आमंत्रित स्वयंसेवक थी और कुमारी प्रिंसिका सिंघई और कुमारी ज्योति पारदी चयनित होकर इस शिविर में शामिल हुई। राष्ट्रीय एकता शिविर में भी हमारे महाविद्यालय से तीन स्वयमसेवकों ने सहभागिता की है, कुमारी अक्षिता शर्मा ने झारखंड के जमशेदपुर में 2022 कुमारी आंचल ने उड़ीसा के जगन्नाथ पुरी में और कुमारी सुहासिनी गायकवाड़ ने 2023 गुजरात के भुज में मध्य प्रदेश का प्रतिनिधित्व किया।

राष्ट्रीय युवा उत्सव नासिक 2024 में कुमारी अक्षिता शर्मा आमंत्रित अतिथि रही और कुमारी आंचल शर्मा का चयन इस शिविर के लिए हुआ। 2023 में राष्ट्रीय युवा उत्सव धारवाड़ में कर्नाटक में कुमारी प्रिसिका सिंघई है का चयन हुआ था। इतनी सारी उपलब्धियां के साथ ही सभी स्वयंसेवकों ने उनके मार्गदर्शन में हर घर तिरंगा अभियान, एचआईवी एड्ज़ की रोकथाम, रेड रिबन क्लब, मतदाता जागरूकता विषय पर फ्लैश मॉब और नुक्कड़ नाटक करके लोगों को जागरूक किया। राष्ट्रीय सेवा योजना के वार्षिक विशेष शिविर 2021-22 का आयोजन ग्राम समसगढ़ में और 2022-23 के विशेष शिविर का आयोजन ग्राम मोगलियाकोट अटल बिहारी वाजपई हिंदी विश्वविद्यालय छात्रावास परिसर में किया गया।

आदिवासी लोक कला थीम पर 14 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय सेवा योजना का उन्मुख कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय में किया गया। विधानसभा चुनाव के पूर्व मतदाता जागरूकता के लिए ब्रांड एंबेसडर कुमारी प्लाक्षा मिश्रा और कुमारी रितु राजा के नेतृत्व में मानव श्रृंखला रैली, नुक्कड़ नाटक, हस्ताक्षर अभियान, रंगोली प्रतियोगिता, और महाविद्यालय परिसर में जागरूकता के लिए बड़ी रंगोली बनाई गई । विश्व एड्स दिवस पर 1/12/23 को रविंद्र भवन में हमारे महाविद्यालय की 34 छात्राओं ने (समुदाय को प्रतिनिधित्व करने दे थीम पर) भी परफ्लैश मौब की प्रस्तुति दी। रेड रिबन रन में भी हमारी छात्राओं ने भाग लिया और कुमारी रितु राजा ने तृतीय स्थान प्राप्त कर Rs.3000 का नगद पुरस्कार जीता। मेरी माटी मेरा देश अभियान के अंतर्गत महाविद्यालय के प्रांगण में अंकुर खेल परिसर और आई ई एस कॉलेज परिसर में वृक्षारोपण किया गया। पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं महाविद्यालय की छात्राओं ने वृक्षारोपण में भाग लिया। बाल अधिकार संरक्षण के लिए वर्ष 2022-23 में हमारे महाविद्यालय की 9 और 2022-23 में हमारे महाविद्यालय की 3 स्वयंसेवकों को आगाज किशोर इंटर्नशिप के लिए चुना गया प्राचार्य डॉक्टर शैलबाला सिंह बघेल के संरक्षण एवं राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी डॉ मंजुला विश्वास और डॉक्टर मीना सक्सेना के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय सेवा योजना अपने स्वर्णिम काल में है।

नूतन ओल्ड गर्ल्स एसोसिएशन (NOGA)

डा. अर्चना गौड़
संयोजक

सरोजिनी नायडू गर्वनमेंट गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट (स्वशासी) महाविद्यालय भोपाल की स्थापना के समय "नूतन ओल्ड गर्ल्स एसोसिएशन" (NOGA) नामक एक पूर्व छात्र संगठन का गठन किया गया। लगभग दो दशको उपरांत NOGA को 2002 में पुन: जीवित किया गया और 2003 में रजिस्ट्रेशन नम्बर द्वारा इसे रजिस्टेर्ड किया गया। और तभी से यह पूर्व छात्राओं की सहभागिता से लगातार सक्रिय है। संस्थान के बेहतर कामकाज के लिये पूर्व छात्राओं को अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। नोगा द्वारा संचालित गतिविधियों का प्रबंधन 5 निर्वाचित पदाधिकारियो द्वारा किया जाता है। सत्र 2022 में नोगा का यूनीयन बैंक ऑफ़ इण्डिया में बैंक अकाउंट खोला गया और तभी से पूर्व छात्राएँ आनलाइन 100/- भुगतान कर सदस्यता ग्रहण करती हैं।

मिशन और लक्ष्य

1. वर्तमान एवं पूर्व छात्राओं के साथ संबंध स्थापित कर उनके बीच संचार अंतर को भरता है।
2. कॉलेज जीवन एवं कैरियर जीवन के बीच एक पुल का निर्माण करना ताकि छात्राओं को पेशेवर दुनिया से परिचित कराया जा सके और आने वाली चुनौतियों का सामने करने के लिए सक्रय बनाया जा सके।
3. संस्थान की छात्राओं के साथ मौखिक और भौतिक अनुभव साझा करने को बढ़ावा देना
4. पेशेवर पूर्व छात्राओं के सहयोग से महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के लिए रोजगार उपलब्ध कराना
5. पढ़ने और सीखने के बेहतर अवसर चाहने वाली छात्राओं के प्रयासो को मार्गदर्शन और दिशा देना।

नोगा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

अकादमिक गतिविधियाँ

1. यूजीसी नेट/ सेट कोचिंग क्लासेस महाविद्यालय की पूर्व छात्र सुश्री रिया अग्रवाल द्वारा छात्राओं को दिनांक 20/4/23 से एक माह की यूजीसी नेट / सेट की तैयारी हेतु कोचिंग दी गई।
2. पर्सनैलिटी डेवलपमेंट क्लासेस - महाविद्यालय की पूर्व छात्रा डॉक्टर नम्रता चंनसोरिया भारद्वाज द्वारा महाविद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व विकास हेतु दिनांक 20/4/23 से एक सप्ताह की पर्सनैलिटी डेवलपमेंट क्लासेस ली गई।
3. जरदोजी के एड - ऑनलाइन कोर्स की कक्षाएं महाविद्यालय की पूर्व छात्र रूजिना द्वारा दिनांक 31/9/ 22 को जरदोजी के एड ऑन कोर्स की कक्षा ली गई।
4. सेल्फ डिफेंस कैंप ट्रेनिंग - नौगा सदस्य सुश्री वर्षा सोनाने एवं प्रज्ञा द्वारा महाविद्यालय की छात्रा को

15 दिवसीय सेल्फ डिफेंस कैंप में ट्रेनिंग प्रदान की गई।

5. नृत्य प्रशिक्षण - महाविद्यालय की पूर्व छात्रा इशिता लाल द्वारा मई 2023 में महाविद्यालय की छात्राओं को नृत्य की ट्रेनिंग दी गई।
6. नूतन गान - महाविद्यालय की पूर्व छात्रा संगीतकार विनस तरकसवार दवारा अप्रैल 2023 में महाविद्यालय की छात्राओं के साथ नूतन गान तैयार किया गया, जिसकी गीतकार महाविद्यालय की पूर्व छात्र श्रीमती अनुभी माहेश्वरी हैं।
7. म्यूज़िकल बैंड ट्रेनिंग - महाविद्यालय की पूर्व छात्रा श्यामा चंद्रावत द्वारा अप्रैल 2023 में महाविद्यालय की छात्राओं को म्यूजिकल बैंड की ट्रेनिंग दी गई।
8. नोगा मीट - 31 मार्च 2023 को महाविद्यालय की पूर्व छात्राओ का सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें छात्राओं द्वारा अपने - अपने विचार रखे गए एवं आगे की कार्य योजना बनाई गई।
9. वित्तीय सहायता द्वारा नोगा का महाविद्यालय के विकास में योगदान।

सरस्वती जी की मूर्ति स्थापना

श्री अरविंद गोयंका पेपर ट्रेडर्स द्वारा अपने पिता श्री सांवल प्रसाद गोयनका की स्मृति में डेढ़ लाख की राशि ज्ञान की देवी मां सरस्वती जी की मूर्ति स्थापित करने हेतु नोगा को प्रदान की गई। उपरोक्त राशि से नोगा द्वारा मां सरस्वती जी की संगमरमर की मनमोहक मूर्ति मुख्य प्रवेश द्वार पर स्थापित की गई जिसका अनावरण तत्कालीन उच्च शिक्षा मंत्री माननीय श्री मोहन यादव जी द्वारा किया गया।

प्रांगण में स्थित छतरियों का रिनोवेशन

- श्रीमती नीलम गोयंका डायरेक्टर चिरायु हेल्थ एंड मेडिकेयर द्वारा लगभग 2 लाख की राशि से छात्राओ के बैठने हेतु महाविद्यालय के प्रांगण में स्थित चार छतरियों का रिनोवेशन करवाया गया।
- अर्न व्हाईल यू लर्न कॉर्नर छात्राओं को अध्ययन के दौरान कमाने के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से महाविद्यालय की कैंटीन के समीप अर्ज व्हाईल यू लर्न कॉर्नर विकसित किया गया जिस हेतु महाविद्यालय की पूर्व छात्रा भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी श्रीमती सोफिया फारूकी द्वारा लगभग 50000 की राशि द्वारा टेबल्स और लोहे की अलमारियां उपलब्ध कराई गई।
- महाविद्यालय की पूर्व छात्रा श्रीमती सोफिया फारूकी भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी द्वारा छात्राओ के मनोरंजन हेतु कैंटीन के समक्ष रु. 15000 की राशि से झूला लगाया गया।

- हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर महाविद्यालय की पूर्व छात्रा श्रीमती दिव्या पाराशर एसोसिएट डायरेक्टर जवाहरलाल कैंसर हॉस्पिटल द्वारा लगभग 20000 की राशि द्वारा छात्राओं, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुए व्यापक प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल प्रदान करने के उद्देश्य से स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र विकसित किया गया।
- बुक बैंक महाविद्यालय की गरीब छात्राएं जो की पुस्तक खरीदने में असमर्थ हैं के लिए नोगा द्वारा एक बुक बैंक प्रारंभ किया गया। बुक बैंक से छात्राओ को वर्ष भर के लिए पुस्तक इशू की जाती हैं। इसका संचालन लाइब्रेरी में पदस्थ नोगा सदस्यो द्वारा किया जाता है।
- इनक्यूबेशन सेंटर में फैब्रिक डिजाइन कॉर्नर महाविद्यालय की छात्राओं हेतु महाविद्यालय की पूर्व छात्र श्रीमती अर्चना बस्तरिया उद्यमी द्वारा रु. 15000 की राशि द्वारा इनक्यूबेशन सेंटर में जारी जरदोजी कॉर्नर एवं मर्चेंडाइजिंग और स्टाइलिंग कॉर्नर विकसित किया गया।
- महाविद्यालय की पूर्व छात्रा डॉक्टर सुनीता सिंह प्रो चांसलर IES यूनिवर्सिटी द्वारा रु. 25000 की राशि एवं डॉ दीप्ति संकत प्राध्यापक बॉटनी सरोजिनी नायडू स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय द्वारा रु. 20000 की राशि द्वारा कैंटीन के समक्ष छात्राओ को बैठने हेतु 03 शेड का निर्माण करवाया गया, साथ ही महाविद्यालय के मुख्य द्वार पर एक नोटिस बोर्ड का निर्माण करवाया गया।

हमारा छात्रावास

डॉ. भावना रमैया
अधीक्षक

महाविद्यालय भवन से लगभग 300 मीटर की दूरी पर अवस्थित हमारा 'नूतन छात्रावास' सत्र 2003-04 से अस्तित्व में आया। वर्तमान में छात्रावास में 188 छात्राओं को सुविधा पूर्वक रहने की व्यवस्था है। छात्रावास में सुश्री विनीता श्रीवास्तव छात्रावास प्रबंधन का कार्य देखती हैं तथा अधीक्षक के साथ डॉ. नीना श्रीवास्तव सहायक अधीक्षक के दायित्व का वहन कर रही हैं। छात्रावास की दैनिक व्यवस्थाओं के संचालन के लिए एक चौकीदार परिवार सहित 24 घण्टे उपलब्ध रहता है। छात्रावास के प्रशासनिक एवम् व्यवहारिक प्रबंधन हेतु महाविद्यालय स्तर पर एक सलाहकार समिति भी कार्यरत है। छात्रावास में भोजनालय की व्यवस्था भी है। छात्राओं को प्रतिदिन सुबह शाम चाय नाश्ता तथा दोपहर एवम् रात्रि भोज उपलब्ध होता है। सप्ताह में कम से कम दो बार मौसमी फल भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

छात्रावास में संध्या 7.30 बजे की दैनिक प्रार्थना में प्रत्येक छात्रा की उपस्थिति अनिवार्य होती है । दैनिक उपस्थिति हेतु निर्धारित पंजी में रिकार्ड रखा जाता है। छात्राओं को उनके अभिभावक के लिखित आवेदन पर ही शहर से बाहर जाने की अनुमति है। छात्रावास में चिकित्सकीय सुविधा हेतु प्रति सप्ताह एक बार महिला चिकित्सक उपलब्ध रहती है।

आलेख

बचपन की स्मृतियां

डॉ. माधवीलता दुबे
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र

आज बच्चों की छुट्टी है नाश्ता हो चुका है और मुझे एक कार्यक्रम में जाना है, पर खाना तैयार नहीं हो पाया बिटिया से पूछा क्या करूं? वह बोली आप जाओ मैं मैगी नूडल्स बना लूंगी। मैंने कहा रोटी नहीं बनाओगी? उसने कहा नहीं, मुझे नहीं आता खाना बनाना मैंने उससे तपाक् से बौखलाहट में बोला सोलह साल की उम्र में तो मैं चूल्हे में सबका खाना बनाती थी। यह कहते हुए मुझे वह सब याद आया जब मैंने पहली बार खाना बनाया था। तब मैं शायद 14 साल की उम्र की थी। खाना चूल्हे में बनता था, घर में जितनी महिला सदस्य होती थीं कुछ न कुछ काम जरूर करती थीं। कोई मसाला कूटता, कोई सिलबट्टे पर चटनी पीसता। मौसम के अनुसार भोजन को सुस्वादु बनाने समय-समय पर अचार, मुरब्बा, बड़ी, पापड़ इत्यादि बनते रहते थे। इस तरह भोजन की तैयारी घर के महत्वपूर्ण कामों में से एक काम होता था। जब भी हम खाना बनाने की तैयारी में कुछ असहज महसूस करते तब ही मां कहती थीं, अरे तुम्हारी उमर में तो हमारी शादी हो गई थी। मां कहती थी उस समय आटा भी घट्टी (हाथ की चक्की) में पीसना पड़ता था उन्हें। मुझे याद है जब मैं छोटी थी तो नानी और मां घर में मसाले कूट पीस कर तैयार करती थीं। नमक भी कूटा जाता था अतः बीच का रास्ता निकाला गया कि जब चूल्हे में दाल या चांवल पकने रखा जाए तो बटलोई में अधन आने के पहले नमक साबुत डाल दिया जाए, तो नमक कूटने वाले की मेहनत कम हो जाएगी। मां कहती थी इतना अंदाज तो होना चाहिए कि कितना नमक डाला जाना चाहिए। और साथ में हमारी सतर्कता बनी रहे इसलिए डाँट भी देती थीं कि यदि नमक ज्यादा डाला तो पूरा खाना तुम्हीं को खिलाऊंगी। मैं बहनो में सबसे छोटी थी और जब तक मैंने नियमित रूप से खाना बनाना शुरू किया तब तक तो नानी चलबसी थीं और बहिनें पराई हो चुकी थीं। मेरी बड़ी बहिन ने मेरे अंदर विश्वास पैदा करने के लिए मुझे रास्ता बतलाया। उन्होंने कहा अंदाज से नमक उठाओ दो डल्ली बड़े और एक छोटा टुकड़ा अब इनको मुंह से चूमो और चूल्हे पर रखे बर्तन में अदहन आने के पहले डाल दो। मैं वैसा ही करने लगी। धीरे-धीरे आदत पड़गई। सूखे हुए कंडे लकड़ी और चूल्हे की सफाई यह सब भी ध्यान रखना पड़ता था। बर्तन चूल्हे में काले होगें तो बर्तन साफ करने वाली बाई नाराज न हो इसलिए मां ने बर्तन के पीछे चूल्हे पर चढ़ाने के पहले राख की एक परत लगाना सिखाया था सो वह भी खाना बनाने की तैयारी में शामिल था।

दरअसल खाना बनाने के तरीके सीखना और सामूहिकता का सही आनंद तो हमने गांव से सीखा था। गर्मी की छुट्टियों और दिसंबर की छुट्टियों का हमें बेसब्री से इंतजार होता था। जब हम दादी दादा, चाची- चाचा के पास गांव जाते थे, 'रोटी-पन्ना', गुड्डा-गुड़िया की शादी नाच- कूद नाटक यह सब हमारे बचपन के खेल थे। उन दिनों की यादें मेरे स्मृतिपटल पर जस की तस उतरी हैं। छुटिट्यो में जब हम गांव जाते थे तब बस से उतरकर हमें गांव की पगडंडी से घर तक ले जाने के लिए बैलगाड़ी आती थी। जब हमारी बैलगाड़ी निकलती तो गांव में पानी भरने जा रही औरतें रूककर हमें बड़े उत्साह से देखतीं और तब दादी की बात याद आ जाती दादी कहा करती थीं बेटा; गांव में सबसे हाथ जोड़ कर राम-राम की जाती है सो हम सबसे राम-राम करते घर तक आते। घर पहुंचते ही चाची एक पीतल की बड़ी सी परात में हमारे पैर रखबाती और अपने हाथों से पानी डाल कर धोती थीं इसके बाद हम घर की चौखट पर खड़े हो जाते वहाँ हमारे ऊपर से गडुआ उसारा जाता (एक लोटे में जल भरकर अतिथि के ऊपर से घुमाना) फिर चाचाजी, चाची, दादी, बच्चे सभी बहुत खुश होकर पास बैठकर हालचाल पूछते और फिर हमें छुट्टियों में क्या करना है इसकी योजना बनने लगती। दादी चाची से कहती आज और कल का दूध जोड़ लेना जमाना मत (दही जाउन मत डालना) बच्चों के लिए रबड़ी बनाना है।

हम भी दूसरे दिन का इंतजार करते। दूसरे दिन रात में खाने के बाद दादी बड़े कढ़ाहे में दूध ओटती रबड़ी तैयार होती फिर कटोरियां तैयार कुछ पूरी भरी और कुछ थोड़ी खाली। जो भरी होती थीं वे हमारे सामने और जो कुछ खाली होती थीं वे चचेरे भाई-बहिनों के लिए। दादी का यह लाड़ करने का ढंग चचेरे छोटे भाई को चुभन पैदा करता था उसने दादी से आखिर पूछ ही लिया ऐसा क्यों करती हो आप? उन्होंने जबाब दिया शहर से थोड़े ही आते है रोज ये बच्चे तुम तो मेरे पास ही हो और कई बार खाते हो। मेरी नीयत तब भी नहीं भरती थी मेरी नजरें कढ़ाई में चारों ओर जो दूध चिपक जाता था उसमें लगी होती थी और दादी बड़े सहेज कर खिरचन निकालती मैं अपनी कटोरी उनके सामने बढ़ा देती। इस तरह मेरे हिस्से में और कुछ ज्यादा आ जाता। रात को गुरसी में अलाव जलाकर हम चारों ओर बैठ जाते साथ में दादाजी व दादी भी कुर्सी पर बैठ जाते हमें अच्छी-

अच्छी बातें सुनाते कभी धर्म की तो कभी हमारे पिताजी के बचपन की बातें, जो उन्हें गुदगुदाती थीं। रात में फिर हम भाई बहिन अपने-अपने बिस्तर में ढककर सो जाते। सुबह आवाज सुनाई देती दही मथने की, उससे हमारी नींद खुल जाती। हम चाची के पास जाकर कहते हमें नाश्ते में मक्खन रोटी और मही जरूर देना चाची कुछ अच्छे पकवानों के नाम बताती। आज तो गुड़ की जलेबी, ज्वार का चून बनने वाला है, पर तुम्हें मक्खन तो मिल ही जाएगा। दादी एक दिए को अंगार जैसा तपाकर उसमें छोंक डालती फिर मही में डाल देतीं बहुत स्वादिष्ट रायता तैयार हो जाता था। नाश्ते के बाद मैं अपनी चचेरी बहिन के साथ पानी भरने कुएं तक जाती। चचेरी बहिन एक साथ दो तीन घड़े भरकर सिर पर रख लेती थी और संयमित होकर घर तक ले आती थी। एक दिन मैंने उससे कहा कि तुम मेरे बराबर हो फिर इतनी छोटी कैसे हो? उसने कहा कि घड़ों का वजन इतना ज्यादा होता है कि रोज-रोज ढोने में छोटी हो गई मैंने उससे पूछा जब तुम स्कूल जाती होगी तब पानी कौन भरता होगा? उसने कहा गांव में लड़कियां रोज स्कूल नहीं जातीं क्योंकि उन्हें पानी भरना, रोटी बनाना और अपने छोटे बहिन, भाई को संभालना होता है। अतः हम अपने घर का काम करना पहले जरूरी समझते हैं। थोड़ी देर के लिए हम लोग गन्ने के खेत में भी चले जाते। फिर दिन में खाना पीना दुबारा घर से बाहर खेत खलिहान तक जाने की इजाजत किसी से लेना हो ऐसी बात तो नहीं थी पर यह बात सच है कि मुख्य द्वार के पास दादा जी का तखत होता था। अतः हमारा वहां से निकलना मुमकिन नहीं होता था। फिर दोपहर के खाने के बाद थोड़ा आराम करके हम शाम के पहले और रात में खेले जाने वाले खेल नाच-गाने नाटक की तैयारी करते। रोटी-पन्ना और गुड्डे गुड़िया की शादी यह हमारे प्रिय खेल थे छोटे-छोटे बर्तन में खाना बनाने का अभ्यास और बरातियों का स्वागत दुल्हन की पोशाक तैयार करना बहुत सारे इंतजाम.... चाचाजी लड़के वालों की तरफ से हमारे खेल में अगुवाई करते और चाची लड़की वालों की तरफ से। खाना बनता, बारात आती गुड्डे गुड़िया की शादी होती फिर चाचाजी सबसे कहते वाह ! क्या बताएं भाई बहुत बढ़िया इंतजाम था। शाम ढलने पर पनिहारी महिलाएं निकलते समय हमारे घर के ओटले

पर थोड़ी देर बैठती और चाची जी से कहती शहर से बच्चा आए है तो हमें भी कछु बताएं। चाची हंसते-हंसते उनसे कहती रात को ब्यारू से फुरसत हो कर अइयो सो नाटक नाच गाना सब देख लीजो | कुछ बुजुर्ग महिलाएं रात में आतीं फिर क्या मेरी बहिनें मुझे कृष्ण बनाकर बीच में खड़ा कर देती और मेरे चारों तरफ नाचती। एक दिन पीली ड्रेस में मुझे बहुत तैयार किया गया रात में मुझे बुखार आ गया दादी ने नौंन मिर्ची (नमक मिर्च) से उसार कर मेरी नजर उतारी फिर मैं रात भर अच्छे से सोई। चचेरे भाई-बहिनों ने राम लीला के कुछ अंश की हमें रिहर्सल करवा दी थी सो उसका भी मंचन रात में होता मुझे याद है हम राम-भरत मिलाप के अंश को प्रस्तुत करते थे। घर में बैलगाड़ी पर काम करते रामदीन काका, पड़ोसी बंशीकाका और जानवरों की सफाई करने आने वाली गिनगुनू माई से भी हम वैसे ही मिलते थे जैसे वे हमारे घर के सदस्य हों। छुट्टियां कब बीत जाती थीं पता ही नहीं चलता था। जब हम गांव से वापस जाते चाची हमारी तैयारी में जुट जाती ताजे फल, सब्जियां खेत से तुड़वाकर रखती साथ में घी, मावा और भी चीजें।

बचपन की स्मृतियों का दूसरा पड़ाव नानी के घर जाना। नानी के घर हम अक्सर गर्मियों में जाते थे। नानी के यहां मुझे मौसेरे - ममेरे भाई बहिन मिलते थे जिनके संग मस्ती करने का अंदाज कुछ अलग ही था। मुझे याद है जब मैं कक्षा 4 में गई थी तब नानी मुझे एक माह के लिए ले गई थीं। वहां उन्होंने मुझे एक छोटा सूपा, एक ढोलक, एक कपड़ा, सुईधागा और फ्रेम खरीदकर छुट्टियों में सिखाने का इंतजाम किया था अक्सर नानी उनसे मेरा अभ्यास करवातीं। गेहूँ साफ करते समय मेरे छोटे हाथों में सूपा से धीरे-धीरे मैं अनाज साफ करना सीख गई। फिर ढोलक बजाना। अक्सर गांव में भजन मंडली बैठती थी। नानी सबको बताती देखो हमारी बिटिया की ढोलक क्या खनकती है। उल्टी बखिया, चैनस्टिच से जरा सा फूल क्या बनाती सबको दिखाकर आती थीं। इस तरह मनोबल बढ़ाकर सिखाने का उनका ढंग अलग ही था। एक दिन की घटना कभी भुलाई नहीं जाती। मौसम खराब हुआ और आंधी आई। मौसी के बच्चों ने कहा कि आम गिरेंगे, चलो। मैं नानी को बगैर बताए तेजी से दौड़ लगाकर आम के पीछे भागती गई। आंधी कुछ ज्यादा ही तेज थी। आम इतने बीने की हमारी टोकरी भर गई पर आंधी और फिर बारिश में खड़े रहना मुश्किल था। नानी घबरा गई। बगैर चप्पल पहने मुझे पुकारती खेतों के पास आ गई। भाई बोल रहे थे चलो यहां से पर मैं इतना डर रही थी कि कैसे ऐसे मौसम में जाऊंगी। तब तक नानी की पुकार कानों में पड़ी वे मुझे पकड़ कर घर ले आई डांटा अगर कुछ हो जाता तो तेरी मां को मैं क्या जबाब देती ? मैंने देखा उनके पैरो में बड़े-बड़े कांटे लग गए हैं, वे दर्द से कराह भी रही थी पास में नाई को बुलवाया गया उसने बखूबी नानी के पैरों से कांटे निकाले। फिर क्या दूसरे दिन सुबह नानी से पूछा आज मौसम खराब है तो शौच कैसे जाएंगे ? दरअसल सभी उस समय खुले में शौच जाते थे। नानी अक्सर मुझे एक जगह नहीं झांकने नहीं देती थी। वहीं आज उन्होंने मुझे भेजा। वहां ईटों को इस तरह जमाया गया था कि शौच की अस्थायी व्यवस्था हो सके। मैंने देखा तकरीबन घंटे भर बाद एक महिला आई उसने वहां सफाई की और टोकरी में मैला भरकर उठाकर ले गई। यह

सब देखकर मन बहुत दुखी हो गया। रात में नानी से पूछती रही ऐसा क्यों? नानी ने बताया उनको वही काम करना है। उनकी जाति भगवान ने बनाई है। इसलिए तो कहती हूं कि सब को छूने उठने बैठने में सोचा करो। मैंने गांव में जाति के आधार पर बंटे इन कामों को देखा गहरी संवेदना तब भी थी और आज वह बोध में परिणत हो गई। रात में नानी रामलीला दिखाने ले जाती थी। धर्म और जाति का भाव गांव में किस तरह समाहित है, यह देखने मुझे बचपन में मिल गया था।

मुझे याद है छुट्टियों के बाद जब हम वापस होते थे तो रिश्तेदार सब लोग हमें विदाई में कपड़े देते थे। उपहार में नए कपड़े लेकर हम शहर आ जाते अपने साथियों के बीच छुट्टियों में बिताएं दिनों के किस्से सुनाने और दिखाने बहुत कुछ होता था। जब मैं कक्षा चौथी की गर्मियों की छुट्टियों से लौटी तो नानी भी हमारे साथ आ गई थीं कुछ अस्वस्थ थीं इसलिए नानी गांव में सिखाई बातों को दोहराती रहती। स्कूल जाने के समय हिदायत देती हर किसी के साथ झूठा-मीठा मत खाना और जब हम घर लौटते तो हमारे ऊपर गंगा जल छिड़कती थी। एक दिन मेरी कक्षा की एक छात्रा जो दलित जाति व गरीब परिवार से संबंधित थी। उसने मुझसे पूछा कि तुम एक दिन क्या मेरे घर चल सकती हो? उसकी सहानुभूति का कारण कुछ दूसरा था दरअसल स्कूल के वार्षिकोत्सव में उसके पास पहनने के कपड़े नहीं थे। स्कूल की ड्रेस कई जगह से सिली थी, पैबंद लगे हुऐ थे तो वह रो पड़ती थी। मैंने घर में बगैर बताये अपने एक जोड़ी कपड़े उसे लाकर दिये और फिर वह कार्यक्रम में भाग ले पाई थी। यही वजह थी कि वह घर में सबसे मुझे मिलाना चाहती थी। जब मैं उसके घर गई तो उसका घर एक छोटी झोपड़ीनुमा था, उसने एक टीन के बर्तन में बाजरे की रोटी और पालक की सब्जी खाने दी। मैंने खाने से मना कर दिया। मन में लग रहा था नानी ने कुछ कहा है। उसकी मां ने पूछा क्यों नहीं खा रही हो ? मैंने कहा आज व्रत है। उसकी मां समझ गई, बोली इतने छोटे बच्चे व्रत नहीं रखते क्या तुम ब्राह्मण हो? मैंने कहा हां! फिर उनने अपनी लड़की से थाली सामने से उठाने को कह दिया। टाट-पट्टी जो अलमारी में रखी थी उसके नीचे से 25 पैसे का सिक्का लेकर मेरी सहेली मुझे लेकर स्कूल आई। बाहर खड़े ठेले से उसने समोसा खरीदा और रोते हुए मुझसे कहा इसे खालो क्योंकि इसको बनाने वाले की तुम्हें जाति नहीं पता। मेरी स्थिति बहुत अजीब थी। अगर नहीं खाती हूं तो सहेली को बुरा लगेगा और अगर खाऊं तो कैसे उसे दुःखी करने के बादइच्छा ही नहीं बची थी। किसी तरह समोसा खाकर स्कूल में वापस गई और फिर जीवन भर के लिए संकल्प लिया कि इन मान्यताओं से ऊपर उठ जाऊंगी।

कुछ समय बाद नानी कैंसर से चल बसी। जब मैं बड़ी हुई तो देखा तकनीक बदलती जा रही है। हमारे घर चूल्हे से खाना बनाना बंद हो गया। फिर हम बुरादा वाली सिगड़ी और कोयले की सिगड़ी में और कभी-कभी बत्तीवाला या पंपवाले स्टोव में खाना पकाने लगे कुकर भी आ गया था। उन दिनों तो खाना बनाना आसान हो गया था। फिर गैस चूल्हा आते तक तो मैं कालेज में पहुंच गई थी। मैंने देखा गांव भी धीरे-धीरे बदलाव की ओर है पर अब पहले जैसी फुरसत नहीं रही कि हम छुट्टियों में जाकर फिर से बचपन की बातों को दोहरा सकें।

कुछ साल पहले की बात है, मैं एक बार अपने चाचा के यहां गांव गई। मेरे छोटे दोनों बच्चे भी साथ गए थे। चाचा-चाची, भैया-भाभी और एक चचेरी बहिन ने हमारा आत्मीय स्वागत किया। हालांकि प्रथागत स्वागत के ढंग कुछ बदल गए थे। सभी ने हमारे महज पैर छुए बहिन जरूर गले से देर तक लगी रही। मैं भी अश्रुपूरित भाव से भीनी हो गई थी, बचपन में खेले राम- भरत मिलाप नाटक के पात्रों की तरह। दरअसल मेरी यह हम उम्र चचेरी बहिन थी। जब मैं कक्षा 7वीं में थी उसका विवाह हो गया था और कक्षा 8वीं में जब आई तब तक वह विधवा हो चुकी थी। तब से अब तक वह ऐसे ही अपना जीवन जी रही है। मैंने देखा अब वह समय को भरने के लिये देर तक पूजा करती रहती है। घर में मोटर पंप से कनेक्शन करके नल लग गया है। गोबर गैस चूल्हा है, मक्खन अब भी निकाला जाता है, पर अब वहां मथानी नहीं एक मशीन रखी है जो मिनटों में दही बिलोकर मक्खन निकाल देती है। शाम हुई मेरे बच्चों ने अपने बैग से वीडियो गेम निकाला और चचेरे भाई की बच्ची ने चाबी वाली गुड़िया। वह गुड़िया आधुनिक वेशभूषा की थी और चाबी भरकर चलने लगती थी, इसलिए उसे खिलाने की जरूरत नहीं थी। मैं सोच रही थी अभी तक रामदीन बंशीकाका और गिनगुनू माई नहीं आए। पता चला रामदीन बहुत वृद्ध हो गया है। ट्रेक्टर आने से बैलगाड़ी का काम खत्म हो गया। अतः चाची जी ने उसे जानवरों के लिए चारा लाने का काम दिया है। किसी तरह वह इस काम को कर रहा है। लेकिन बंशी काका और गिनगुनू माई अब नहीं रहे। बंशी काका का बेटा शहर में नौकरी करने का काम करने चला गया था। वे कुछ दिन बेटे बहू के पास गए थे, पर वहां उनका मन नहीं लगा। यहीं अकेले रहते थे। चाची ने बताया एक दिन वे सुबह घर नहीं आये। उन्हें घर देखने गये। जब दरवाजा खटखटाने पर नहीं खुला तब दरवाजा तोड़कर देखा। बंशी काका की हृदयगति रुकने से मृत्यु हो गई थी। गिनगुनू माई का बेटा नागपुर में एक नमकीन की दुकान पर काम करने लगा था। एक बार उसे दुकान मालिक अपने साथ विदेश ले गए। गिनगुनू माई की आंखें खराब हो गई थीं। शायद बेटे की बाट जोहते पथरा गई थीं। पर शरीर

कब तक साथ देता एक दिन बेटे की प्रतीक्षा करते-करते वह चल बसी। गांव वालों ने उनका क्रिया-कर्म किया।

दूसरे दिन सुबह हमें वापस जाना था। हमारे साथ चाची ने अब भी घर के बनाए व्यंजन व फल रख दिए थे। इस बार हम किसी से मिल नहीं पाए इस बात का दुख था। दादा-दादी के स्वर्गवास से सूनापन आ गया था। वह भी कोई नहीं भर सकता था। हमारी गाड़ी निकली तो मुझे दादी की बात याद आई पर गांव की पगडंडी सड़क में तब्दील हो गई थी। हमारी गाड़ी सरपट दौड़ती मुख्य सड़क तक आ गई और हम गांव के किसी दादा, काका-काकी, भैया, जीजी को राम-राम नहीं कर पाए.... ।

"कुण्ठाग्रसित विश्व और भटकते युवाओं को दिशा देती भारतीय ज्ञान - परम्परा"

डॉ. चित्रा आम्रवंशी
विभागाध्यक्ष, इतिहास

इक्कीसवीं सदी में दुनिया कुण्ठा ग्रसित जीवन जी रही है। कहीं युद्ध हो रहे हैं तो कहीं विश्व के ताकतवर राष्ट्र और अधिक ताकतवर बनने के लिए सामरिक शक्ति का संचय कर रहे हैं। इससे जीवन दायिनी यह वसुन्धरा प्रदूषित और अशान्त होती जा रही है। जीवन जीने के लिए प्राणवायु, जल, प्राकृतिक संसाधनों का निरन्तर होता हास चिन्ता की बात है। कोविड - १९ जैसी महामारी ने विश्व में स्वास्थ्य का संकट एवं आर्थिक संकट पैदा कर राष्ट्रों को दयनीय स्थिति में ला खड़ा किया है। आज खाद्य संकट से दुनिया जूझ रही है। सारे विश्व में आतंक का साया पसरता जा रहा है। जातिभेद, रंगभेद, नस्लभेद के क्रूर पाश में मानवता जकड़ती जा रही हैं। आज भारत 140 करोड़ जनसंख्या का बोझ उठाने को मजबूर है। इनमें 37.14 करोड़ युवाओं की आबादी है जो भटकाव की स्थिति से गुजर रही है। जाति, धर्म, नस्ल, बेरोजगारी, वीडियो गेम, नशा खोरी, जंकफूड आदि की समस्याएं बढ़ती ही जा रही हैं। भोगवादी संस्कृति ने जीवन को खाओ - पियो- मौज करो तक ही सीमित कर रखा है। ऐसी कुण्ठा और समस्याग्रस्त ब्याधि का उपचार भारतीय ज्ञान परम्परा में ढूंढा जा सकता है।

प्रश्न है भारतीय ज्ञान - परम्परा का क्या आशय है ? भारतीय ज्ञान - परम्परा मानव जीवन जीने की कला का नाम है। यह अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है। इसमें ज्ञान - विज्ञान, इहलौकिक - पारलौकिक, धर्म-कर्म, भोग-त्याग का अद्भुत समन्वय है। भारतीय ज्ञान - परम्परा असीम - अनन्त — अथाह — अनुपम - अनुकरणीय और आनंद का अपार स्रोत है।

भारतीय ज्ञान-परम्परा का श्रेष्ठ स्वरूप वैदिक युगीन समाज में परिलक्षित होता है। इसी श्रेष्ठ ज्ञान परम्परा के कारण भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति के रूप में तथा भारत को जगत् गुरू के रूप में दुनिया में जाना जाता रहा है। भारतीय ज्ञान-परम्परा की सबसे अहम् बात यह है कि सृष्टि का जन्म "प्रकृति पुरुष" द्वारा होना माना गया है। पृथ्वी, जल, वायु, पर्वत - नदियाँ, जीव-जन्तु सभी उसी परमतत्व के विविध रूप हैं। अर्थात् कण-कण में है भगवान। चूंकि प्रकृति तत्वों से ही हमें जीवन मिलता है अतएव उन्हें आस्था से जोड़कर उनकी सुरक्षा और संवर्धन का संदेश हमारी ज्ञान परम्परा देती है।

हमारी ज्ञान- परम्परा मानव जीवन की सार्थकता के बारे में भी अहम् बात बतलाती है। हमारे ऋषि-मुनि कहते हैं कि "हे मानव ! तू परमपिता परमेश्वर का युवराज पुत्र है, परमात्मा का उत्तराधिकारी है। अतः परमात्मा ने तुझे इस मृत्युलोक में श्रेष्ठ कार्य करने के लिए भेजा है। तेरा जन्म निरर्थक नहीं है। इस बात को तू समझ और परमात्मा द्वारा सौंपे हुए कार्यों को कर। क्योंकि जन्म और मृत्यु शाश्वत् सत्य हैं। अत: एक दिन तुझे यहाँ से वापस जाना है। यदि तू श्रेष्ठ कार्य करके वापस जायेगा तो परमपिता तुझे गले से लगा लेंगे और प्यार करेंगे।" हमारे धर्मशास्त्र यह कहते हैं कि "चौरासीलाख योनि पार करने के बाद मानव योनि प्राप्त होती है।" अर्थात् बड़े भाग्य से और अनेक जन्मों के पुण्य संचित होने के बाद मनुष्य का शरीर मिलता है। महर्षि तुलसीदास रामचरित मानस में यह कहते हैं कि

"बड़े भाग मानुष तन पावा सुर दुर्लभ सद्ग्रंथनि गावा।।"

इसलिए सत्य यही है कि इस जीवन को सार्थकता के साथ जिया जाय। हमारी ज्ञान - परम्परा यह सिखलाती है कि शिव और शक्ति के योग से मानव तन की रचना हुई है। शक्ति के बिना मानव तन शव के समान है। अर्थात् भारतीय ज्ञान परम्परा प्रवृत्तिमार्गी है। जहां आत्म-तत्व की महत्ता प्रतिपादित की गई है। तुलसीदास जी पुन: लिखते हैं कि :-

"ईश्वर अंश जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी।।"

अर्थात् जीव ईश्वर का अंश है। इसलिए वह भी ईश्वर के समान अविनाशी, चेतन, निर्मल और सुख का महानपुंज (राशि) है। अर्थात् आत्मा ईश्वर का ही अंश है। प्रत्येक जीव में वह अमर आत्मा विराजमान है। उसकी उपस्थिति में ही जीवन चलायमान है। वह नहीं तो शरीर शव के समान है। "गीता" में आत्मा के बारे में कहा गया है

"जायते म्रियते वा कदाचिन नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो - न हन्यते हन्यमाने शरीरं।।2.20।।"

अर्थात् यह आत्मा न तो किसी काल में जन्मता है और न मरता है। यह आत्मा अजन्मा, नित्य, शाश्वत् और पुरातन है। शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता। मृत्यु के संबंध में भी "गीता" में यह उल्लेख आता है :-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय – नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा - न्यन्यानि संयाति नवानि देही।।2.22।।

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्याग कर नवीन स्वच्छ वस्त्र धारण कर लेता है, वैसे ही आत्मा पुराने जीर्ण-शीर्ण शरीर को त्याग कर दूसरे नवीन शरीर में प्रवेश कर जाता है। ईश्वर के अवतरण के संबंध में भी श्रीमद्भागवत् में उल्लेख आता है

"यदा - यदा हि धर्मस्य - ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य–तदात्मानं सृजाम्यहम्।।"
रामचरित्मानस में भी उल्लेख आता है कि :-
"जब-जब होंहि धरम की हानि। बाढ़हिं मूढ़ - अधम- अभिमानी।।
तब-तब धरि प्रभु मनुज शरीरा। हरहिं कृपानिधि सज्जन पीड़ा।।"

अर्थात् वह प्रकृति पुरूष परमपिता परमेश्वर संसार में बुराइयों के बढ़ जाने पर अवश्य अवतार लेता है और बुराई समाप्त कर अच्छाई को स्थापित करता है। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम रावण रूपर बुराई को समाप्त कर धर्म एवं नीति को स्थापित करने के लिए जन्म लेते हैं।

मानव जीवन कैसे सार्थक बने ? इसके लिए हमारे ऋषि-मुनियों ने चार आश्रम का विधान किया था- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम का ध्येय था- बालक को सम्यक ज्ञानार्जन की शिक्षा देना तथा उसका चरित्र निर्माण करना। वृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार:-

"असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतमगमय।।"

अर्थात् बालक असत्य से सत्य का वरण करे। अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश अर्जन करे। अपने जीवन को मृत्यु से अमरता की ओर ले जाए।

गृहस्थ आश्रम का ध्येय था- विवाह संस्कार के बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेशित दम्पत्ति का प्रथम ध्येय संतान प्राप्ति तथा उत्तम चरित्र की संतान का निर्माण। तदुपरान्त समाज में यज्ञ, तप, दान, शौच, स्वाध्याय इन पंचकर्मो के द्वारा सेवा और परोपकार करना। वानप्रस्थ आश्रम का ध्येय था गृहस्थ स्वाध्याय करता हुआ अपने ज्ञान को परिपुष्ट बनाता हुआ उसका लाभ समाज में प्रसारित करना। सन्यास आश्रम का ध्येय था- सत्कर्मो के द्वारा मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करना। मोक्ष मृत्योपरान्त नहीं बल्कि जीते जी सम्पूर्ण जीवन के सत्कर्मों का फल होता था, जो व्यक्ति संतोष धन के रूप में प्राप्त करता था।

भारतीय ज्ञान-परम्परा में १६ संस्कारों का अपना महत्व था जिसका उल्लेख व्यास स्मृति में किया गया है। गर्भाधान से लेकर पुंसवन, जन्म, नामकरण, कर्णबेधन, अन्नप्रासन, जनेऊ, पट्टीपूजन, विवाह, मृत्यु आदि संस्कारों का जीवन में अपना महत्व था। इसी प्रकार अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष पुरूषार्थ थे जो सम्यक तरीके से जीवन में उपयोगी थे। हमारी ज्ञान परम्परा स्वस्थ तन एवं स्वस्थ मन के निर्माण के लिए योग साधना पर भी बल देती है। महर्षि पतंजलि "योगसूत्र" के प्रणेता थे। उन्होंने "चित्तवृत्तिनिरोधः योगः " अर्थात् चंचल मन पर नियंत्रण करना ही योग है, ऐसा बतलाया था। शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक शुद्ध के लिए आष्टांगिक योग मार्ग को महत्वपूर्ण बताया गया है- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि योग नियम के अन्तर्गत आते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में सहकारिता पर भी जोर डाला गया है। श्वेताम्बर उपनिषद में कहा गया है "सहनाववतु सहनौ भुनक्तौ सहवीर्यम् करवा वहै तेजस्वीनावधीतमस्तु मा विद्विषा वहै।"

अर्थात् हम एक दूसरे की रक्षा करें। हम साथ-साथ भोजन करें। हम साथ-साथ उज्ज्वल और सफल भविष्य के लिए अध्ययन करें। हम कभी भी एक दूसरे से द्वेष न करें। गायत्री मंत्र में भी जीवन निर्माण का मार्ग बतलाया गया है–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्।। यजुर्वेद 3.62.10।।

अर्थात् उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप, परमात्मा को हम अपनी अन्तर्रात्मा में धारण करें तथा वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें। हम विवेकवान बनें। हमारा मन, हमारी बुद्धि

सन्मार्गी हो। उत्तम चिंतन एवं उत्तम कर्म ही हमारा जीवनादर्श होना चाहिए। भारतीय ज्ञान परम्परा में कर्म फल का सिद्धांत भी महत्वपूर्ण है। "गीता" में यह कहा गया है:-

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।। मा कर्मफल हेतु भूर्मा, ते संगोऽस्व कर्मणि।।"

अर्थात् हे अर्जुन ! तेरा कर्म पर ही अधिकार है, उसके फल पर नहीं। अर्थात् कर्म कर फल की इच्छा मत कर। भारतीय दर्शन कहता है कि जैसा कर्म करते हो उसके अनुरूप ही तुम्हें फल मिलता है। यदि सत्कर्म करोगे तो सुफल प्राप्त होगा और कुकर्म करोगे तो दण्ड मिलेगा। तथ्य यह है कि डरो और बुरे कर्मो से बचो।

वैदिक दर्शन में ही नहीं बौद्ध तथा जैन दर्शन में भी सदा सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य की सीख देकर मानव को सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा दी गई है। भारतीय ज्ञान - परम्परा मानव निर्माण, सम्वेदना, दया, करूणा, सेवा, परोपकार, प्यार करना सिखलाती है। जैन मुनि स्वामी वर्धमान महावीर ने "जियो और जीने दो" का संदेश दिया था। महोपनिषद के अध्याय 6 का यह मंत्र अत्यंत प्रेरणास्पद है :-

"अयं निजः परोवेति— गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानाम – वसुधैवकुटुम्बकम्।।"

अर्थात् यह मेरा अपना है और यह पराया है इस तरह की गणना छोटे चित्त वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों का तो सम्पूर्ण धरती ही परिवार है। भारत की संसद के प्रवेशद्वार पर महोपनिषद का यह सूत्र वाक्य "वसुधैवकुटुम्बकम्" उल्लेखित है।

गर्व की बात यह है कि हमारी भाषा संस्कृत देव भाषा कही गई है और वर्ष 1987 में नासा द्वारा संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर में प्रयोग के लिए सर्वोत्तम भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई है, क्योंकि अंतरिक्ष में संदेश सम्प्रेषण के बाद परिणाम बेहतर पाये गये। इस कारण अमेरिका, जर्मनी एवं अन्य पश्चिमी देश संस्कृत भाषा के क्षेत्र में नित - नवीन अनुसंधान कर रहे हैं।

सारांश यह है कि पृथ्वी को यदि बचाना है तो भारतीय ज्ञान परम्परा के निर्देशों को भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को अपनाना होगा। आश्चर्य की बात यह है कि प्यारी वसुन्धरा के निर्माण के साथ-साथ उसकी रक्षा- सुरक्षा की चिन्ता प्रकृति पुरुष अर्थात् परमात्मा को थी। तभी तो उन्होंने ऋषि-मुनियों के माध्यम से देवभाषा संस्कृत में वह सारी बातें लिखवा लीं, जिस पर चलकर सृष्टि को स्थायी बनाया जा सकेगा, वरना मानवीय भोगवादी संस्कृति तो इस वसुन्धरा को लील लेने को तैयार दिखाई पड़ती है। संक्षेप में भारतीय - ज्ञान परम्परा यही संदेश दे रही है कि पृथ्वी को सुरक्षित रखना है तो प्रकृति की रक्षा करो। दुनिया में शान्ति कायम करना है तो "वसुधैवकुटुम्बकम्"को जीवन में अपनाओ। युद्धों को रोको। विश्व को युद्ध नहीं बुद्ध की जरूरत है। जियो और जीने दो के सिद्धांत पर चलो। युवाओं को जीवन जीने की कला सिखलाओ जिससे वे भटकाव से मुक्त होकर सार्थक जीवन जीने का प्रयास कर सकें। भारत में नवीन शिक्षा नीति 2021 पर तेजी से तथा वास्तविक रूप में यदि चला जाये तो भी युवा भटकाव पर नियंत्रण लगेगा। युवाओं के लिए स्वामी विवेकानंद का यही संदेश है कि "खाओ-पिओ-मस्त रहो यह जीवन का ध्येय नहीं है बल्कि जोखिम उठाओ जीतोगे तो नेतृत्व करोगे, हारोगे तो मार्गदर्शन करोगे।" भारतीय ज्ञान - परम्परा यह सिखलाती है कि संसार को घृणा - द्वेष - नफरत से बचाना है। मानवता को दया-प्रेम- करुणा का संदेश देना है। देश के अन्दर जो जाति-धर्म का ज़हर घुल रहा उसे विवेकवान बनकर ही दूर कर सकोगे। देश के बाहर, रंगभेद, आतंक, नस्लीय संघर्ष को आत्म जागृति लाकर ही दूर कर पाओगे।

सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक एवं पर्यटन का एक गौरवशाली केन्द्र : विदिशा स्थित हिलियोडोरस स्तंभ

डॉ. संजना शर्मा
प्राध्यापक, इतिहास विभाग

विदिशा में स्थित हिलियोडोरस का स्तम्भ भारत में आधुनिक परिवेश में उसके गोरवमयी इतिहास की झांकी प्रस्तुत करता है। हिलियोडोरस का स्तंभ अपने साथ विश्व में भारत के वीर एवं प्रभावशाली शासकों का इतिहास समेटे हुए है। यद्यपि यह तथ्य भी सही है कि भारत भूमि राजाओं, नरेशों, शासकों में सदैव ही बंटी रही, यही कारण है कि यवन आक्रमणकारी सिकन्दर बड़ी ही सरलता से भारत के अनेक राजाओं को परास्त करता गया, किन्तु सिकन्दर भारत से कुछ ले जा नहीं सका। प्राचीन भारत का इतिहास सांस्कृतिक स्वरूप ही वह धरोहर है जो आज उसे विश्व के सम्मुख इतिहास की गौरवमयी पंक्ति में खडा करती है।

अशोक की मृत्यु के साथ ही भारत की राजनीतिक एवं ऐतिहासिक एकता विकेन्द्रित होने लगी, देश की विश्रृंखलित राजनीतिक स्थिति से लाभ उठाने की इच्छा रखने वाले यवनों ने उत्तरी पश्चिमी सीमा को पार किया और गांधार साकल (उत्तर - मध्य पंजाब) तथा अन्य स्थानों पर अपने शक्तिशाली राज्यों की स्थापना की। मगध में भी एक राजनीतिक क्रांति हुई— जिसके फलस्वरूप एक नया राजवंश सत्तारुढ़ हुआ जिसकी स्थापना पुष्य मित्र शुंग द्वारा हुई। पुराणों में उल्लेख है :-

"पुष्य मित्र सेनानी समुद्र धृत्य वृहद्रथं" अर्थात् सेनानी पुष्य मित्र ने बृहद्रथ को उखाड़ कर राज्य अपने अधिकार में कर लिया। सेना ने इस घटना का बिलकुल विरोध नहीं किया क्योंकि वह भी बृहद्रथ से असंतुष्ट और पुष्य मित्र के पक्ष में थी। फलस्वरूप शुंगराज वंश की स्थापना हुई। (प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास डॉ. राजवदली पाण्डे पेज नं. 186)

पुष्य मित्र शुंग ने (185 ईसा पूर्व से 149 ईसा पूर्व तक) लगभग 36 वर्ष शासन किया। पुष्य मित्र मगध राज्य का स्वामी तो बन गया, परंतु उसके राज्य की स्थिति डावांडोल थी, मगध के सीमांत प्रांत कलिंग, आंध्र, महाराष्ट्र स्वतंत्र हो चुके थे। प्राची, कोसल, आकर वत्स और अवन्ति को पुष्य मित्र ने पुन: संगठित किया।

अवन्ति का राज्य मगध से कुछ दूर पड़ता था और मौर्य साम्राज्य के बाद उत्पन्न अराजकता को नियंत्रण में रखने एवं शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाए रखने के उद्देश्य से पुष्य मित्र ने आकर प्रान्त के मुख्य नगर विदिशा को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। विदिशा में उसने अपने पुत्र "अग्नि मित्र" को राज्य प्रतिनिधि के रूप में रखा। अग्नि मित्र का वीर पुत्र वसु मित्र मगध के सिंहासन पर बैठा - इसी ने सिंधु नदी के दक्षिणी तट पर यवनों की सेना को पराजित किया।

'माल विकाग्निमित्रम्' में पुष्यमित्र के यज्ञ का उल्लेख मिलता है कि- यज्ञ मण्डप से सेनापति पुष्यमित्र स्नेहालिंगन के पश्चात् स्थित कुमार अग्निमित्र को सूचित करता है कि मैंने राजसूय यज्ञ की दीक्षा लेकर सैकड़ों राजपुत्रों के साथ वसुमित्र की संरक्षता में एक वर्ष में लौट आने के नियम के अनुसार यज्ञ का अश्व-बंधन से मुक्त कर दिया है। सिंधु नदी के दक्षिण तट पर विचरते हुए, उस अश्व को यवनों ने पकड़ लिया था। जिससे दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ। फिर वीर वसुमित्र ने शत्रुओं को परास्त कर मेरा उत्तम अश्व छुड़ा लिया, जिसे पौत्र अंशुमान के द्वारा वापस लाए हुए अश्व से राजा सगर ने छुडाया था, वैसे ही मैं भी अपने पौत्र द्वारा रक्षा किए हुए अश्व से यज्ञ करूंगा। अतएव तुम्हें यज्ञ दर्शन के लिए वधु -जन-समेट शीघ्र आना चाहिए। अयोध्या में मिले हुए एक उत्कीर्ण लेख से पता लगता है कि पुष्यमित्र ने तो अश्वमेघ यज्ञ किये थे। शुंगवंश का गौरव बताता है कि यह उल्लेख इतिहास में स्वर्णिम है।

वसुमित्र के उपरान्त ओद्रक राजा हुआ - इसका उल्लेख कोशाम्बी के निकट पभोसा के शिलालेख में हुआ है। शुंगवंश के शासकों का इतना अधिक प्रभाव स्थापित हो गया था कि यवन शासकों ने भी उनसे मैत्रीपूर्ण संबंध बनाना चाहा।

शुंगवंश के नौवें शासक भागवत अथवा भागभद्र के शासन के चौहदवें वर्ष में तक्ष शिला के युनानी राजा एन्यिालकिस का राजदूत डियन का पुत्र हिलियोडोरस (Heliodoros) विदिशा में आया था और उसने इस स्तंभ का निर्माण कराया था। हिलियोडोरस के बेसनगर (वर्तमान विदिशा) में स्थित गरूड स्तम्भ के ऊपर खुदे हुए लेख से पता लगता है कि तक्षशिला के यवन

राजा एन्यिालकिट्स का दूत हेलियोदोरस भागवत् (भगवान वासुदेव का उपासक) हो गया था और उसने (विष्णु मंदिर के सामने) गरूड स्तम्भ (हिलियोदोरस स्तम्भ) भक्ति- प्रदर्शन के लिए खडा कराया। इस लेख से यह भी मालूम होता है कि बहुत से विदेशी भारतीय धर्म से प्रभावित हो उन्हें ग्रहण कर रहे थे और संकीर्णता के कारण उस समय भारतीय धर्म का द्वार बाहर वालों के लिए बंद नहीं था। शुंगवंश के इतिहास की यह एक महत्वपूर्ण देन है जो विदिशा नगरी को साँची के स्तूप के साथ वैदिक परंपरा तथा वैष्णम् धर्म के गौरव को भी प्रकट करती है। भारत के इतिहास में यवनों से पराजय को इतना उल्लेखित किया गया किंतु एक यवन आक्रान्ता द्वारा भागवत धर्म स्वीकार किया जाना गौण ही रहा, इसी स्तंभ के समीप बना मंदिर ध्वस्त हो चुका है। बेसनगर के स्तम्भ लेख से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि यूनानी भी इस काल में हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लिए जो थे। मध्यप्रदेश पर्यटन यदि पर्यटकों के लिए इसे सुलभ दर्शनीय कराये तो यह भारत के शासकों के शौर्य स्थापना के प्रतीक एवं प्रथम शताब्दी में भारत के सुदूर विदेशी राज्यों में अपने सुदृढ़ प्रभाव को स्थापित करता है।

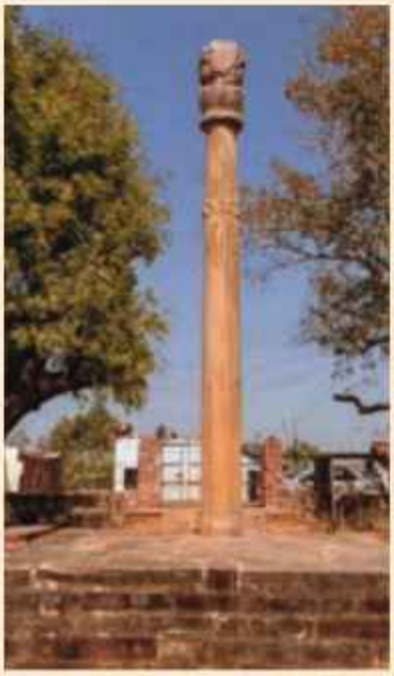

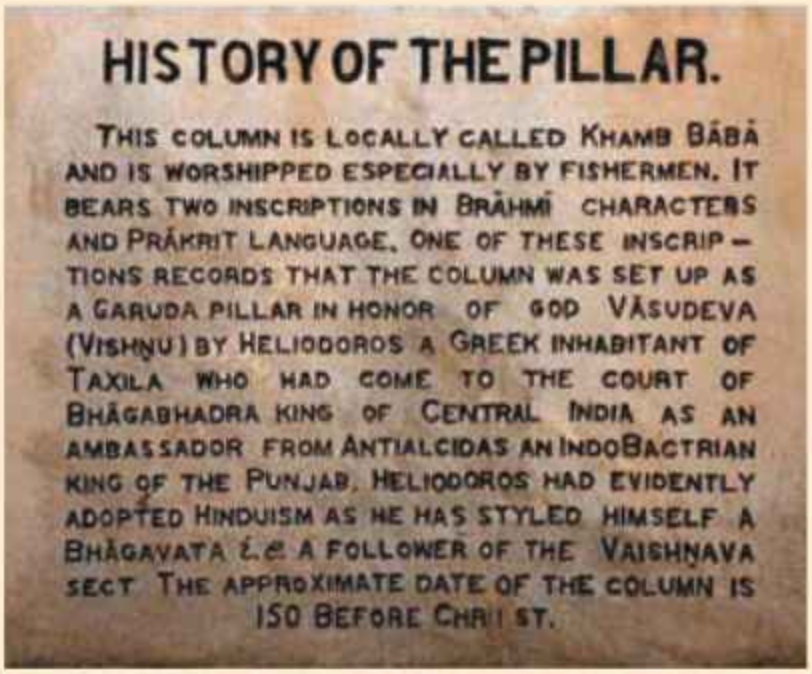

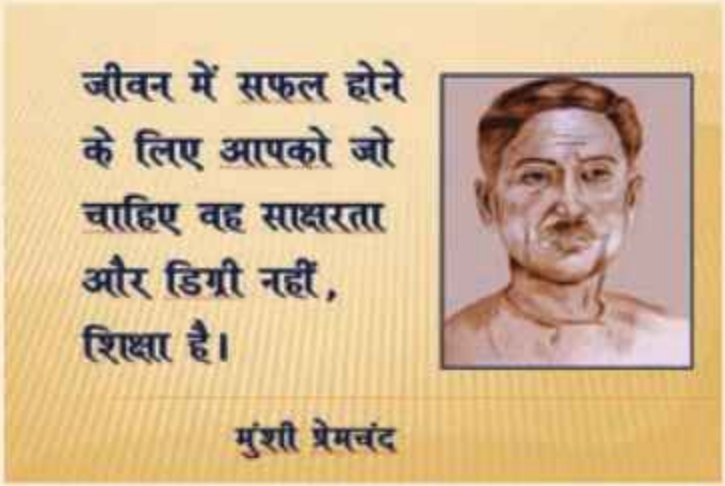

आज कल और कल आज बन जाता है

(नववर्ष में समय की कहानी)

डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी
प्राध्यापक (वाणिज्य)

मरणधर्मा व्यक्ति के जीवन में अमृत्व का सार लिये हुए गतिशील होता है "समय"। प्रत्येक व्यक्ति समय का आदर कर आदरणीय हो सकता है, इस दुर्लभ जीवन से खानगी के पहले समय की अमूल्यता में अपने कर्म मूल्यों की स्थापना से अपनी अमरता की कहानी लिख सकता है व्यक्ति।

इतिहास के पन्ने तब स्वर्णिम लिखे जाते हैं जब कोई नरेन्द्र कालचक्र में मानवता के आनंद का शंखनाद कर विवेकानंद बन जाता है। जब शहीदों की शहादत की तारीख कालचक्र के रथा पर सवार हो देश को स्वतन्त्रता की डगर से गणतन्त्र बना देता है। आज के युवा जवानी के जोश में अपनो होश संवारे रखें क्योंकि समय की जरूरत है कि वो अपने जीवन की कहानी लिखें ऐसी जो तारीख में बदल कर भविष्य में वो इतिहास बने जिसे दुनिया उत्सव और आनंद के रूप में मनाए।

नये वर्ष के स्वागत एवं पुराने वर्ष की विदाई का जश्न पूरे उमंग के साथ दुनियाभर में दिखाई पड़ने लगता है। अतीत की स्मृतियों के साथ्ज्ञ सुखद भविष्य की कल्पना का बीजारोपण होने लगता है दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में। क्या खोया क्या पाया के विचार चिंतन के मध्य हम गतिमान समय की जुदाई शक्ति को कहीं विस्मृत कर देते हैं।

कालचक्र अनवरत चलते रहता है, जो वर्तमान को अतीत में प्रत्येक क्षण परिवर्तित करते रहते है, जितना महत्व हमारे जीवन में भविष्य का है उससे अधिक महत्व अतीत का है। वर्तमान की सीढ़ी पर हम अतीत की बुनियाद से कदम रखते हैं तब कहीं हमें मिलती है भविष्य की मंजिल। दर्शन कहता है बीता हुआकल आज से बेहतर है क्योंकि कल (अतीत) से आज बना है और आज (वर्तमान) से कल (भविष्य) बनेगा।

समय के मायाजाल का उलझाव बहुत जटिल है। बहुतेरे लोगों का जीवन तो इसमें फंस कर रूक जाता है वो ठहर जाते हैं किन्तु जिंदगी तो चलने का नाम है "जो बीत गया सो बीत गया जो होगा अच्छा होगा" का भाव लिये चतुर सुजान इस समय सागर के भंवर से वार हो सकते हैं अन्यथा अतीत की लहरें जीवन में चिंता रूपी विषाणु रोग, शोक और दुःख ही उत्पन्न करते रहेंगे।

नए संकल्प और नए सृजन की परिकल्पना के साथ समय के नए पल में प्रवेश की सुंदर विधा को ही हम सफल जीवन का सूत्र मानते हैं। वही हम वही परिवेश, वही लोग, वही काम और उसी मुकाम पर भी घड़ी की एक दस्तक में सब कुछ नया हो जाता है, क्योंकि तब आज कल और कल आज बन जाता है।

अंवतिकापुरी के महाराज ने चलायमान समय को स्थिर बता कर जीवन को व्यतीत होने वाला माना है, वो कहते हैं - कालौ न यातः वयमेवः याताः। अर्थात् समय नहीं गुजरता, हम गुजरते समय से इस दृष्टि में काल या समय हमारे गुजरने का मान दण्ड है क्योंकि वह तो स्थित है। है न कमाल का विश्लेषण और उनके दर्शन के इसस आइने में तस्वीर भी साफ है तभी तो हम कहते हैं कि जवानी गुजर गई तो वह पूरा शब्द नहीं होता क्योंकि वास्तव में हम जवानी में गुजरे है, जवानी तो दौरे जहाँ में अब भी है।

जो कभी वापस लौट कर नहीं आता वयो समय ही है, हमारा प्रत्येक क्षण, जीवन में पहली और आखिरी बार आता है कभी सहज होकर चिन्तन जरूर करें कि सुबह से शाम जो हम गुजार देते हैं वो हमारी जिन्दगी में पहला और आखिरी होता है क्योंकि आने वाला हर पल नया होता है, हर सुबह नई होती है, हर दिन नया होता है, क्योंकि दिन, महीना, तारीख के साथ समय की सुई बदल जाती है शायद इसलिये सबसे अनमोल होता है समय।

कालान्तर शब्द का अपभ्रंश ही है कैलेण्डर, समय चक्र निरन्तर गतिशील है, समय की सतत धारा में समाहित होने के अतिरिक्त कोई विकल्प नही है हमारे पास। यह सत्य है कि समय की गति को रोका नहीं जा सकता लेकन इसे गणनात्मक सीमाओं में जरूर बांधा जा सकता है। पुरातन काल से ही समय चक्र की इस बलवती धुरी की चिन्ता और शोधपरक चिन्तन में हमारे ऋषि-मुनि और मनीषी लगे रहे, उन्होंने ही इसे अंश, पल, विपल, घटी, याम, दिन-रात, सप्ताह, पक्ष, मास और वर्ष की

परिधि में बांध कर इनके मूल्यों को स्थापित किया। समय की इसी गति से तिथि, चार, नक्षत्र योग एवं करण का सृजन हुआ है। पंचाग और फिर कैलेण्डर के माध्यम से समय को दिन और तारीख में बांध कर इसे हमारे जीवन में रोजमर्रा की जीवनशैली से जोड़ा गया।

कालचक्र के कालान्तर को मापने के लिए संवत्, कैलेण्डर इत्यादि की संरचना विद्वान मनीषियों ने की है। विश्व में सबसे प्राचीन है भारतीय विक्रम संवत्। यह राष्ट्रीय पराक्रम के प्रतीक स्वरूप चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य द्वारा तब स्थापित किया गया था जब उनकी सेनाओं ने 95 शंक राजाओं को पराजित कर संपूर्ण भारत को विदेशी राजाओं की दासता से मुक्त किया था। इस भारतीय कैलेण्डर के प्रवर्तन से पहले राजा विक्रमादित्य ने संपूर्ण पूजा को ऋण मुक्त किया था। विक्रम संवत् दासता से मुक्ति के समय का प्रतीक है।

वर्तमन ग्रेगोरियन कैलेण्डर को पोप ब्रेगरी तेरहवें ने 1582 में प्रवर्तित किया था। पोप की धर्माज्ञा ;च्यस ठनससद्ध 24 फरवरी 1982 को (Inter Gravissimas) के नाम से निकली थी इसे प्रवर्तित करने की मुख्य प्रेरणा ईस्टर के पर्व की तिथि का समायोजन करना था। चर्च ऑफ रोम और चर्च ऑफ अलेक्जेंड्रिया में इस बारे में मतभेद चला आ रहाथा, ऐसा कर ये मतभेद दूर किये गये। जब पहली बार इस कैलेण्डर को प्रकाशित कियागयाथा तो इसके सबसे नीचे पोप द्वारा अधिकृत का उल्लेख था। समय के इस कैलेण्डर में यह भी देखें कि 1582 ई. में ग्रेगेरियन कैलेण्डर आने के 18 साल बाद ईस्ट इंडिया कंपनी की इंग्लैड में गठन होता है, 20 साल बाद डच ईस्ट इंडिया का 46 साल बाद पोर्तुगीज ईस्ट इंडिया कंपनी का और 1664 ई. मं फ्रेंच इंडिया कंपनी का। इन सबके द्वारा दुनिया को गुलाम बनाने की मुहिम शुरू हुई।

समय तो सृष्टि के आदि से जुड़ा है। आज हम इस सन्, संवत के रूप में मानते समझते हैं, किन्तु इससे पहले भी इसे मापने के वैज्ञानिक स्वरूप हमारे ऋषि मुनियों के द्वारा स्थापित रहे हैं। फिल्म देखते हुए घंटों कब बीत जाते हैं और रेल्वे प्लेटफार्म पर मिनटों का इंतजार भारी लगता है। इस समय के रहस्यमय गर्भ में अतीत के अनेकानेक विश्लेषण छिपे है। श्रीमद्भागवत के तृतीय स्कंध के एकादश अध्याय में श्री मैत्रेयजी, विदुरजी को मन्दन्तरादि काल विभाग का रोचक वर्णन करते हैं। मैत्रैयजी कालगणना का विश्लेषण करते हुए कहते हैं

अणुद्वौ परमाणु स्वत्त्रसरेणुस्त्रयः स्मृतः।
जालार्करश्म्यवगतः खमेवानुपतन्नगात्।।

अर्थात दो परमाणु मिल कर एक "अणु" होता है और तीन अणुओं के मिलने से एक त्रिसरेणु होता है, जो झरोखे में से होकर आयी हुई सूर्य की किरणों के प्रकाश में उड़ता देखा जाता है। ऐसे तीन त्रिसरेणुओं को पार करने में सूर्य को जितना समय लगता है उसे " त्रुटि" कहते हैं इससे सौ गुना काल "वेध" कहलाता है और तीन "वेध" का एक लव होता है। तीन लव को एक निमेष और तीन निमेष को एक क्षण कहते हैं। पांच क्षण की एक "काष्ठा" होती है और पांच काष्ठा का एक लघु।

पंद्रह लघु की की नाड़िका (दंड) कही जाती है। दो नाड़िका का एक मुहूर्त होता है और एक दिन के घटने-बढ़ने के अनुसार (दिन एवं रात्रि के दोनों संधियों के दो मुहूतों को छोड़ कर) छ: या सात नाड़िका का एक पहर होता है। यह "याम्" कहलात है जो मनुष्य के दिन या रात का चौथा भाग होता है।

यहां उल्लेखनीय है कि हम जिसे घड़ी के साठ मिनट में एक घंटे के रूप में मापते हैं। उसे इस गणना चक्रानुसार हम ढ़ाई नाडिका या दण्ड बराबर माप सकते है अर्थात् ढ़ाई दण्ड बराबर एक घंटा। श्रीमद्भागवत पुराण। मं एक दण्ड के मापन के लिए हजारों साल पहले एक सुंदर व्यावहारिक प्रक्रिया भी बताई गई है।

छ: पल ताँबे का एक ऐसा बर्तन बनाया जाए जिसमें एक प्रस्थ जल आ सके और चार मासे सोने की चार अंगुल सलाई बनवा कर उसके द्वारा उस बर्तन के पेंदे (नीचे) में छेद करके (ध्यान रहे सलाई सेने की हो लोहे की नही) उसे जल में छोड़ दिया जाए। जितने समय में एक नाडिका (दंड) कहते है।

ऋषि मैत्रय विदुरजी को कालगणना की मीमांसा करते हुए कहते हैं -

चार-चार पहर के मनुष्य के दिन और रात होते है और पंद्रह दिन रात का एक पक्ष होता है जो शुक्ल और कृष्ण भेद से दो प्रकार का माना गया है। अब काल गणना में पृथ्वी से ऊपर अंतरिक्ष में स्थित लोको के समयान्तर को बहुत सरल शब्दों में भागवत में समझाया गया है थोड़ा विशेष ध्यान दें -

तयोः समुच्चयो मासः पितृणां तदहर्निशम्।
द्वौ तावृतः षडयनं दक्षिणं चोत्तरं दिवि।।

इन दोनों पक्षों को मिला कर एक मास होता है जो पितरों का दिन रात है। दो मास की ऋतु और छः मास का एक "अयन" होता है। "अयन" दक्षिणायन" और उत्तरायण भेद से दो प्रकार का है। इस आशय से पितृपक्ष का आगमन अर्थात् पितृलोक में महज बारह दिन का समय बितना ही हुआ जबकि मानवी गणना का वर्ष (बारह महीने) बीत गया है। देवलोक की काल गणना भी कालान्तर विभाजन में बहुत सरल ढंग से अभिव्यक्त की गई है

अयने चाहनी प्राहुर्यत्सरो द्वादश स्मृतः।
संवत्सरशतं नृणां परमायुर्नि रूपितम्।।

ये दोनो अयन (अर्थात बारह महीने) मिल कर देवताओं के एक दिन-रात होते हैं तथा मनुष्य लोक में ये वर्ष या बारह मास कहे जाते है। ऐसे सौ वर्ष की मनुष्य की परम आयु बताई गई है मैत्रेयजी और विदुरजी का यह संवाद श्रीमद्भागवत पुराण में काल गणना के गूढ़ रहस्य की सरल मीमांसा है।

हमारे जीवन में भौतिम ससाधनों का मूल्य है, बदलते परिवेश में जीवन का भी मूल्य आंकने लगे हैं लोग समय अमूल्य है क्योंकि जीवन को ये केवल सौ वर्षों तक ही मापने का कार्य करता है। तो आइए हम सब अमूल्य समय में सृजनशील जीवन की कहानी लिखें। श्री चैतन्य कहते हैं -

है मोल जग में सबका, न मोल है समय का।
कल हम यहाँ न होंगे, करना जो चाहे कर लें।।

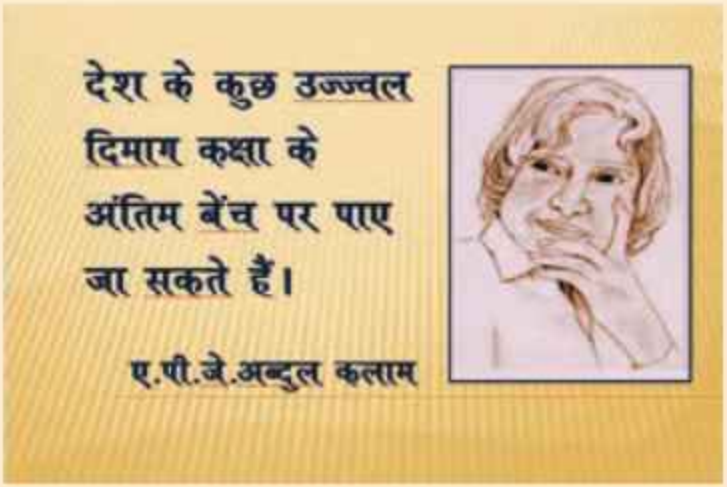

बच्चों के मानसिक विकास में पोषक तत्वों की महत्ता

डॉ. सविता खरे
प्राध्यापक, आहार एवम् पोषण विभाग

बच्चे ही देश के भविष्य का निर्माता है। जिसका सम्पूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास होना उसका पूर्ण अधिकार है। बच्चे के अधिकारों की पूर्ति तब तक नही की जा सकती जब तक परिवार के सदस्यों खासतौर पर माँ को पोषक तत्वों का पूर्ण ज्ञान न हो अन्यथा बच्चों के साथ ही साथ परिवार का विकास भी अवरुद्ध हो जायेगा, और वह परिवार प्रगतिशील भारत का हिस्सेदार बनने से वंचित रह जायेगा।

बच्चे के सामाजिक विकास में वैसे तो सभी पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, वसा, कार्बोज, खनिज लवण, विटामिन व पानी की समुचित व संतुलित मात्रा आवश्यक होती है परन्तु खासतौर से मानसिक विकास के लिये आयोडीन व आयरन की पर्याप्त मात्रा आवश्यक होती है आयोडीन की प्राप्ति के लिये समुद्री भोज्य पदार्थों के साथ-साथ आयोडीन नमक आवश्यक होता है। आयोडीन की कमी से बच्चे का मानसिक विकास अवरूद्ध हो जाता है। याददाश्त कमजोर से जाती हैए चेहरा ईडियोटिक दिखलाई देता है। इसी प्रकार विभिन्न शोधों के दौरान देखा गया है कि आयरन की कमी होने से बच्चे की याददाश्त कमजोर हो जाती है।

सेन फ्रांसिस्कों रायटर के अनुसार गर्भावस्था के दौरान डायबिटीज की शिकायत शिशु को शुरूआती याददाश्त को कमजोर कर सकती है। अमेरिकी शोधार्थियों के मुताबिक गर्भावस्था के दौरान डायबिटीज से शरीर में आयरन व आक्सीजन की कमी हो जाती है। यह कमी भ्रूण की मेमोरी के विकास को प्रभावित करती है। गर्भवती महिला अगर डायबिटीज से पीड़ित हैए तो इससे उसका ग्लूकोज स्तर घटेगा, बढ़ेगा, जो शरीर में आयरन को कम कर देता है। इससे रक्त की आक्सीजन ले जाने की क्षमता घट जाती है, वैसे भी गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को आयरन की खुराक बढ़ाने की सलाह दी जाती है ताकि बच्चों को पर्याप्त मात्रा में आयरन मिल सके।

कई छात्र अपनी ऊर्जा को बरकरार रखने के लिये कॉफी व कोल्ड ड्रिंक्स सेवन करने पर आश्रित हो जाते है, जबकि कई छात्र कैफीन से सम्बंधित दवाईयाँ तथा अन्य स्मरण शक्तिवर्धक दवाईयों का सेवन करने लगते हैं। इस तरह परीक्षा के तनावपूर्ण समय में पौष्टिक आहार को नकारने से उनकी याद करने की मात्रा और व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह देखा गया है कि ऊर्जा व एकाग्रता के स्तर को बनाये रखने में कैफीन का थोड़ी ही देर के लिये लाभ होता है परंतु जरूरत से ज्यादा कैफीन का सेवन करने से चिड़चिडापन बढ़ जाता है तथा एकाग्रता स्तर में भी कमी आ जाती है। भोजन, पौष्टिकता, पौष्टिक तत्वों की कमी व मनुष्य की दिमागी अवस्था के बीच एक गहरा संबंध है। तनाव मानव शरीर के बायोकेमिकल संतुलन को बिगाड़ता है अतः तनाव व चिंता, शरीर में प्रोटीन, विटामिन ए, सी व के के स्तर को घटाते है। इसी प्रकार कुछ शोधों के द्वारा देखा गया है कि गर्भवती महिलाओं की आयु 35 वर्ष से अधिक व 18 वर्ष से कम होने पर बच्चों में मानसिक विकृति होने की सम्भावनायें बढ़ जाती है।

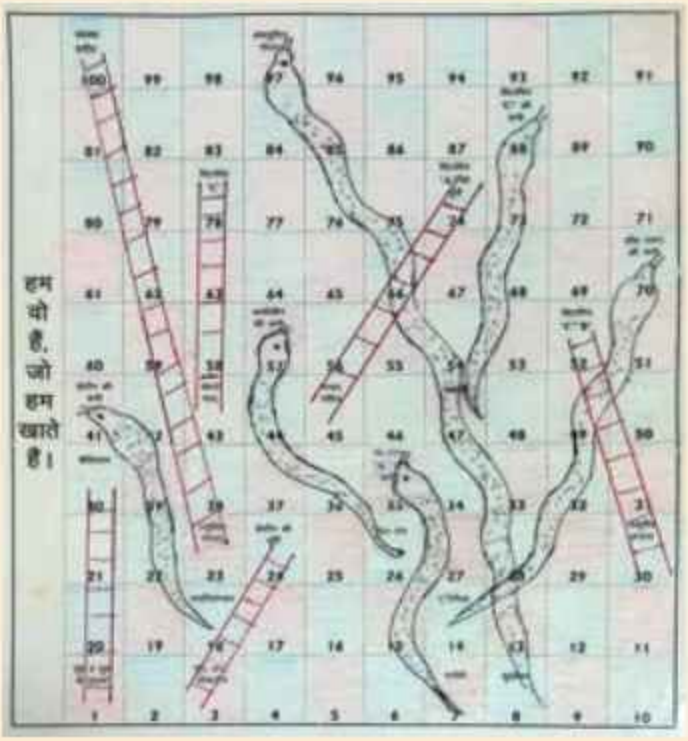

अतः स्वस्थ शिशु के जन्म व समुचित शारीरिक व मानसिक विकास के लिये बच्चों को पर्याप्त व सतुलित मात्रा में पोषक तत्व प्रदान किया जाये। इसको संक्षिप्त रूप से सांप सीढ़ी के माध्यम से दर्शाया गया है।

मध्य प्रदेश की लोकनाट्य कला

डॉ. अर्पणा बादल
सहायक प्राध्यापक, हिंदी

लोक में अपना मनोरंजन करने की अपनी मौलिक परंपराएं होती हैं उनमें से एक 'लोकनाट्य' कला है। लोकनाट्य विधा लोक जीवन शैली का अभिन्न अंग है। लोक इसके माध्यम से अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करता है। पारंपरिक संगीत, नृत्य, अभिनय और कथानक से मिलकर लोकनाट्य की संरचना होती है। लोकनाट्य लोक जीवन का संपूर्ण प्रतिबिंब होता है। यह लोक समाज की अभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन है। लोक विश्वास, धार्मिक रूढ़ियां, परंपराएं, वीर पूजा, मनोरंजन उत्सव तथा मांगलिक पर्व आदि अवसरों पर लोकनाट्य के माध्यम से लोक जीवन के मनोभावों की सहज अभिव्यक्ति होती है। डॉक्टर नगेंद्र के अनुसार "जीवन की सामूहिक आवश्यकताओं एवं प्रेरणाओं के बीच इसका जन्म हुआ होगा। " संस्कृत के अनेक उपरूपक तथा रूपकों में डिम, प्रहसन, रासक, रास, लास्य, लास्य नाटक, बीथी आदि लोक नाटकों के ही परिष्कृत रूप हैं। लोकनाट्य की जन्म तिथि बताना इत्यादि संभव नहीं तो कठिन अवश्य है। अनुमान के आधार पर इतना ही कहा जा सकता है कि भारत में लोकनाट्य की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। आदिमानव की अभिनय मूलक प्रवृत्ति लोकनाट्य के जन्म का सेतु है। ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर अभिनयात्मक संवाद मौजूद हैं जो लोक नाट्य के आदिम स्वरूप माने जाते हैं। महाभारत में भी नाटक आयोजनों का उल्लेख है। अज्ञातवास के दिनों में अर्जुन ने वृहन्नला के छद्म नाम से उत्तरा को वाद्य, संगीत और नृत्य सिखाए थे। प्रद्युम्न के विवाह उत्सव पर 'गंगावरण' नाटक का अभिनय किया था। मार्कंडेय पुराण में नाटक अभिनय से संबंधित श्लोक उपलब्ध है- "कदाचित् काव्यसंलाप गीतानाटक सम्भवैः"।

इन प्रमाणों से उजागर होता है की रामायण महाभारत काल से पूर्व से ही नाट्य कला लोक समाज और राज समाज में समान रूप से विद्यमान थी। मध्य प्रदेश के विभिन्न अंचलों की लोकनाट्य कला की अपनी एक समृद्ध परंपरा रही है। मध्य प्रदेश के प्रमुख लोक नाट्य इस प्रकार हैं-

बुंदेलखंड के लोकनाट्य

रहस- बुंदेलखंड में रासलीला को 'रहस' नाम से पुकारा जाता है। बुंदेली 'रहस' ब्रज और बुंदेली संस्कृति से मिलकर बना है। 'रहस' में ब्रज बोली और गीत में संवाद होते हैं केवल बुंदेली स्वर या टोन का प्रभाव छाया रहता है। यहां रास के दो रूप प्रचलित हैं एक कतकारियों की रासलीला और दूसरा लीला नाट्य। कतकारियों का रास यहां व्रत परंपरा का अंग है। यहाँ कार्तिक मास में स्नान करने वाली कतकारियाँ गोपी भाव से दही लीला, माखन चोरी, गेंद लीला, दान लीला आदि प्रसंगों को अभिनीत करती हैं। मंदिर के प्रांगण, नदी तट, सरोवर के किनारे पर कतकारी महिलाएं वस्त्रों में थोड़ा परिवर्तन के साथ स्त्री एवं पुरुष पात्रों का अभिनय करती हैं। पात्रों को छोड़कर शेष कतकारी महिलाएं दर्शक होती हैं। कार्तिक मास पर लगने वाले मेलों आदि में मंडलियों द्वारा भी 'रहस' का मंचन किया जाता है। जो मंदिर के प्रांगण में अभिनीत किए जाते हैं। मंडलियाँ भ्रमण कर-कर के कभी - कभी टिकट से भी लीला करती हैं।

स्वांग-

लोक जीवन में ऐसे प्रदर्शन जो बिना मंच के होते हैं स्वांग होते हैं। बुंदेलखंड में स्वांग को नकल उतारना कहते हैं। स्वांग भारतीय लोक की अति प्राचीन परंपरा है। डॉक्टर नर्मदा प्रसाद गुप्त ने लिखा है, "बुंदेली स्वांग के ही रूप का प्रतिनिधित्व करता है। क्योंकि न तो यह केवल नकल है और न लंबा नाटक। यह संगीत नौटंकी और भगत से भिन्न है। बुंदेली स्वांग का स्वरूप अन्य लोक नाट्यों की तरह लोकधर्मी है। "पारंपरिक लोक नाट्य परंपरा स्वांग का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। यह बुंदेलखंड में विभिन्न अवसरों पर स्वांग खेला जाता है। विवाह के अवसर पर बारात के चले जाने के बाद घर की महिलाओं द्वारा 'बाबा बाई'खेले जाते हैं। जो स्वांग कहा जाता है। मांगलिक अवसरों पर धोबी, कुम्हार आदि जातियों द्वारा जो नृत्य किया जाता है वह स्वांग का एक रूप है। बुंदेलखंड का प्रसिद्ध स्वांग 'राई' के मध्य होने वाले अभिनए स्वांग होते हैं। 'राई' नृत्य जो श्रृंगारिक गीतों के माध्यम से होता है। इसके विश्राम के क्षणों में बीच-बीच में हास्य एवं व्यंग प्रधान स्वांग खेले जाते हैं। स्वांग के पात्र भी राई गायकों और नर्तकों के बीच के होते हैं। स्वांग में अधिक से अधिक तीन या चार पात्र होते हैं। महिला पात्र की भूमिका पुरुष ही निभाते हैं। पात्रों की वेशभूषा ठेठ बुंदेली होती है। बुंदेलखंड में प्रसिद्ध लोक नाट्य में स्वांग सर्वाधिक प्रचलित एवं जनप्रिय रूप है जो प्रायः उसी के अवसरों पर राई नृत्य के बीच में प्रदर्शित होता है। बुंदेली स्वांग की प्रमुख प्रवृत्ति की कथा

मूलक न होकर व्यंगात्मक है। सामाजिक कुरीतियां, आडम्बरों, विषमताओं आदि पर जितनी तीखी चोट बुंदेली स्वांग करते हैं उतनी अन्य बोलियों के स्वांग नहीं। भँड़ेती - बुंदेलखंड में भाँडों के लोकनाट्य को 'भँड़ेती' या कहीं कहीं नकल कहते हैं। भाँड अपनी शिष्टता, वाकपटुता, हाजिर जबावी और चुटीले हास्य के द्वारा मनोरंजन करते हैं। कथा केवल विवरण एवं संवादों के माध्यम से चलती है। उसके पात्र भाँड श्रृंगार नहीं करते हैं। भँड़ेती का मंच खुला मैदान, चबूतरा या उँची सतह होती है। उसके लिए किसी सज्जा सामग्री की आवश्यकता नहीं होती। हास्य विनोद के भीतर चुटीला व्यंग्य छिपा रहता है। परंतु अभी इसका प्रचलन समाप्त सा हो गया है।

नौटंकी-

नौटंकी अपने नाम के अनुसार ही व्यंग्य और हास्य से भरा नाटक है। बुंदेलखंड में मेलों में नौटंकी की मंडली आकर एक-एक सप्ताह तक नौटंकी का प्रदर्शन करती हैं। नौटंकी में एक जमाने में महिला पात्रों की भूमिका पुरुष पात्र निभाया करते थे लेकिन अब महिला पात्रों की भूमिका महिलाएं ही निभाती हैं। इस क्षेत्र में नौटंकी के आयोजन की लोकप्रिय कथा लोक काव्य आल्हा है। साथ ही ख्याली गायकी पर आधारित नौटंकी भी खेली जाती है। प्राचीन कथाओं और शौर्य कथाओं को लेकर संगीत की धुन पर भी नौटंकी का आयोजन किया जाता है।

मालवा का लोक नाट्य

माच- 'माच' मालवा का पारंपरिक लोकनाट्य है। यह मध्य प्रदेश का शीर्ष प्रतिनिधि लोकनाट्य है। उज्जैन, इंदौर, धार, रतलाम, मंदसौर, शाजापुर, देवास जिले की मुख्य पारंपरिक केंद्र हैं। माच शब्द संस्कृत के मंच से बना है। इसमें मंच के लिए बहुत मामूली सामग्री की जरूरत होती है। अधिकतर खुले में इसका आयोजन किया जाता है। इसके कथानक धार्मिक एवं पौराणिक होते हैं परंतु श्रृंगार मूलक प्रवृत्ति के कारण प्रेमाख्यानों पर आधारित खेल जनता में अधिक लोकप्रिय हुए हैं। माच एक संगीतमय नाट्य विधा एवं प्रयोग धर्मी जनमंच है। रंगकर्म की दृष्टि से संपूर्ण लोकनाट्य कहा जा सकता है। माच में लोक नाट्य के सभी लोक तत्व मौजूद हैं।

तुर्रा कलंगी- इसमें तुर्रा और कलंगी दो दल होते हैं जो संगीतात्मक प्रश्नोत्तर के जरिए लोकनाट्य की प्रस्तुति देते हैं। कथा की विषय वस्तु धार्मिक होती है। अतीत की गाथाओं के अनुसार इस लोकनाट्य शैली का उद्गम तीन सौ साल पहले उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर के तुखन गिरी गुसाई और मुरादाबाद के शाहअली फकीर के द्वारा दुर्राऔर कलंगी आवाजों के जरिए हुआ था। बाद में यह लोक नाटक महाराष्ट्र होते हुए मालवा पहुंचा और इसमें महाराष्ट्र के लोकनाट्य लावली शैली भी मिल गई। आजकल तुर्रा कलंगी लोकनाट्य करने वाले दलों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। नकल- अपने नाम के अनुरूप ही इस लोकनाट्य में समकालीन लोकप्रिय व्यक्तियों और प्रसंगों की नकल उतार कर व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुति की जाती है। कभी-कभी सेठ - सेठानी तो कभी धोबी -धोबिन का पात्र रखकर भी यह लोकनाट्य खेला जाता है।

बघेली लोक नाट्य मनसुखा -

बघेलखंड का एक प्रमुख लोक प्रहसन है। यह 'रास' का बघेली रूपांतरण है। यह लोकनाट्य 'मनसुखा' अर्थात् विदूषक और गोपियों के बीच हास परिहास के साथ खेला जाता है।

छाहुर-यह बघेलखंड के कृषक जातियों का लोकनाट्य है। इसमें पुरुष स्त्री की भूमिका निभाते हैं। गांव के चौराहे या चौपाल पर यह नाट्य किया जाता है। यह मौखिक शैली का लोकनाट्य है।

हिंगोला - इसे दो दलों के बीच गीतों, हास्य कटाक्ष एवं नोकझोंक के माध्यम से खेला जाता है। यह मंच रहित सीधा और सरल नाट्य रूप है। गीत एवं अभिनय के समय नट-नट ही नहीं दर्शक भी भाग लेते हैं। फलतः भावों का सहचरीकरण होता है। सभी त्योहारों एवं उत्सवों पर हिंगोला किया जाता है।

जिंदबा-यह लोकनाट्य बघेलखंड की महिलाओं द्वारा वैवाहिक अवसरों पर हास परिहास, अभिनय एवं गायन के साथ खेला जाता है। पुरुषों को इस नाट्य को देखने की इजाजत नहीं होती। अगर वह बीच में आते हैं तो उन पर झाड़ू और मूसलों की मार पड़ती है। यह एक वैवाहिक अनुष्ठान है।

रामलीला-बघेलखंड में राम की कथा को लेकर उनकी लीला का मंचन किया जाता है। यहां इसकी अनेक पारंपरिक मंडलिया है।

रासलीला- कृष्ण एवं गोपियों के नाना प्रसंगों को लेकर बघेलखंड में रासलीला की जाती है। बघेलखंड में बिसाती, लीला, गेंदलीला, वैद्यलीला और नर्तकिन जैसे लोकनाट्य प्रचलित रहे हैं। नरसी मेहता का बघेली लोकनाट्य रूप गांव में कहीं-कहीं अभी भी देखने को मिलता है। यहां महंत श्री राम भूषण खजुरीताल की रामलीला देश की सबसे बड़ी रामलीला मंडली है और पूरे बघेलखंड में 80 के लगभग रामलीला मंडलियाँ अभी भी सक्रिय हैं।

निमाड़ी लोकनाट्य

गम्मत- गम्मत निमाड़ का पारंपरिक लोकनाट्य है। निमाड़ में यह अत्यधिक प्रसिद्ध है। गम्मत मुख्यत: तीज त्योहार, नवरात्रि, होली एवं गणगौर पर की जाती है। यह लोकनाथ गांव के लोग आपस में मिल बैठकर रचते हैं। इसके लिए 8 से 10 लोगों की ही जरूरत पड़ती है।

स्वांग- निमाड़ी में स्वांग दो रूपों में मिलता है- स्वरूप स्वांग और हास्य स्वांग। स्वांग और गम्मत में बहुत ज्यादा फर्क नहीं होता स्वांग के अभिनय की अवधि कम होती है जबकि गम्मत में मंचन की पर्याप्त अवधि होती है।

काठी- यह निमाड़ी का एक लोकप्रिय लोकनाट्य है। काठी आयोजन करने वाले लोक कलाकार एक मंडली के रूप में होते हैं जिन्हें भक्त कहते हैं और नाटक के दौरान भगत आपस में सवाल जवाब करते हैं। इस दौरान में दर्शकों से भी सवाल संवाद बनाए रखते हैं। निमाड़ में प्रमुख रूप से राजा हरिश्चंद्र भिलनीवाल, सूर्यालो महाजन और गोंडेलाल की कथा पर आधारित लोकनाट्य प्रमुख रूप से खेले जाते हैं।

रास मंडल- रास मंडल का आयोजन निमाड़ में जन्माष्टमी के दौरान किया जाता है। इस दौरान मंच पर भगवान कृष्ण के बाल स्वरूप बालमुकुंद की प्रतिमा स्थापित की जाती है। रासमंडल में स्त्री पात्र की भूमिका का निर्वाह पुरुष ही करते हैं मंचन की शुरुआत में स्त्री पात्र के साथ पुरुष पात्र प्रहसनात्मक व मनोरंजन संवाद करते हैं। इसके बाद रासमंडल का मुख्य भाग प्रारंभ होता है।

पाती स्वांग-निमाड़ में गणगौर के अवसर पर महिलाओं के द्वारा यह स्वांग खेला जाता है। इस लोकनाट्य में माता की मूठ रखने के दिन से नौ दिन तक गांव की लड़कियां सिर पर कलश रखकर गीत गाते, ढोल और ताली बजाते हुए गांव की गलियों से गुजरती हैं। इस लोकनाट्य में लड़कियां दूल्हे दुल्हन का भेस धर लाड़ा- लाड़ी का खेल खेलती हैं।

पनवाड़ी स्वांग - महिलाओं के द्वारा विवाह के अवसर पर किया जाने वाला स्वांग है। शादी के दूसरे दिन वर और वधू पक्ष की महिलाएं किसी जलाशय पर जाकर आपस में पति-पत्नी का जोड़ा बनाकर स्वांग रचती हैं और गाली गीत गाती हैं।

खमरास- खमरास को रासलीला भी कहा जाता है। इसमें भगवान कृष्ण के चरित्र पर आधारित उनकी लीलाओं का मंचन किया जाता है। यह लोकनाट्य जन्माष्टमी के अवसर पर किया जाता है और इसके लिए किसी खुले स्थान पर विधि विधान एवं पूजा-अर्चना के साथ खंबा गड़ा जाता है। इस लोकनाथ में पुरुष ही महिला पात्रों की भूमिका का निर्वाह करते हैं।

ठोठ्या- यह महिला प्रधान लोकनाट्य है। जब घर से बारात विवाह के लिए वधू पक्ष के घर जाती है, तब उस रात को वर पक्ष की महिलाएं मंडप के नीचे हंसी ठिठोली कर लोकनाट्य खेलती हैं।

कुछ प्रमुख आदिवासी लोकनाट्य

लकड़बग्घा- यह आदिवासी युवक-युवतियों का लोकनाट्य है जो विवाह के अवसर पर खेला जाता है। इसमें लड़की को लकड़बग्घा उठा ले जाता है। लड़की क्रंदन करती है और बाद में वह इन पशुओं को ही प्रेम करने लगती है।युवक जब लकड़बग्घा को तीर से घायल करता है तो वह उनकी सेवा करती है इसे वन्य जीव एवं मनुष्य के प्रेम को बड़ी ही मार्मिकता के साथ अभिनीत किया जाता है।

खम्ब स्वांग - यह 'कोरकू' आदिवासियों का संगीत अभिनय और मंचीय दृष्टि से संपूर्ण नाट्य है। प्रत्येक कोरकू गांव में एक 'मेघनाथ खम्ब' होता है जिसमें कुंवार की नवरात्रि से देव प्रबोधिनी एकादशी तक इस खंभ के आसपास रात के समय इस खेल को खेला जाता है।

मध्य प्रदेश में उपरोक्त लोकनाट्य के अलावा कई और भी लोकनाट्यों का आयोजन होता है जिनमें अपनी-अपनी भाषा बोली क्षेत्रीयता और संस्कृति का प्रभाव होता है।

नृत्य विभाग

डॉ. रिचा पाठक
समन्वयक

Importance of Algebra in Real Life

Akanchha Singh
Guest Faculty (Mathematics)

Algebra is a branch of mathematics that deals with symbols and following rules that helped in manoeuvring those symbols. In elementary algebra, these symbols represent quantities without a fixed value more commonly known as variables.

Simply putting it, algebra is all about finding the undefined variables into equations and finally solving them, in this branch that substitutes letters for numbers, and it is an algebraic equation that represents a scale on both ends on what is done. Algebra constitutes complex numbers, real numbers, matrices, vectors, and various other forms of mathematical representations.

Algebra sounds like rocket science to many students, but this one branch in Math holds a very pivotal role in our lives. The importance of Algebra in real life is play vital role too. However, before that, let us shed some light on what exactly Algebra is all about.

Mathematics, the least popular subject of the school. A subject by the name of which a student gets jitters and the topic algebra too. Every one of us at some point in time beseeched God to make the Maths paper as simple as he could.

The reason why Maths has always been a spine-tingling subject of our curriculum is its constant learning of formulas that made us indulge in a mental challenge all the time.

One such part of Maths that gave every student night terrors is ALGEBRA. Every student who enters into a high school or elementary school gets introduced to this chapter in Maths.

Algebra is an integral part of every student's maths curriculum in high school. A chapter which was sufficient enough to give those exam jitters to us and everyone like us in the school. However, if it is not a part of our curriculum, many students might not get the heights in their careers they always aspired.

SPECIAL NEEDS EDUCATION AND FUNDING PROVISIONS

Dr. Mona Khare [NOGA]
Director, UGC-Malaviya Mission Teacher Training Centre,
Professor & Head, Department Educational Finance, National Institute of Educational Planning and Administration, New Delhi, India 110016, mona.khare14@gmail.com, monakhare@niepa.ac.in

Inclusion is key to achieving sustainable development as enshrined in the SDG 2030. Needless to say that the differently abled are the most disadvantaged group when it comes to their access and participation in education and employment. The report of the European Agency on Provision for Pupils with Special Educational Needs(Meijer, 1998) specifically mentioned that 'financing of special needs education is one of the most important factors in realising inclusive education'. The report further states although a centralised funding model where Government owns the major responsibility is reasonably justified, the role of sub-regional bodies (municipalities, districts, schools and institutions) in ensuring efficiency and accountability in utilising the funds allocated by central agency. The UN General Assembly in its Cost Equity Report clearly warns that the decline in global education funding have a disproportionate impact on children with special needs. The report calls for the international aid community to earmark aid for disability-inclusive approaches in education highlighting the fact that not only are these children least likely to be in schools but also low on learning outcomes. Increasingly, it is being emphasised at the global level as to how engagement of other external stakeholders (be it the industry, the civil society, the community at large) be strengthened in mobilising additional resources for special needs education.

Challenges: The challenges in India to promote inclusion of the 'divyang' and generate matching funds for the cause are even more acute for variety of reasons. As evidenced in various studies, these include demographic and geographical factors, historical and religious factors, gender and occupational factors but more importantly societal views on differently abled people, their acceptance in society, public awareness and hence the resulting approaches in making provisions for their inclusion in the true sense. The above challenges are further intensified by the following:

Large and diverse proportion of Children with special needs: India has a huge population of Children with Special Needs (CWSN). As per records of 78.64 lakh children with disability in India, three-fourths of those aged five years are not enrolled in any educational institution (UNESCO 2019), 27% have never attended any educational institution. Even those who get to enter rarely progress beyond primary level such that their share in higher education enrolments is a mere 0.2%. Among various types of disabilities, while some forms like sight, speech, hearing and moving have received some attention those with higher order impairments, mental disorders, multiple disorders are more vulnerable. Currently 17 lakh such children in the age group of 6–13 are out of school of which highest is the percentage of those with intellectual disabilities (36%), speech impairments (35%) and multiple disabilities (44%). The CWSNs

belonging to SC/ST/OBC, economically weaker sections, ethnic groups and minorities are doubly disadvantaged and lack special provisions.

Dwindling and sticky Public Expenditure on Education in India : Not only is India's public expenditure on education lower than international standards but has remained much lower than its own target of spending minimum of 6% of GDP on education. It continues to hover around 3.65 % from a long period. This further limits the capacity of the Government to increase provisions for Children with special needs. In addition, the percentage of approved outlay for interventions specific to children with disabilities (CWDs) in comparison to the total approved outlay varies significantly across the States with huge underutilisation of funds.

Limited Policy Provisions and budgetary allocations: Although government's commitment to education for CWDs through several laws and policies prescriptions have existed for long starting with the very first education commission in 1964 i.e. The Kothari Commission, the gap between policy pronouncements and budgetary allocations has remained high. The Rights of Children to Free and Compulsory Education Act, 2009 (RTE) enforces all the schools to implement the policy of inclusive education of children with special needs (CWSN) throughout the nation. The same was further reaffirmed by The Rights of Persons with Disabilities (RPWD) Act, 2016 that "every child with benchmark disability between the age of 6 to 18 years shall have the right to free education in a neighbourhood school, or in a special school, of his choice, (Section 31[I]). But, the allocations for the scheme for implementation of the (Rights of) Persons with Disabilities Act have been severely reduced by INR 90 crore this year. The Ministry of Social Justice and Empowerment's (MSJE); Department of Empowerment and Welfare of Persons with Disabilities (DEPwD) the core central bodies responsible for welfare schemes of the disabled received a mere 0.027 percent of the overall budget. In a review report it has been specifically stated that if the funding requirements of just one scheme (Inclusive Education for Disabled at Secondary Stage) were to be met as per mandated norms, it would be equal to almost half of the total planned expenditure of the Central Government on secondary education in India.

Government Initiatives: Nevertheless, as a result of several initiatives of the government the enrolment of CWDs has increased over the years both at in school and higher education. Major items of financial provisions include scholarships, opening of special schools, grants in aid to non-governmental organisations (NGOs) for the running of special schools, vocational training etc. Various initiatives to make provisions for funding special education in recent years may be categorized under following heads:

1. 100% centrally sponsored schemes like the Samagra shiksha abhiyan, Inclusive Education for Disabled at Secondary Stage (IEDSS) programme that earmark funding on per child per annum basis.
2. Teacher development and assistance: Financial Assistance to Visually Challenged Teachers, The Teacher Preparation in Special Education (TEPSE).
3. Scholarships, stipends and fellowships for school as well as higher education.
4. Promote use of Assistive Technology: such as screen readers and braille displays etc.

5. Skill building under Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana

Although these initiatives deserve appreciation and have shown positive impact but fall much short of the requirements. With the budgetary situation being tight and limited there is much need and scope of mobilizing additional resources from various external stakeholders.

Scope for stakeholder engagement : It is common knowledge that Divyang/special children often face significant barriers to accessing, participating and completing quality education. In addition to their special infrastructural needs, trained teachers to support their unique learning needs, appropriate curricula, special teaching methods and aids, counselling and medical facilities all entail additional financial implications. The newly announced National education Policy 2020 calls for creation of 'inclusion fund' for the first time. This broadens the scope for other stakeholders like industry, civil society organisations, trusts, philanthropists, international organisations etc. to support government initiatives by creating various types of funds as per their interests and organisational aims. Few such suggestive funds may be:

- **Special inclusion Funds :** for various groups among divyang that require special attention like transgender, socio-culturally disadvantages, poor and street children, doubly disadvantaged and those that require incentives to nurture their innate talents.
- Diversity Support System Development Funds: brail, ramps, wheelchairs, limbs etc.
- Skills Training and Career development support Funds
- Learning material, library and special Technology Integration Funds
- Special Sports development funds
- Art & Culture development funds
- Health care and medical /counselling services funds
- Special Teacher training and assistive teaching funds
- Social engagement and Awareness generation Funds.

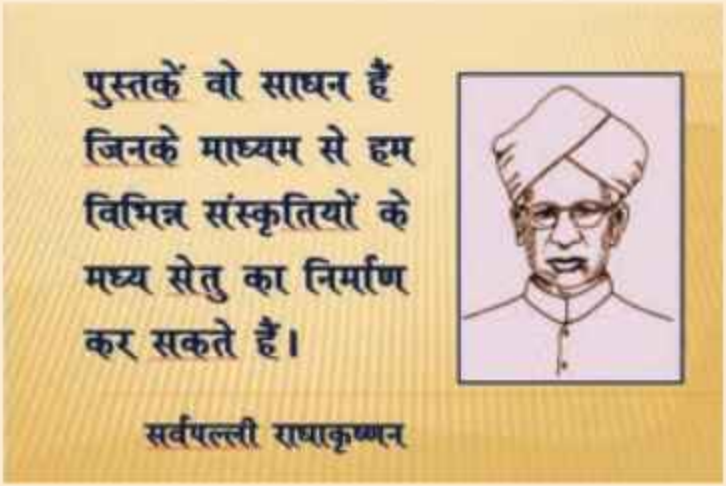

भारत में चुनाव व्यवस्था : महत्वपूर्ण मुद्दे

अंजू सिंह
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
शिक्षक, नवोदय विद्यालय, कुशीनगर

भारत में भरतवंश के राजसत्ता पर बैठने वाले व्यक्ति का चुनाव ज्येष्ठता के आधार पर ना होकर श्रेष्ठता के आधार पर होता था लेकिन भीष्म पितामाह अपने पिता राजा शांतनु की सत्यवती के साथ विवाह की इच्छा पूर्ति हेतु आजीवन विवाह न करने की प्रतिज्ञा ली तथा सत्यवती के पिता को वचन दिया की वह राजगद्दी पर कभी नहीं बैठेगें और सत्यवती का ज्येष्ठ पुत्र ही हस्तिनापुर के सिंहासन का वारिस होगा। इस गलती का परिणाम तो सब जानते हैं कि एक प्रतिज्ञा तथा अयोग्य चुनाव के कारण कुरुवंश का नाश हो गया। चुनाव किसी देश की राजनीति की आधार शिला हैं। चुनावों में लोग अपने सर्वोच्च राजनीति भक्ति वोट का प्रयोग कर सत्ता में परिवर्तन कर सकता है अर्थात् चुनाव किसी देश में सत्ता परिवर्तन का एक माध्यम हैं। यह लोगों तथा राजनीतिक दलों को उनके कर्तव्यों तथा जिम्मेदारियों को समय-समय पर अवगत कराता रहता है।

1. देश की जनता में चुनाव के प्रति जागरूकता बढाने के लिए प्रतिवर्ष भारत सरकार 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदान दिवस मनाता हैं।

2. पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के द्वारा बनाया गया आयोग भी इस दिशा में काम कर रहा हैं।

चुनाव व्यवस्था अचानक अस्तित्व में नहीं आया इसके पीछे बड़ा इतिहास है। चुनाव का सर्वप्रथम साक्ष्य ऋग्वेद से मिलता है। ऋग्वेद में सभा तथा समिति का उल्लेख मिलता है। प्रायः राजा का चुनाव इसी समिति द्वारा होता था तथा अयोग्य राजा को गद्दी से हटाने का भी अधिकार समिति के पास था। 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व अस्तित्व में आए कई महाजनपदों में जैसे चेंदि और कुरू में भी हमें गणतांत्रिक व्यवस्था देखने को मिलती है। महावीर तथा गौतम बुद्ध इन्ही गणों से संबंधित थे। हालाकि वर्तमान समय जैसी चुनाव व्यवस्था के अस्तित्व आने में कई शताब्दी लगे। सर्वप्रथम ब्रिटेन में रक्तहीन क्रांति 1688 ईस्वी के बाद वहां राजतंत्रिय शासन व्यवस्था को संसदीय शासक हेतु चुनाव की प्रकिया काफी तेजी से फैली तथा लोकतंत्र की अवधारणा सामने आई। "चुनाव के बिना लोकतंत्र की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है एक तरह से लोकतंत्र और चुनाव को एक-दूसरे का पूरक माना जा सकता है।"

आज हम विश्व की सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश हैं जहां हमें लगभग 200 वर्षो के बाद 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश हुकूमत की दासता से आजादी मिली। तब किसने कल्पना की होगी की हम दुनिया की सबसे बड़ी चुनाव प्रक्रिया वाला देश बन जाएंगे। भारत ने आजाद होने के तुरंत बाद ही सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (अनुछेद, 326) की व्यवस्था को अपनाया। एक व्यक्ति, एक मत्। अन्य देशो की तुलना की जाए हम पाते हैं वहां विभिन्न वर्गों द्वारा मतदान के अधिकार हेतु संघर्ष करना पड़ा। जहाँ भारत ने आजाद होने के तुरंत बाद महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया वहीं अमेरिका में आजादी के करीब डेढ़ सौ वर्ष बाद 1919 में मिला। 2015 में सऊदी अरब में यह महिलाओं को अधिकार मिला। इस प्रकार नवस्वतंत्र भारत चुनावी प्रकिया तथा सार्वभौम्य मताधिकार जैसे प्रक्रिया को अपनाकर विश्व का उदाहरण बन गया। वर्तमान समय में चुनाव को भारत में त्योहार के रूप में देखा जाता हैं। हालाकि लोगों में इसके प्रति जागरूकता में कमी देखने को मिलती हैं। 2019 में हुए लोक सभा चुनाव में मात्र 57 प्रतिशत लोगो द्वारा वोट दिए गए हाल ही में हुए छत्तीसगढ तथा मध्य प्रदेश में भी हुए चुनाव में भी लोगों जागरूकता का अभाव दिखा। भारत राज्यों का संघ है इसलिए भारत में प्रतिवर्ष हमें चुनाव देखने को मिलता है कभी संघ तो कभी कोई राज्य। लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों के लिए यह उचित नहीं हैं। क्योंकि इससे चुनाव लागत अत्याधिक होती है तथा समय भी अधिक लगता है जो राजनीतिक दलों को अपने और ध्यान केद्रित करता हैं जिससे विकास प्रक्रिया धीरे होती है। इससे निपटारा हेतु 'एक राष्ट्र एक चुनाव' (one nation, one election) जैसी प्रकिया को आरंभ करने की करने बात कहीं जा रही है। इसका सर्वप्रथम प्रस्ताव 1999 ई में बी पी जीवन रेड्डी की निर्वाचन विधि आयोग ने की थी। वर्तमान सरकार भी इस पर काम कर रही है। भारत में चुनाव नेताओं तथा लोगो को उनके जिम्मेदारियों से अवगत करता है। एक शायर लिखते है।

चुनाव ने आका नेताओं को क्या क्या सिखा दिया
बड़े-बड़े से नेता को भी जनता के कदमों पर झुका दिया

चुनाव लोकतांत्रिक देश की सर्वोच्च है। सत्ताधारी लोगो द्वारा इसका दुरूपयोग करने से जनता उन्हें आगामी चुनाव में धरती दिखाने की करती हैं। इसका उदाहरण हमें इंदिरा गांधी के समय देखने को मिलती हैं। लेकिन चुनाव क्या केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम हैं। मुंशी प्रेमचंद्र लिखते है -

"सत्ता नहीं, व्यवस्था परिवर्तन है जरूरी"

इसी संदर्भ में दुष्यंत कुमार जी लिखते हैं:

कहाँ तो तय था चरागाँ हर एक घर के लिए
कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।

इससे पता चलता है कि वर्तमान समय में चल रही व्यवस्था जनता के अनुकूल नहीं रही है, इसी कारण चुनाव में भी 'नोटा' से विकल्प का प्रावधान किया गया है। भारत में चुनाव निर्वाचन आयोग द्वारा कराया जाता है। इसकी स्थापना संविधान लागू होने से एक दिन पूर्व 25 जनवरी 1950 को की गई। भारत का निर्वाचन आयोग एक स्वायत, संवैधानिक, प्राधिकरण संविधान (अनुछेद – 324) है जो केंद्र राज्य राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति के लिए निर्वाचन का संचालन करता है। लेकिन इसके द्वारा प्रयोग में लाई गई EVM को वर्तमान समय में संदेह की दृ ष्टि से देखा जा रहा हैं। इसलिए उन लोगो को आवश्यकता है कि निर्वाचन आयोग तथा सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष सत्यता के जांच कर ले क्योंकि भारत विश्व का सबसे लोकतांत्रित देश है तथा यहाँ की चुनाव की प्रक्रिया तथा उपकरण को शंका के दृष्टि से देखना उचित नहीं हैं। यह भारत के लोकतांत्रिक व्यवस्था पर प्रश्नवाचक चिन्ह लगाता हैं। चुनाव प्रक्रिया के दौरान सत्ता पक्ष विपक्ष तथा अन्य नेताओं द्वारा अपनी राजनीति की रोटी सेंकने के लिए सस्ती लोकप्रियता तथा तालियों की गूँज सुनने के लिए अमानवीय भाषणबाजी, भाषा तथा पंथ संबंधी भद्दी टिप्पणियाँ देश के हित के लिए उचित नहीं हैं। यह लोगों में मतभेद पैदा करती है जिसके दूरगामी परिणाम नकारात्मक साबित होगे।

"चुनाव है चुनाव है डूब रही विकास की नाव है वोट लेकर हर बार देखो दिया जनता को घाव है।"

भारत गुलामी के जंजीरों को तोड़कर सत्ता परिवर्तन के लिए चुनाव की प्रक्रिया अपनाया और इसी कारण 76 सालो बाद भी देश में सुचारू ढंग से लोकतांत्रित व्यवस्था चल रही हैं, जहाँ अन्य कई देश इस प्रक्रिया में पीछे छूट गए है। वहीं भारत विश्व में उभरती हुई शक्ति के रूप में देखा जा रहा है। अगर देश में सारे पक्ष, विपक्ष के लोगों का सहयोग और तालमेल रहा तो भारत को 2047 तक एक विकसित देश के रूप में देख पायेगें।

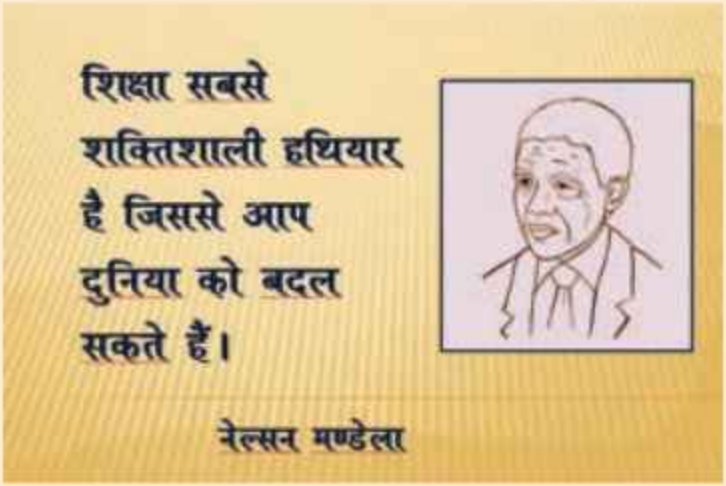

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ

सुश्री सुचिता श्रीवास्तव
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
राजभाषा अधिकारी, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" वर्षों पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखी गई इन पंक्तियों में निज भाषा की उन्नति या प्रचार-प्रसार को मनुष्य जाति की समग्र उन्नति या विकास का आधार बताया गया है। निज भाषा के महत्व को दर्शाती हुई अन्य पंक्तियों के साथ आगे वे लिखते हैं- "विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार। सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।"अर्थात् विविध कलाओं और शिक्षा के असीम भंडार, अनेक प्रकार के ज्ञान को विदेशों से ग्रहण कर अपने देश में अपनी भाषा में ही उसका प्रसार करना चाहिए। भारतेन्दु की इस सोच के पीछे देश की अधिकाधिक जनता को अद्यतन ज्ञान-विज्ञान की विधाओं से जोड़ना रहा होगा। भारतेंदु के उक्त विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं जितने उस समय थे जब लगभग 150 वर्ष पूर्व यह रचना की गई थी क्योंकि हम अब तक अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा या राजभाषा को अपने ही देश में यथोचित महत्व नहीं दे सके, न ही सक्षम होते हुए भी ज्ञान के विविध क्षेत्रों को व्यक्त करने में उनका प्रयोग कर सके। आज भी कई क्षेत्रों में हमारी विदेशों और विदेशी भाषा पर अस्वाभाविक और अनुचित निर्भरता बनी हुई है।

शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा की वर्तमान स्थिति और चुनौतियों को समझने से पूर्व हमें भाषा और मातृभाषा का महत्व, हमारे देश में मातृभाषा की स्थिति, उसके संरक्षण और समृद्धि की आवश्यकता आदि पर विचार करना होगा।

भाषा : मानवीय परंपराओं, विचारों एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाली ध्वनि रूप व्यवस्था को भाषा कहा जाता है। कर्ता, कर्म, क्रिया आदि की एक सुसंबद्ध और सुव्यवस्थित पद्धति से युक्त भाषा अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम होने के साथ-साथ हमारी सामाजिक- सांस्कृतिक पहचान, हमारी अस्मिता, हमारे व्यक्तित्व के निर्माण और विकास का साधन भी है। अपने इतिहास एवं परंपराओं से अनभिज्ञ मनुष्य का जीवन अपूर्ण है। मानवीय सभ्यता की कई धरोहरों की तरह भाषा भी एक धरोहर है जो इसके विशेष गुणों एवं लक्षणों को धारण किए होती है। एक पूरी समाज व्यवस्था या कई मानव सभ्यताओं के बारे में हमें भाषा के माध्यम से ही जानकारी मिलती है। व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो परंपरा से अर्जित इस अनेक रूपों वाली भाषा संपत्ति का संबंध एक व्यक्ति से लेकर सम्पूर्ण विश्व सृष्टि तक है।

मातृभाषा का महत्व : मातृभाषा अर्थात मातृ, माता या मां की भाषा। बहुधा जन्म लेने के पूर्व से ही बच्चा मां-पापा की आवाज पहचानकर प्रतिक्रियास्वरूप अपनी विशेष भाषा में संवाद करने लगता है। स्पर्श, संकेत चिह्नों या हाव-भाव की भाषा से आगे बढ़कर जब बच्चा बोलना शुरू करता है तो अक्सर अपने आस-पास बोली जाने वाली भाषा को सुनकर उस भाषा के शब्दों को अस्पष्ट और धीरे-धीरे फिर स्पष्ट रूप में बोलना शुरू करता है। बच्चे अपनी मूल भाषा के ढांचे से इतनी जल्दी सामंजस्य बना लेते हैं कि वे इसके ध्वनि संबंधी भेदों को माता-पिता की बातचीत में पकड़ने लगते हैं जबकि वे भाषा को ठीक तरह से बोलना सीख नहीं पाए होते हैं। बच्चे की मातृभाषा उसकी पहली पहचान होने के साथ-साथ उसके स्वाभाविक मानवीय भावों जैसे रोने, हँसने आदि को व्यक्त करने, उसके शुरुआती अनुभवों और सीखों को सहेजने, दोस्तों और बड़ों के साथ उसके संबंधों को समझने तथा उसके स्तर पर समस्याओं के समाधानों को तलाशने की उसकी कोशिशों की भाषा होती है। बच्चे के मस्तिष्क पर भाषा के इस पहले अनुभव की बड़ी गहरी और अमिट छाप पड़ती है, जो अचेतन स्तर पर भी सक्रिय रहती है। भाषा प्रयोग तथा भाषा - अभ्यास बच्चे के मस्तिष्क को आवश्यक पोषण देता है। कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य सर्वप्रथम अपने घर में बोली जाने वाली भाषा के संपर्क में आता है अत: उसका स्वाभाविक परिचय और जुड़ाव उस भाषा के साथ हो जाता है। यही उसकी मातृभाषा कहलाती है जिसे भारतीय सभ्यता में मातृभूमि और जन्म देने वाली माता के समान सम्मान दिया गया है। भाषा के प्रयोग, समझ, अधिग्रहण और निर्माण में शामिल पद्धतियाँ एक स्तर तक संपूर्ण जीव-जंतु जगत में दिखाई देती हैं। हमारे पास मौजूद यह अनोखा खजाना हमारी संस्कृति व हमारे कल्पनाशील बौद्धिक जीवन के बड़े हिस्से का बुनियादी तत्व है। जिसके कारण हम योजनाएं बना पाते हैं, सृजनात्मक कलाकर्म करते हैं और विविध समाजों का निर्माण करते हैं।

विश्व के शिक्षाविदों, भाषावैज्ञानिकों, अध्यापकों और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े जानकारों के मतानुसार मानव जीवन के

शुरुआती सात वर्ष भाषा सीखने के लिए बेहद महत्वपूर्ण माने गए हैं। शोध अध्ययनों में बच्चों की आरंभिक शिक्षा के लिए मातृभाषा को ही सबसे उपयुक्त माध्यम पाया गया है। आत्मीयता के अनुभव के कारण मातृभाषा में कही गई कोई भी बात, पढ़ाया गया कोई भी पाठ किसी भी व्यक्ति को अपेक्षाकृत अधिक आसानी से समझ में आता है, अधिक समय तक प्रभावी रूप में याद रहता है और संबंधित विषय एवं वस्तु में रुचि जागृत कराता है।

मातृभाषा में कुशलता प्राप्त हो जाने के साथ बच्चे के पास भाषा के उपयोग का एक खाका उपलब्ध हो जाता है और उसके लिए दूसरी भाषाएं सीखना सरल हो जाता है। स्कूल की भाषा, मातृभाषा या घर की भाषा न हो तो यह भेद सीखने के काम को कठिन बना देता है। यदि माता-पिता भी स्कूल की भाषा से अपरिचित हों तो शिक्षण पूरे परिवार पर भार हो जाता है। माता-पिता बच्चे की पढ़ाई में मदद नहीं कर पाते, ऐसे बच्चे स्कूल में सहज नहीं हो पाते और पढ़ाई में उनकी रुचि कम हो जाती है। यदि वो पढ़ाई जारी रखते भी हैं तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि और सृजनात्मकता अपेक्षाकृत सीमित रह जाती है। अतः व्यक्ति के उन्मुक्त और स्वाभाविक विकास के लिए जरूरी है कि उसकी पृष्ठभूमि में प्रयोग की जाने वाली भाषा अर्थात मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम अनिवार्यतः बनाया जाए। मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना हर बच्चे का जन्मसिद्ध अधिकार है।

मातृभाषा में शिक्षा का प्रभाव : गांधी जी शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी भाषा को लादने को विद्यार्थी समाज के प्रति "कपटपूर्ण कृति" मानते थे। उनके अनुसार हजारों व्यक्तियों को अंग्रेजी सिखाना उन्हें गुलाम बनाना है। उनका मानना था कि विदेशी माध्यम बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालने, रटने और नकल करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है तथा उनमें मौलिकता का अभाव पैदा करता है। यह देश के बच्चों को अपने ही घर में विदेशी बना देता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के बाल अधिकारों के घोषणा पत्र में भी बच्चों को उसी भाषा में शिक्षा प्रदान की जाने की बात कही गई है जिस भाषा का प्रयोग उसके माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन एवं सारे पारिवारिक सदस्य करते हों। अनुसंधानों और स्वयं के अनुभव के आधार पर भी हम कह सकते हैं कि मातृभाषा में हमारी पठनगति अधिकाधिक होती है क्योंकि उसके सारे शब्द परिचित होते है। अन्य भाषा में जो शब्द केवल एक ऊपरी या सांकेतिक जानकारी देता है मातृभाषा में वह उसके गुणों का अनुभव भी कराता है, यानि हर शब्द के साथ एक भाव जुड़ा रहता है। मातृभाषा से अलग अन्य माध्यम से पढ़ने वाले मासूम बच्चों को दो भाषाओं का भार उठाना पड़ता है। परिणामतः बच्चे दोनों भाषाओं के साथ न्याय नहीं कर पाते और उनकी पठन क्षमता धीरे-धीरे कम होती जाती है। विदेशी भाषा में अनावश्यक रूप से निपुणता लाने के प्रयास में बर्बाद होने वाले समय के कारण बच्चे के अन्य सृजनात्मक कार्य प्रभावित होते हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से इसलिए कतराते हैं क्योंकि उनकी शिक्षा का माध्यम वह भाषा नहीं है जो उनके घर में बोली जाती है। प्रायः सभी विकसित देशों में स्थानीय भाषा या मातृभाषा ही आरंभिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक का माध्यम होती है। परिवेश और आवश्यकतानुसार अन्य भाषा बाद में सीखी जा सकती है एवं उसका उपयोग निर्धारित उद्देश्य के लिए किया जा सकता है।

रूस, चीन, जापान, फ्रांस, कोरिया, इटली, नीदरलैंड, स्पेन और जर्मनी सहित विश्व के कई देशों ने भले ही कारोबार के लिए वैश्विक भाषा को अपना लिया हो लेकिन संस्कृति की रक्षा के लिए मातृभाषा का साथ नहीं छोड़ा। स्वीडन में स्वीडिश, फिनलैंड में फिनिश, फ्रांस में फ्रेंच, इटली में इतालवी, ग्रीस में ग्रीक, जर्मनी में जर्मन, ब्रिटेन में अंग्रेजी, चीन में चीनी और जापान में जापानी भाषाएं शिक्षा का माध्यम हैं। विकास को बढ़ावा देने के लिये शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी जैसी अंतरराष्ट्रीय भाषा का अनिवार्य होना हमारा भ्रम है। तकनीकी दृष्टि से विश्व के अग्रणी देश जापान में जापानी, विश्व की उभरती महासत्ता चीन में चीनी भाषा का प्रयोग होता है।

भारत में भाषा, संस्कृति, लोक- बोलियों, पहनावे, खान पान जैसी विविधता ही शिक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई देती है। भाषा शिक्षा का इतिहास देखने पर हम पाते हैं कि सदियों से भारत में संस्कृत, फारसी, अरबी, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि भाषाएं सीखी-पढ़ाई गयी हैं। इन भाषाओं के मूर्धन्य विद्वान, कवि एवं विशेषज्ञ हुए हैं, परंतु उन्हें संस्कृत के माध्यम से संस्कृत या फारसी के माध्यम से फारसी नहीं सिखायी गयी। इन भाषाओं की शिक्षा उन्हें मातृभाषा या दूसरी अन्य स्थानीय भाषाओं के माध्यम से ही दी गई थी। स्वयं अंग्रेजी भाषा का प्रचार-प्रसार भारत में अन्य भाषाओं के माध्यम से ही हुआ है। मातृभाषा से अंग्रेजी में अनुवाद व अंग्रेजी व्याकरण के अध्यापन के बाद छात्र को लेख लिखने तथा पुस्तक पढ़ने में सक्षम बनाकर उन्हें अंग्रेजी का प्रयोग करने की अनुमति दी जाती थी। उस समय तक भारत में अंग्रेजी सीखने का एकमात्र सफल तथा लोकप्रिय तरीका यही था। बाद में यहां मातृभाषा के स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बनने लगी। मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने का विद्यार्थियों पर मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक प्रभाव पड़ता है। ऐसे कई उदाहरण हैं जो इस मिथ्या धारणा को मिटाते हैं कि मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने से करियर के शिखर पर नहीं पहुंचा जा सकता या जीवन व करियर में सफलता पाने के लिए

आरंभिक स्तर से ही अंग्रेजी में शिक्षा हासिल करना अनिवार्य है। देश के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद अपनी मातृभाषा यानी हिंदी में स्कूली शिक्षा ग्रहण कर देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचे। कविवर रवींद्रनाथ टैगोर की पढ़ाई का माध्यम भी उनकी मातृभाषा बांग्ला ही थी। लार्सन एंड टुब्रो के एग्जीक्यूटिव चेयरमैन गुजरात के एएम नाईक का अंग्रेजी से परिचय आठवीं कक्षा में हुआ। टाटा समूह के चेयरमैन नटराजन चंद्रशेखरन ने अपनी स्कूली शिक्षा अपनी मातृभाषा तमिल में ग्रहण की। विज्ञापन जगत की जानी-मानी हस्ती व गीतकार प्रसून जोशी अपनी सफलता का श्रेय हिंदी माध्यम में अच्छे से पढ़ाई करने को देते हैं। कहने का तात्पर्य है कि स्थानीय भाषाओं या मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करना तरक्की की राह में रुकावट नहीं है।

शिक्षा का व्यापक उद्देश्य : तैत्तरीय उपनिषद तथा अन्य शास्त्रों में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य शिशु को मानव बनाना बताया गया है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार "केवल जानकारी का वह ढेर शिक्षा नहीं कहला सकता, जिसे दिमागों में ठूंस-ठूंस कर भर दिया जाता है और बिना आत्मसात हुए वह जीवन भर दिमाग में उपद्रव मचाया करता है। हमें विचारों को इस प्रकार आत्मसात कर लेना चाहिए कि उनके द्वारा हमारा जीवन-निर्माण हो सके, हमारा चारित्रिक गठन हो सके और हम मनुष्य बन सकें। अत: हमारा लक्ष्य यही है कि हमारे देश की सम्पूर्ण लौकिक एवं पारमार्थिक शिक्षा हमारे हाथों में हो। यह शिक्षा हमारी राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप हो और जहां तक संभव हो सके, राष्ट्रीय पद्धति से ही दी जानी चाहिए"। अत: हम कह सकते हैं कि शिक्षा व्यक्ति में जीवन जीने का आत्मविश्वास पैदा कर सकती है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य को उत्तम नागरिक बनाकर उसे अपने परिवार का पालन पोषण करने और सांसारिक सुख की प्राप्ति के योग्य बनाया जा सकता है।

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य परंपरा की धरोहर को एक पीढ़ी से दूसरी तक पहुंचाना भी है। इस प्रक्रिया में परंपरा का सृजनात्मक मूल्यांकन भी शामिल होता है, लेकिन क्या हमारी शिक्षा संस्थाएं भारतीय परंपरा की तलाश कर उनका पोषण कर रही हैं ? शिक्षा व्यवस्था, खासकर उसकी गुणवत्ता और जीवन में उपयोगिता को लेकर उठाए जाने वाले प्रश्न समय के साथ और जटिल तथा गंभीर होते जा रहे हैं। सामान्यतस्कूलों से अपेक्षा की जाती है कि वे बच्चों की नैसर्गिक जिज्ञासा और सृजनात्मकता का उनसे परिचय कराएं, उसे दिशा दें और हर व्यक्ति के अंदर छिपे खजाने को खोल कर दिखाने की क्षमता विकसित कराएं। परंतु वर्तमान शिक्षा प्रणाली नई पीढ़ी और परंपरा के बीच अलगाव पैदा कर रही है। तकनीक और ज्ञान के जितने संसाधन मनुष्य के पास आज उपलब्ध हैं, उतने पहले कभी नहीं थे। पर जितनी हिंसा, अविश्वास और शोषण इस समय मौजूद है वह भी पहले कभी इतना नहीं था। निश्चय ही शिक्षा वह समझ नहीं पैदा कर पा रही, जो सद्भावना बनाए रखने के लिए आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य व्यवसाय या नौकरी करने की दिशा में प्रमाणपत्र देना ही रह गया है।

मातृभाषा में शिक्षा की वर्तमान स्थिति : अंग्रेजी शासनकाल के समय से प्रारंभ हुई भाषाई साम्राज्यवाद की स्थिति स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी बनी हुई है। तभी तो अंग्रेजी भाषा आज हिंदी, तमिल, तेलुगू, बांग्ला, मराठी हर भाषा में प्रवेश कर हमारे राष्ट्र के शिक्षा और शासन आदि विविध क्षेत्रों से मातृभाषाओं का लोप कर रही है। घोषित या अघोषित रूप से एक ऐसी व्यवस्था जड़ जमा रही है जिसमें रोज़गार पाने के लिये इस भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य किया जा रहा है। इस भाषा का प्रयोग करने वाला एक अल्पसंख्यक अभिजात वर्ग इस विदेशी भाषा को न बोलने और जानने वाले लोगों को दूसरे दर्जे का नागरिक सिद्ध करने में लगा हुआ है। विदेशी भाषा को प्रतिष्ठा, मान सम्मान और वर्चस्व का प्रतीक मानकर क्षेत्रीय भाषाओं की अवहेलना की जा रही है। शिक्षा की गुणवत्ता को अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी सलीके और कायदे कानून के साथ जोड़ दिया गया है।

भारत में बाल्यकाल से ही अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने की अंधी दौड़ के चलते अधिकांश बच्चे मातृभाषा में शिक्षा पाने के आनंद से वंचित रह जाते हैं। मातृभाषा में शिक्षा न देकर हम बच्चों के भाषिक संस्कार को दिन-प्रतिदिन कमजोर कर रहे हैं। उनको जीवन जीने की शिक्षा, मातृभाषा - राष्ट्रभाषा के अच्छे साहित्य, अच्छे ज्ञान से वंचित कर रहे हैं। कक्षा में प्रथम स्थान पाने से लेकर उत्तीर्ण होने के दबाव तक कितने ही बच्चे और युवा आत्महत्या कर रहे हैं क्योंकि उनमें अंकों से आगे की दुनिया के बारे सोचने की क्षमता विकसित नहीं की जा रही। कमजोर अंग्रेजी के कारण परीक्षा में असफल होने या समाज में किसी हास्यास्पद स्थिति से गुजरने के बाद या ऐसी स्थिति से बचने के लिए बच्चे विद्यालय छोड़ रहे हैं, घर छोड़कर भाग रहे हैं यहां तक कि अपनी जान तक दे रहे हैं, क्योंकि माहौल ऐसा बनाया जा रहा है कि अंग्रेजी स्कूल में अंग्रेजी ज्ञान पाए बिना सफल नहीं हुआ जा सकता। परंतु क्या अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा प्राप्त सभी विद्यार्थी जीवन और करियर के क्षेत्र में सफल हैं? इन परिस्थितियों पर चिंतन - विश्लेषण की आवश्यकता है।

अलग-अलग आर्थिक, सामाजिक परिवेश के बच्चों में विषय को ग्रहण करने की क्षमता समान नहीं होती। भारत की नई पीढ़ी के लिए प्रताड़ना अंग्रेजी में शिक्षा:, दमन और शोषण है। विद्यालयों में हिंदी दिवस 14 सितंबर की तरह मातृभाषा दिवस,

21 फरवरी के दिनों को छोड़कर शेष दिन अंग्रेजी माध्यम के कुछ विद्यालयों में विद्यालय परिसर में हिंदी या मातृभाषा में बात करते पाए जाने पर दंडित किया जाता है। कुछ विद्यालय माता-पिता की शैक्षणिक योग्यता को बच्चों के प्रवेश का आधार बनाते हैं। समाज के पिछड़े और उपेक्षित लोगों को उनकी प्रतिभा, उनके स्वभाषा में प्रवीण होने के बावजूद रोज़गार मिलने में कठिनाई होती है क्योंकि उनके सामाजिक पर्यावरण के कारण वे एक विदेशी भाषा में दक्ष नहीं होते। विदेशी भाषा के उपयोग की विवशता के कारण समाज में विचार-विनिमय सम्यक प्रकार से नहीं हो पाता। इससे समाज में असमानता बढ़ती है तथा अवसर की समानता के अधिकार का भी हनन होता है।

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ और समाधान : प्रत्येक पीढ़ी का कर्तव्य है कि मानवता का विकास करके विकास के कारवां को कुछ और आगे बढ़ाए। हमारे पिछड़ने का कारण प्रारंभिक ज्ञान या स्कूलों में मातृभाषा में शिक्षा की कमी है। जिस भी देश ने अपनी भाषा को महत्व दिया वह अंग्रेजी के कारण पीछे नहीं रहा। राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई परिवार द्वारा ही बच्चे को राष्ट्र की गरिमा और अस्मिता की शिक्षा दी जाना चाहिए। परिवार को बच्चे को जन्म से ही मातृभाषा का महत्व समझाना चाहिए।

बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण एक सक्षम और सार्वभौम राष्ट्र निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण आधार हैं। इसलिए इन पर राष्ट्रीय नीतियाँ सर्वमान्य ढंग से विकसित होनी चाहिए। साक्षरता दर, विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की उपलब्धता बढ़ी है, अंग्रेजी पढ़ाने की व्यवस्था प्राथमिक कक्षाओं से कर दी गई है परंतु इसका अपेक्षित प्रभाव दिखाई नहीं देता क्योंकि हर तरफ गुणवत्ता और सार्थकता में भारी कमी आई है। आज के बच्चे हिंदी अंकों के उच्चारण को प्राय: नहीं समझते। छत्तीस को थर्टीसिक्स, उनयासी को सेवंटीनाइन कहे बिना बच्चे बाज़ार की छोटी-बड़ी क्रियाओं को संपन्न करने योग्य भी नहीं हैं। आधुनिकता की चकाचौंध में नई पीढ़ी को जड़ों से दूर होने से बचाना हमारे लिए चुनौती है। हमें हमारी सांस्कृतिक विरासत को आत्मसात करना होगा।

ज्ञान-विज्ञान के उच्चस्तरीय साहित्य का निर्माण कर इसके माध्यम से भाषाओं और बोलियों को संरक्षित किया जा सकता है। विद्वानों और विशेषज्ञों द्वारा संवाद, चर्चा, परिचर्चा आदि के माध्यम से उत्तम साहित्य का निर्माण किया जा सकता है। वैचारिक मतभेदों के बीच सामंजस्य और समरसता बनाए रखने के लिए सहिष्णुता का कौशल सिखाना होगा। शिक्षा की विषयवस्तु और विधा को समयानुकूल परिवर्तित करना होगा। हमारी वैज्ञानिक प्रगति अंग्रेजी भाषा पर निर्भर नहीं होनी चाहिए। हमें अपनी जनता के बीच नवीन प्रौद्योगिकी को उनके समझने योग्य भाषा में प्रस्तुत करना चाहिए ताकि उनकी सोच विकसित और मौलिक सृजन के लिए तैयार हो सके। जिससे हमें विकास के लिए किसी अंग्रेजी पढ़े-लिखे वर्ग विशेष पर निर्भर न रहना पड़े, हमें हर मस्तिष्क का योगदान मिल सके।

जहां हमारी पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यक्रम विविधता में एकता को भारत की विशेषता बताती हैं वहीं कक्षायी स्थिति में यह भाषाई विविधता एक या दो भाषाओं में सिमट कर रह जाती है। हमारे स्कूली भाषा और समाज में प्रयोग की जाने वाली भाषा में अंतर साफ नजर आता है। इनके बीच सामंजस्य स्थापित करने की जिम्मेदारी शिक्षक को निभानी पड़ती है। इस समस्या का निराकरण भाषावैज्ञानिक और शिक्षाविदों को करना होगा। पांचवीं कक्षा तक मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करने के बाद राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी भाषा को चुना जाना इसका एक समाधान हो सकता है।

भाषा के शुद्धतावादी और मानकीकृत रूप के कारण भाषाई भूगोल से हमारी जो अभिव्यक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरे गायब हो चुके हैं उन्हें भाषा की मुख्य धारा में लाया जाना चाहिए। शहरी समाज के बीच से विविध भाषा संपदा लगभग समाप्त हो गई है। मातृभाषाओं के सच्चे, कोमल शब्दों को प्रयोग में लाकर उन्हें बचाना है। हमारे देश में मातृभाषा को जुबान से, चलन से गायब कर अंग्रेजी को मातृभाषा बना दिए जाने के अथक प्रयास किए जा रहे हैं। हमें अपनी बोली और भाषा के प्रयोग में शर्म और हीनता का अनुभव करना त्यागना होगा। अंग्रेज, अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के समक्ष अपने को निकृष्ट देखने की हमारी प्रवृत्ति को छोड़कर व्यवस्था से उसे हटा देना होगा। दुनिया की हर भाषा दूसरी भाषा के सर्वप्रचलित शब्द को ग्रहण कर समृद्ध होती है। लेकिन आधुनिकता के नाम पर भाषा के सर्वनाम, संज्ञा, क्रिया, यहां तक कि पूरे वाक्य विन्यास को बिगाड़ना सही नहीं है। उर्दू, फारसी, संस्कृत सहित लोकभाषाओं और अंग्रेजी के ढेरों शब्दों से युक्त हिंदी का शब्द भंडार और वैज्ञानिकता अतुलनीय है। हमें हिंदी को बाजार, व्यापार और विज्ञापन की भाषा से आगे बढ़ाकर कार्पोरेट के कामकाज की भाषा बनाना है। देश में लाखों स्कूल ऐसे हैं जहां केवल एक मानदेय प्राप्त अध्यापक कक्षा एक से पांच तक के सारे विषय पढ़ाता है। ये बच्चे कभी उन बच्चों के साथ प्रतिस्पर्धा में बराबरी से खड़े हो नहीं हो पाएंगे जो देश के प्रतिष्ठित स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई

कर रहे हैं। शिक्षकविहीन, भवनविहीन, शौचालयविहीन, पानी-बिजली विहीन स्कूलों में मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना होगा ताकि उक्त अभावों के कारण कोई बच्चा शिक्षा से वंचित न रह जाए।

शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय में आवश्यक बदलाव लाने के लिए राजनीतिक, आर्थिक लाभों को महत्व न देकर उदात्त व्यक्तित्व निर्माण को स्थान देने की आवश्यकता है। वैश्विक परिदृश्य से साम्य बैठाने के लिए मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हुए भारत में जिसे रुचिकर और आवश्यक लगे वो अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषा बोलना सीखे। इसके लिए विशेष संस्थाएं बनाई जाएं परंतु इसे सभी पर न थोपा जाए। आनंदपूर्वक अन्य भाषा सीखना न्यायसंगत तथा उचित होगा। स्कूलों में, घरों में पुस्तक, पत्र-पत्रिका, अंग्रेजी के अच्छे टेलीविजन - रेडियो प्रोग्राम आदि से भी अंग्रेजी सीखी जा सकती है। समान स्कूल व्यवस्था लागू की जाए, जिसमें शिक्षा शुल्क भी इस प्रकार निर्धारित किया जाए कि आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला सके और कुछ विशिष्ट स्कूलों में प्रवेश के लिए बच्चों और माता-पिता को तनाव न झेलना पड़े। हमें यह शैक्षिक अवधारणा पूरी तरह मान लें कि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए और ऐसा न करना बच्चों के साथ मानसिक क्रूरता है।

निष्कर्ष : विकास की अवधारणा हर देश को अपने ज्ञान-स्त्रोतों, अपनी संस्कृति और संसाधनों के अनुरूप निर्मित करनी होती है। परंतु भारत में हम लगभग हर क्षेत्र में पश्चिम की नकल करते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी इस जाल से बच नहीं पाई। स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमारी शिक्षा व्यवस्था में अनेक कमियां बनी हुई हैं, जिनका निराकरण केवल दृढ़ इच्छाशक्ति से ही संभव है। कुल मिलाकर शिक्षा को नीतिगत और क्रियान्वयन के स्तर पर इतना सशक्त बनाना होगा कि वह न केवल व्यक्तित्व विकास करे बल्कि व्यक्ति में अन्य के प्रति सद्भाव और विविधता के प्रति आदर और सम्मान के मूल्य को भी विशेष रूप से प्रतिष्ठित करे। प्रकृति और मनुष्य के बीच के संवेदनशील संबंधों की डोर को बचाए रखने की जिम्मेदारी मनुष्य की है अत: जब तक परिवेश और पाठ्यक्रम में साम्यता या तालमेल नहीं होगा तब तक समग्र विकास संभव नहीं है। भाषाएं सृष्टि के विभिन्न पहलुओं को जानने और संवेदनाओं को मूर्तरूप देने का एक माध्यम हैं। इन्हें प्रतिष्ठा या हीनता का प्रतीक नहीं समझना, मानना या बनाना चाहिए। हमारे परिवेश की दृष्टि से अंग्रेजी प्रभाव और दबाव की भाषा है और हिंदी सद्भाव और लगाव की भाषा है। अत: हमारी सभ्यता और संस्कृति को व्यक्त करने की क्षमता हिन्दी में ही है। बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना उनके मानवाधिकार का उल्लंघन हैं, उनकी नैसर्गिकता और नवाचार का दमन है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक बोली जाने वाली कई भाषाएं हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान हैं और इन भाषाओं का प्रयोग सम्मानपूर्वक कर इनसे जुड़े व्यक्ति अपनी संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण करते हैं। भाषा सीखना अच्छी बात है और गुणकारी भी है। कई भाषाओं का ज्ञान विचारों के पारस्परिक विनिमय में अत्यंत सहायक है, हम जितनी ज्यादा भाषा सीखें उतना अच्छा है। भाषा हमें एक नये संसार में प्रवेश कराती है। ऊंची से ऊंची नौकरी पाने के लिए, ज्ञान अर्जित करने के लिए अंग्रेजी सीखना, अंग्रेजी में निष्णात होना बहुत अच्छी बात है। भाषा संसार जितना समृद्ध होगा हमारा जीवन भी उतना ही समृद्ध होगा। भारतीय होने के नाते हमें हिंदी भाषा पर गर्व होना चाहिए और इसका ज्ञान होना अनिवार्य है। विदेशी भाषाएं हमारी सहायक बन सकती है पर उद्धारक नहीं। अतः भारत में हिंदी या क्षेत्रीय भाषा में ही शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। भारतेंदु की निम्न पंक्ति के साथ मैं अपनी बात समाप्त करती हूं :

उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय।
निज शरीर उन्नति किये रहत मूढ़ सब कोय।।

हिन्दी में रोज़गार के बढ़ते अवसर

सुकन्या देवी, (पूर्व छात्रा एम.ए. हिन्दी)
राजभाषा अधिकारी, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, मुंबई

'हिन्दी हमारी राजभाषा, हमारे काम-काज की भाषा, हमारी संपर्क भाषा, हमारे मनोरंजन की भाषा, हमारे हंसने-गाने की भाषा और अब हमारे रोज़गार की भाषा, जी हाँ, बिलकुल सही पढ़ा अपने, हिन्दी हमारे रोज़गार की भी भाषा है. आज के बदलते हुए इस दौर में भाषाओं के क्षेत्र में भी रोज़गार के अवसर उत्पन्न हो रहे हैं. बीते समय में भाषा को केवल एक विषय मात्र के रूप में ही माना जाता था और इसमें रोज़गार के बहुत ही सीमित अवसर थे. परन्तु आज के समय में भाषा क्षेत्र बहुत अधिक व्यापक हो गया है. अब यूं तो हमारे देश के संविधान में 22 भाषाओं को ही मान्यता दी गयी है, लेकिन साल 2011 की जनगणना के दौरान यह सामने आया कि भारत में 121 भाषाएँ ऐसी हैं जो 10,000 से भी अधिक लोगों के द्वारा बोली जाती हैं. इन सभी भाषाओं और बोलियों के मध्य अन्य भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा का भी अपना अलग महत्त्व है. हिन्दी भाषा में रोज़गार के कई अवसर हैं जिनसे मैं आपको अवगत कराना चाहूंगी. जैसा कि बीते समय में हिन्दी भाषा में रोज़गार की बात करें तो हमारे मस्तिष्क में केवल शिक्षा क्षेत्र में एक शिक्षक के रूप में ही रोज़गार का अवसर मिलता है. हिन्दी भाषा में रोज़गार के अवसर अब केवल विद्यालय या महाविद्यालय में शिक्षक, प्रोफ़ेसर बनने तक ही सीमित नहीं रह गए हैं बल्कि अब यह क्षेत्र व्यापक हो गए हैं.

हिन्दी भाषा क्योंकि हमारी राजभाषा भी है तो राजभाषा में कामकाज तथा इसके अनुपालन के लिए सभी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में राजभाषा अधिकारी के पद का प्रावधान है. इसके लिए सभी संस्थान अपने कार्यालयों में राजभाषा के पद पर नियुक्ति हेतु अधिसूचना समय - समय पर जारी करते हैं. जैसे- बैंकों में राजभाषा अधिकारी के पद की नियुक्ति की अधिसूचना आईबीपीएस (IBPS) अर्थात् Indian Banking Personnel Selection के माध्यम से की जाती है. IBPS की आधिकारिक वेबसाइट www.ibps.in पर login करके बैंकों द्वारा नए कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु घोषित राजभाषा अधिकारी के पदों की जानकारी एवं प्रक्रिया प्राप्त होती है. इसके अलावा कर्मचारी चयन आयोग (Staff Selection Commission) अर्थात् एसएससी (SSC) द्वारा भी केंद्र सरकार के विभिन्न विभागों में राजभाषा अधिकारी, हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी प्राध्यापक के पदों पर नियुक्ति की जाती है. हिन्दी अनुवादकों की नियुक्ति केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार तथा सरकारी एवं गैर- सरकारी विभागों में की जाती है. हिन्दी में टंकण (टाइपिंग) का प्रशिक्षण लेकर हिन्दी टंकक (टाइपिस्ट) के रूप में भी सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों में रोज़गार के अवसर हैं. हिन्दी स्टेनोग्राफर के पद पर भी रोज़गार के अवसर उपलब्ध होते हैं. हिन्दी भाषा के माध्यम से मीडिया, मनोरंजन, फिल्म जगत में भी रोज़गार प्राप्त करने के कई अवसर हैं. जैसे- रेडियो (आकाशवाणी) में हिन्दी उद् घोशकों, हिन्दी स्क्रिप्ट लेखकों की आवश्यकता होती है. दूरदर्शन पर हिन्दी में समाचार वाचक, लेखक, प्रूफ रीडर के रूप में रोज़गार प्राप्त किया जा सकता है. प्रिंट मीडिया में हिन्दी पत्रकार, प्रूफ रीडर, लेखक आदि के रूप में रोज़गार के विभिन्न अवसर हैं. फिल्म जगत में हिन्दी गीतकार, डायलॉग लेखन, स्क्रिप्ट लेखन आदि क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर हैं. टेलीविज़न पर आने वाले विज्ञापनों में हिन्दी विज्ञापन / जिंगल लेखन के द्वारा विज्ञापन जगत में, विभिन्न रियल्टी शोज़ में हिन्दी शो एंकर के रूप में रोज़गार प्राप्त करने के अवसर प्राप्त होते हैं, हिन्दी भाषा में रचनात्मक लेखन द्वारा पुस्तक लेखक, कहानीकार, साहित्यकार, कवि या उपन्यासकार, व्यंग्यकार आदि के रूप में भी विभिन्न अवसर प्राप्त होते हैं.

आजकल स्टैण्ड-अप कॉमेडी, यू-ट्यूब आदि क्षेत्रों में भी रोज़गार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं. काफी संख्या में हिन्दी भाषा में स्टैण्ड-अप कॉमेडी के दर्शक एवं श्रोता रुचि दिखा रहे हैं. यू-ट्यूब के माध्यम से हिन्दी भाषा एवं व्याकरण ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया एवं सिखाया जा रहा है, जो आजीविका का एक स्त्रोत भी है. ऐसे कई ऑनलाइन माध्यम हैं जिनके द्वारा कई हिन्दी पॉडकास्ट (Podcast) कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है. हिन्दी उपन्यास, अन्य भाषाओं के उपन्यास, कहानियों आदि का हिन्दी अनुवाद करके कलात्मक ढंग से उन्हें रिकॉर्ड किया जाता है और ऑनलाइन ऐप्स एवं वेबसाइट पर उनके प्रतिदिन एपिसोड्स जारी किये जाते हैं. इसके लिए हिन्दी अनुवादक एवं हिन्दी वक्ता की आवश्यकता होती है. अतः हिन्दी भाषा में इस प्रकार हर क्षेत्र में रोज़गार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं. यही नहीं विदेशों में भी हिन्दी भाषा में रोज़गार के अवसर उत्पन्न हो रहे हैं. विदेशों में हिन्दी भाषा को पाठ्यक्रमों में एक विषय के रूप में शामिल किया जाने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक के रूप में रोज़गार के अवसर उपलब्ध हैं. राज- दूतावास में भी हिन्दी अनुवाद की आवश्यकता होती है.

इस तरह हिन्दी भाषा में लगभग हर क्षेत्र में रोज़गार एवं आजीविका के कई अवसर हमें आज के समय प्राप्त होते हैं. आज के इस दौर में हिन्दी भाषा में रोज़गार के कई अवसर उत्पन्न हो रहे हैं, जिनका हमें अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहिए.

Social media the new villain for happy marriages????

Tahoora Khan B.A. 2nd Year

In today's digital age, social media has become an integral part of our daily lives, shaping the way we communicate, share experiences, and even influence our decision-making. As this powerful medium continues to evolve, so too does its impact on our personal life. People often showcase the most perfect, idealised versions of their life. From perfectly arranged food to airbrushed bodies and extravagant vacations, these platforms have created an unrealistic standard of beauty and success. This has led to a significant increase in anxiety, depression, and body image issues among users, especially young people. One such area that has been profoundly affected is **"the realm of marriage and divorce"**. With the increasing frequency of social connectivity across the globe it is leading a major negative impact on the young minds especially affecting the cultures of their respective communities. According to a report, "India is witnessing a rise of 50% to 60% in divorce rates, especially in the urban areas." One of the biggest reasons for lesser divorce in India used to be the taboo associated with it. Today it is no more considered a taboo among new generation. Studies have found a positive correlation between increased social media usage and higher divorce rates. The constant stream of filtered and curated content can lead to unrealistic expectations and negative impacts on our lives. Excessive use of social media can lead to increased conflict and marital dissatisfaction, which may contribute to divorce. Many social media users feel immense pressure to present a perfect image of themselves, leading to a constant cycle of comparison, dissatisfaction, and low self-esteem. It can create a negative impact on the sense of self-worth, confidence, and wellbeing.

About 45% of couples have reported arguments over social media causing difficulties in their relationship, and lack of patience, least inter dependency and many other reasons leads to divorce. Social media has the power to break the right relationships because of increasing false expectations and jealousy.

While Social media is setting unrealistic standards in society, but the whole thing depends on how a person is using it, whether in the appropriate manner or an inappropriate manner it depends on them. However, it's essential to acknowledge that social media can also be a force for good. It can be a tool for building and nurturing relationships, promoting causes, and creating meaningful connections with others. It's all about finding the right balance and using social media in a way that is healthy and supportive of mental health. If a person is using it positively, then he/she is opening doors of a bright and happy future but if not it else will be opening the doors of a dark room that is filled with negative emotions and painful life.

Be Aware of what your usage is leading to!

कविताएं

जीवन उपवन

जाने अनजाने ही कितने लोग मिला करते हैं।
यूँ ही मन के उपवन में कुछ फूल खिला करते हैं।
कुछ गुम होते अंधियारे में
कुछ शामिल होते जीवन में।
कुछ साथी बन जाते अपने
सुख दुख के पतझड़ कानन में।
कुछ हिय से अपना लेते कुछ सदा गिला करते हैं।
यूँ ही मन के उपवन
पुष्प सुवासित जो होते हैं मन जागृत कर देते हैं।
जीवन की हर पीड़ाओं को क्षण भर में हर लेते हैं।
लेते नहीं भले कुछ हमसे हमको कुछ दे देते हैं।
कांटों संग खिला रहना है
सीख यही वो देते हैं।
ज्यों मन मंदिर के दर्पण में स्वयं मिला करते हैं।
यूँ ही मन के उपवन
निश्चित ही अपनों की ख़ातिर नियम बहुत से त्यागे जाते।
कभी छूटकर के पीछे भी हम कितने ही आगे जाते।
फिर भी अपनों से अपनापन बहुत जताना पड़ता है।
इसी जगत में एक दूजे से
प्रेम निभाना पड़ता है।
जगत सलोना स्वप्न रचयिता वहीं मिला करते हैं।
यूँ ही मन के उपवन में कुछ फूल खिला करते हैं।

डॉ. रानू वर्मा
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र

My dear 14 year old self

Are you happy in life?
Are your friends really your friend?
Are you giving your best in everything you decide to do?
Are you satisfied with the progress you've made so far?
Are you sure what dreams to run after?
Are you confident enough to express your thoughts?
Are you just crying all day long?
Are you keeping yourself awake all night long?
Are you hiding your tears just so that no one questions you?
My dear 14 year old self
I know you are going through a lot
You're too little to carry this immense pain
In confusion, in grief, in the depths of despair
You keep wondering why you feel so low all the time
But you're not even sleeping, when you sleep
Your mind is still going a million miles an hour
Your worries are still running through your head
You're distracting yourself & calling it peace, but let me promise you, this is not peace
So do me a favour, close your eyes & for a second, just let yourself be.
There is nothing more important than believing in yourself.
But my dear 14 year old self
Let me tell you, you're just the best
You're just the strongest, you'll face all the challenges
You'll recover from all the damages.
You'll know that nobody else, but you're responsible for your own happiness.
You'll grow up accepting things
Giving yourself wings.
My dear 14 year old self
Just believe yourself
Just understand yourself
Just be yourself
Just know that you work to make yourself worthy of something.
There's nothing more urgent that your breath
Inhale, then Exhale & feel the knot unravel from your chest
You're safe in this moment, you've done enough
You're worthy of feeling at peace
Let your shoulders drop, Unclench your jaw
Simply let yourself be
For my dear 14 year old self
Let's believe ourselves.

Akanksha Dabral
B. A. II Year
Secured I position in self-composed poetry competition

भारत का गणतंत्र

लोकतंत्र में आन हमारी, तंत्र हमें अति प्यारा है
भारत का गणतंत्र विश्व में, सचमुच सबसे न्यारा है
हिम्मत, ताकत, शौर्य विहंसते, तीन रंग हर्षाए हैं।
सम्प्रभु हम हैं, राज हमारा, अंतर्मन मुस्काए हैं।
कुर्बानी के नगमें गाए, आजादी का वंदन है
जज्बातों की बगिया महकी, राष्ट्रधर्म अभिनंदन है
सत्य, प्रेम और सद्भावों के बादल तो नित छाए हैं।
सम्प्रभु हम हैं, राज हमारा, अंतर्मन मुस्काए हैं।
ज्ञान और विज्ञान की गाथा, हमनें अंतरिक्ष जीता,
सप्त दशक का सफर सुहाना, हर दिन सुख में बीता,
कला और साहित्य प्रगति के, पैमानें तो भाए हैं,
सम्प्रभु हम हैं, राज हमारा, अंतर्मन मुस्काए हैं।
शिक्षा और व्यापार विहंसते, उद्योगों की जय जय है,
अर्थ व्यवस्था, रक्षा, सेना, मधुर सुहानी इक लय है
गंगा-जमुना तहजीबें हैं, विश्व गुरू कहलाए हैं।
सम्प्रभु हम हैं, राज हमारा, अंतर्मन मुस्काए हैं।
जीवन हुआ सुवासित सबका, जन गण मन का गान है,
हमने जो पाया है उस पर, हम सबको अभिमान है
भगत सिंह, आजाद, राजगुरू, विजय गान में आए हैं।
सम्प्रभु हम हैं, राज हमारा, अंतर्मन मुस्काए हैं।

अपर्णा चौबे बी.ए. तृतीय वर्ष
(स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त रचना)

भारत की संस्कृति

जहां आज भी है आंगन फलता फूलता
जहां आज भी परंपरा जीवित है
यही है ..... यही है ... वह हमारी भारतीय संस्कृति
जहां आज भी राष्ट्रीय मूल परंपराएं
उसका गौरवशाली अतीत जीवित है
जहां आज भी राजस्थान के भव्य महलों से.....
गंगा निकलती है जहां आज भी प्राचीन मंदिरों की गूंज मंत्रमुग्ध सी लगती है
हां .....यह वही भारत है
जहां रामायण महाभारत गाई जाती है
वहीं दूसरे छोर में कुरान और बाइबल भी सुनाई में आती हैं हां..... इसी भारत में
हां.... इसी भारत में राम की भक्ति की भव्यता में हम खो जाते हैं
हां..... इसी भारत में शाम की हवा में शास्त्रीय गीत गुनगुनाते हैं
हां.... यही सितार की तान में दिव्य शक्ति का आहवान है ...
हां... यही सितार की तान में दिव्य शक्ति का आहवान है ....
हां..... यही तबले की थाप, घुंघरूयों की झंकार में
दिवाली, ईद, क्रिसमस... की ज्योति विद्यमान है
शांत हिमालय से रेतीले तटों तक भांगडे से शास्त्रीय कत्थक तक
ताजमहल से अजंता की गुफाओं तक साड़ियों, वैदिक ऋचाओं तक
मसाले के स्वाद तक भारत की संस्कृति की गहरी जड़े हैं
आकाश तक वह एक लौं है वो शाश्वत
तो आईऐ इसका सम्मान करें इसे साझा करें
इस पर गर्व करें एक बार फिर भारत को भारत बनाएंगे
जय हिंद जय भारत का नारा गुनगुनाएंगे.....
जय हिंद जय भारत का नारा गुनगुनाएंगे.....

दीपा शर्मा
बी. ए. द्वितीय वर्ष
(काव्यपाठ प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त)

हां, मैं लडकी हूं

सृष्टि की अनुपम कृति हूं
जीवन सृजन की रति हूं.....
अपने वालिदैन का अभिमान हूं
अपनी समष्टि का उत्थान हूं.....
रक्षित हूं पर भक्षण अधिकार नहीं किसी का
लड़की हूं पर दमन अधिकार नहीं किसी का.....
मेरे पास शब्द है और प्रेम पूर्ण भावनाएं भी
जिन्हें कभी कोरे पन्नो पर उतार लेती हूं
किसी कतार का पूर्ण विराम नही
मैं दुनिया सम्हाल लेती हूं
क्यूं कहूं कि काश मैं लड़का होती
ईश्वर का प्रकृति के लिए वरदान हूं
मै अनंत काल से लड़की हूं
व सदा लड़की रहना चाहती हूं !

वैष्णवी जया

Nature's Poem

Underneath the bright blue sky,
Nature's wonders catch the eye.
Trees standing tall, leaves that sway,
Nature's beauty, come what may.
Mountains reaching for the sun,
Rivers flowing, never done.
Flowers bloom in fields so wide,
In their colors, joy resides.
Butterflies dance, light as air,
With petals, a love affair.
Birds sing tunes, a cheerful song,
In nature's choir, they belong.
Sunset paints a canvas grand,
Colors changing, hand in hand.
Nature's poem, simple and pure,
A gift that will endure.

Shivali Dubey
M.A. Social work 3rd sem

स्वाधीनता

आजादी की लू की ज्वाला सन 1857 में।
झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने फूँकी थी।
अंग्रेजों के सामने डटी थी हुई थी स्वदेश के ख़ातिर।
तब से आजादी की गाथा शुरू हुई थी
हिंदुस्तान की स्वाधीनता के लिए लहू का कतरा कतरा स्वदेश की माटी के लिए जिन्होंने बहाया।
स्वराज जन्म सिद्ध अधिकार है जब तिलक ने बताया।
तब से आजादी की लू ऐसी जली की लाठी चार्ज में जो लाला जी ने शहादत दी थी।
जिनकी शहादतो से यह देश आजाद है
स्वाधीनता का आँखों पे सपना जिनका होता था।
फिरंगियो को देश से भागने का मकसद जिनका रहता था।
उन वीरो को शत शत नमन जिनके कारण स्वतंत्र भारत पाया।
आजाद ने जब कनपटी में जो गोली दागी थी।
स्वदेश मातृभूमि के लिए परम प्रण अलग झलक आता था।
तुम मुझे खून दो मैं आजादी दूंगा जब यह नारा गूंजा था।
स्वदेश की माटी के लिए जिन्होंने खून बहाया था।
हंसकर झूल गया फांसी पर भगत सिंह मस्ताना था।
स्वतंत्रता के संग्राम में कई अंगारों पे चले आजादी के दीवाने को शत शत शीश नभाते हैं।
(स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त)

SANJANA LAUDHI
B.A. 1ST YEAR

हमारी संस्कृति

हमारी संस्कृति से ही यह मानव महान है,
विरासत में मिला हमको सारा सृष्टि का ज्ञान है,
बना जिन पाँच तत्वों से यह सारा जहाँ है,
मिला दुनिया के कण कण का हमें सारा विज्ञान है।
अमन चैन कैसी हो जग में हमको सदा सिखाती है,
मानव की मानवता का यह हमको पाठ पढ़ाती है,
औरों का हित सदा करो यह ऐसा हमें बताता है,
सबसे बड़ा धर्म है परहित हमको यह समझाती है,
चर व अचर सभी जीवों में एक ही अंश बताती है,
मानव पौधे पशु पक्षी सब में सम्बंध बताती है,
कैसे सुखी रहे सब मिलकर ऐसा ज्ञान सिखाती है,
यही संस्कृति हमारी जो हमें महान बनाती है।

दिव्यांशी लिटोरिया, बी. ए. द्वितीय वर्ष
(स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त)

Mist

In the shroud of mist, a world concealed,
Where secrets lie, both unrevealed
A struggling soul, lost in the haze
In the enigmatic, misty maze.
In the thrust of life, life lines limited,
Through misty paths, our hopes are knitted
With each breeze passing by, a message so withhold,
In whispers through the mist, nature's tales unfold.
Through the veil of mist, we walk alone,
Seeking the truth that remains unknown.
Lost in the fog, our spirits held tight,
With faith as our guide, we'll see the light.
Flashes, sparkling everywhere, but still a dome of darkness
In this cryptic mist, we navigate, seeking nature's caress,
Venturing forth on a path we've yet to price
Through the mist we tread where potential lies.
But for a fleeting moment clouds relent their sway
Revealing the end where dreams come into play
Will the soul quiver or thrive its strength
Amidst the mystifying mist will life persist its length?
Yet the mist is temporary but the darkness still prevails,
In the face of such obscurity, our spirit never pales.
Sunshine is the lost key that will open this lock
In the misty labyrinth, illuminating our way with a bright knock
Through the mist we have journeyed dark and obscure
With courage as our compass are hearts remain pure
In these life challenges we have found a way
Emerging from mist to greet an Earth Day.

Sonam Upadhyay
B.Sc. 1 st Year Biotechnology

AS YOU BEGIN WITH YOUR 80's

I want a door made up of
All those years that you have
Spent till your 70's,
That can lead you back
To whichever year you want
To relive and cherish your memories,
It is rightly said that grandfather's
Have silver on his head,
And gold in his heart
You are the right example
Who is presently living on this planet earth?
as we look back overtime we find ourselves wondering,
have we thanked you enough for all you have done for us,
Times you were by our sides
To help and support during
Those chilly winter mornings during my school times,
Throughout the years you've
Always been a wonderful
Man you see,
When I was small you took the time to bounce me
on your knees,
So many hard times in my life you've helped
to get me through, By helping me in
my science projects and making my kaleidoscope,
Even though I might not
Say that I appreciate all you do,
Richly blessed is how
I feel having a nanu
Just like you,

Durva Sharma
B.Com Third Year
Won third prize in self-composed
Poetry (poetry unleashed)

DREAMS

The only place I can call my own
Which is mine and mine alone
A place where I go that no one else knows.
Where wishes and excitement grows
A place out reach
Safely secluded from one's preach
Beyond the clutch of those who plunder
The wealth of it and its life changing wonder
Where I keep my secrets and regrets
Away from the world's threats
The place I described, is all its seems
A magical place, I call my Dreams.

SHREYA UPASANI
M.A ENGLISH III SEM
CONSOLATION PRIZE IN SELF COMPOSED POETRY BY ENGLISH LITERARY SOCIETY

The Blue Canvas

Colours and hues filled my hazel orbs,
The paintings dancing in the blue canvas looked mesmerizing
Enough not to look away
Pinks and oranges, with red in between, filling the rest in a puddle of purple,
Caressing the lonely cloud,
Picturing a face, without a name or a place
Playing with images in my mind,
Through heavy water bags, the clouds were dancing here and there,
There wasn't a speck of blue left when the skies were coloured grey,
Even the bright light couldn't be held among the grey and heavy covers,
And then when they came flowing down, it blew the sand away,
The greens of the trees and all the plants stood vibrant as a light lamp,
The browns in the soil, soaked my feet and filled my nose with the heavenly earthly smell,
And oh I couldn't manage to grasp the rainbows in the frame of my device,
But well I've painted it beautifully in my mind,
So that I could sit in silence and write a lore of how it grew and vanished,
With coming sunrays and the background which slowly turned blue,
Beneath the final verdict of the time the night turned dark,
It came with a pretty crescent moon,
Slowly the colours flowing in the canvas shared their goodbyes,
And the curtains were dropped, colours were dancing in a spread,
The lights went out with little white dots,
Soon the colours would return,
And the canvas would be filled with splattered lots.

Sneha Dehariya, B.A. I Year

Soldier never die

The freedom that we have today
Is it a gift of someone else?
We are all living a gifted life.
That belongs to someone else.
Who's someone in my poetry?-2
None other than soldiers
A brother, a husband, a father
The sacrifice, the flame we hear.
The medals that we see today
Show the patriotism they have
They protecting our borders.
They preserve the values
It's a voice of legacy—2
the voice that we never hear.
We wave our flags high and low
to show the sacrifice you made.
Fallen are you, but never truly gone.-2
For you, India belongs.-2
Isn't it horrible? To the people's
Who lost their youth in war?
Or it's a cost or price of liberty.-2
That the children, families, sons, and daughters lost
I wondered.....how many like him
Had fallen through the year
How many died in foreign countries?
How many mothers' tears?
It is freedom.
Just freedom
That cost it all...
Freedom isn't free-2
Freedom is not free-2
I heard that many times
And I used to think it's just a phrase
But isn't a phrase
It's a curse....
That snatches everything away
That snatches everything away.....
Lastly..... -2
I just prayed to God that no soldier could truly die today. ...

Deepa Sharma
B. A 2nd year

जीवन संघर्ष

डगमगा रही है अगर कश्ती, तो डगमगाने दो
वक्त आजमा रहा है, उसे तुम्हे आजमाने दो
अभी संघर्ष हुआ ही कहा है, खुद को थोड़ा अपने
स्वरूप में आने तो दो
है दृढ़ संकल्प और साहस, तो खुद को थकने न दो
अपने दुश्मन को जरा बाद में हराना
पहले थके खुद के मन को हराने दो
सुलग रहें हैं बहुत से विचार
अपने सपनों को पाने के लिए
इस भीड़ की तपिश में खुद को जलाने तो दो
आयेंगे कई पड़ाव जीवन में
तुम खुद को अपने लक्ष्य से भटकाने मत दो
डगमगा रही है अगर कश्ती, तो डगमगाने दो
वक्त आजमा रहा है, उसे तुम्हे आजमाने दो।।

अर्चिता चावड़ा
एम. एस. सी (आहार एवं पोषण)

विजय पताका

क्या संकल्प तुम्हारा आज भी, सूर्य जितना अटल बैठा है?
क्या बाहर ज्वाला, भीतर अब भी शुद्ध जल तुम्हारे बहता है?
या हालात से हार मानकर, जी को तुमने सिकोड़ लिया
क्या कर्म, धर्म, काम, मोक्ष के फेरे में, विजयपथ तुमने छोड़ दिया?
(आने वाली पंक्तियों से अपना सफर याद करो मुसाफ़िर .....)
याद करो एक रोज आंधी ने लोरी सुनाई थी,
उस आंधी में गर्जन कर तुमने, भगवा ध्वज लहराई थी।
जब जेब कुछ छोटी थी तुम्हारी,
तब उमर ने भी तलाशी ली थी,
वो क्या जाने रण छोड़ना, तुम्हारी न कभी नीति थी।
प्रचंड शौर्य, दोगुना उत्साह तुमने अपने अंदर जना था
समस्याएं यदि चुम्बक निकली तो लहू भी लोहा बना था।
थककर बैठना तुम्हारा, शोभा न तुमको देता है
आगे बढ़ने का प्रोत्साहन खुद कर्म तुमको देता है।
परिश्रम तुम्हारा पग पग देखो, निरंतर बढ़ता जाएगा,
पर कर्म से न चूकना अपने, यह उज्ज्वल तुम्हे बनाएगा
और सार लो, अब, जिंदगी में संघर्ष से केवल विजय
न मिलती है, कर्म-धर्म का हिसाब भी यह दुनिया बखूबी रखती है।
और.... यदि मेहनत तुम्हारी अच्छी है तो निश्चय ही तुम विजय प्राप्त करो
पर यदि कर्म तुम्हारा सच्चा है तो, विजय तुम्हे प्राप्त करे !

मान्या गुर्जर, BA 2year
Secured I position in self-composed poetry competition

पूर्ण

थी योग्य नहीं तेरे तो क्या
क्या योग्य नहीं बन सकती मैं
थी बात नही मुझमें तो क्या
कुछ बात नही कर सकती मैं
थी साथ नही तेरे तो क्या
अब साथ नही रह सकती मैं
कहता तू स्वयं को ईश्वर
क्या भक्त नही बन सकती मैं
थी भक्त नहीं तेरी तो क्या
अब दास नहीं बन सकती मैं
करता तू सभी की पूर्ति
क्या मांग नही कर सकती मैं
करते है सभी तेरी आरती
क्या पूज नही तुझे सकती मैं
करती हूँ बड़ा ही प्रेम तुझे
क्या डाँट कभी नहीं सकती मैं
रहता है सदा तू साथ मेरे
फिर दर नहीं रह सकती मैं
देता है मुझे तू इतना कुछ
क्या दान नहीं कर सकतीं मैं
आ पास गया तू है इतना
अब दूर नहीं जा सकती मैं
कहने को बहुत कुछ बाकी है
पर पूर्ण नहीं कर सकती मैं-

PRIYANKA CHAUDHARY
M.A 3rd sem

ज़िंदगी बसर करना

ज़िंदगी गुजारना नहीं
जीना सीखिए
हर ग़म में मुस्कुराना सीखिए
गुस्से को ज़ब्त करके
अपने लहज़े में नरमी बनाना सीखिए
दुनिया की इस चकाचौंध में
सादगी से ज़िंदगी बसर करना सीखिए

मदीहा हफीज़
बीकॉम तृतीय वर्ष

THE BLUE BLANKET

I never get bored, I have sky 24/7 with me,
It's the sky who loves to sit alone with me.
It listens to me and never complains,
It admires me and therefore my smiles never go in veins.
It shines when it sees me smiling,
It rains when it sees me crying.
It makes me feel different every day,
It makes me feel myself beautiful in every way.
Umm...Yeah, even with those stubborn pimples,
With the dark circles and even when I don't have smiley dimples.
None of these words are relatable with the sky I know, Uff crazy me.
But it's the sky only, staring at me laying on the hay,
Listening to my humming and the words I say.

- Aasiya Zehra, B.Sc Ist yr

Won 1st prize for the self-composed poetry for ENGLISH language organized by Sanskrit and Urdu Dept. on the topic Nature (Prakriti) and Environment (Paryawaran).

The Only Moon

He sees me with his wonderful light
I wonder why do I see him only at night
He often goes for walks
Those walks are only for the day
He maybe frail, but he isn't blind or deaf
He is so timid, but sometimes he is brave
When I look up for him, I can only see
That he's so beautiful, he's an angel I believe
Oh, he's round but is so handsome
I wish I could meet him in person
There are things only meant for the sky
As I am here with shimmers in my eyes
If he talked, I'd share all my secrets
But he seems to know all but one
Those who shines are all around
He can be only, but is never alone

He's sweet, he's better- as he is,
I wonder he's shy, as he covers-
himself in the shades
Oh, don't worry he isn't my lover
He was until I knew
He wasn't the one
He's the only moon-
to me, but the distance is so wide
As I said, he only comes at night.

Sneha Dehariya, B.A. I Year
Awarded second prize in the self-composed poetry competition

नदी

मेरा अतीत कितना सुंदर था
गाँवो के घाटों से
किसानों की खेत की बातों से
बहती थी मैं अपने ठाठो से
पर अब सारी खुशियां मेरी हार गयी
आखिर 21वीं सदी आते-आते मैं मर गई।
नाले के जहरीले पानी से
अवैध खनन की ढाणी से
आखिर मैं सारी रसायन से भर गई
21वीं सदी आते-आते आखिर मैं मर गई।
पहले बूढ़े पेड़ो ने ले रखी थी
मुझे जिंदा रखने की जिम्मेदारी।
खत्म हुए हैं वह जब से
मैं भी हो गई हत्यारी।
बाढ़ में अब ना कोई करें मुझे काबू
नए वृक्ष लगाने आए थे तीर मेरे
वह भी खा गए अफसर बाबू
पूजा आरती से अब ना खुश होऊंगी।
वृक्ष लगाओ तीरे मेरे तो शायद बचूंगी।
हर साल बारिश ख़त्म होते ही मै
पत्थर कचरे से भर गयी।
21 वी सदी आते आते आखिर मैं मर गयी।

कंचन पाटेकर
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर हिन्दी

एक बेटी के मन के विचार

इस घृणित समाज में क्या सम्मान पाऊंगी?
घर से निकलते हुए लोगों को क्या मुंह दिखाऊंगी।
जब कोई पूछेगा मुझसे तो क्या मैं जवाब दे पाऊंगी?
और जब देंगे लोग मुझे ताना तो क्या मैं सुन पाऊंगी?
फिर मैं कैसे शाला जाऊंगी ?
क्या मैं ऐसे पढ़ पाऊंगी?
दम घुटेगा मेरा एक कमरे में,
मैं कैसे सांस ले पाऊंगी।
बस अपने घर में ही कैद रह जाऊंगी।
कोई मुझे कुछ कहेगा यह मैं सह नहीं पाऊंगी।
इसके बाद भी क्या मुझे कोई अपनाएगा?
क्या मैं इस दुनियां में अकेली कुछ कर पाऊंगी।
मैं किससे बात करूंगी?
किसे अपने गम बताऊंगी।
मैं कैसे आगे बढ़ पाऊंगी?
इसलिए मैं मर जाऊंगी।
मैं मर जाऊंगी।

निधि अहिरवार
एम. ए. हिन्दी साहित्य प्रथम सेमेस्टर

"बच्चा हूँ बच्चा रहने दो"

बच्चा हूँ बच्चा रहने दो यार.....
बच्चा हूँ बच्चा रहने दो या.....
दुनिया की बातो से अनजान हूँ अभी...
समझने का मौक़ा दो यार.....
बच्चा हूँ बच्चा रहने दो यार ....
दूसरो की शादी में मस्ती करता हूँ.....
मेरा बाल विवाह मत करो यार मत करो यार
बच्चा हूँ बच्चा रहने दो यार ...
अपना भारी बैग उठाया नहीं जाता.....
दूसरो की होटलों, कारखानों, में काम मत करने दो यार मत करने दो.....
बच्चा हूँ बच्चा रहने दो....
बाल मजदूरी बंद करो यार बाल मजदूरी बंद करो.....

Ravina Prajapati
M.A. Social Work

क्या कहूँ किससे कहूँ

किसी ने मुझे बेटी तो बहन कहा
किसी ने घर की इज्जत तो घर की लाडली कहा
यूँ तो थक सी गयी हूँ दुनिया की बातों से
किसी ने कम तो किसी ने कमजोर कहा
किसी ने हक तो किसी ने अपना कहा। ....
क्या कहूँ किससे कहूँ
कि थक गयी हूँ पर हारी नही मैं
कि औरत हूँ कोई चीज नही मैं
तुमने कहा सर्वश्रेष्ठ पर समझा मोहरा
तुमने कहा देवी पर समझा खिलौना
यूँ तो टूट सी जाती हूँ तुम्हारी इन्हीं बातों पे मैं
पर हौंसला देकर दोहराती हूँ कि क्यू ही सुनती हूँ तुम्हारी ये बात मैं.....
क्या कहूँ किससे कहूँ
यूं तो हर रूप मे प्यार दिया है मैंने तुम्हें
कभी मां बनके ममता दी
तो कभी गुरु के शिक्षा दी
काश तुमने भी कभी मेरा दर्द समझा होता
काश तुमने भी कभी मुझे अपना कहा होता.....
क्या कहूँ किससे कहूँ
कि काश तुम एक औरत ना समझ के एक इंसान ही समझ लेते
काश तुम हक ना कह के अपना ही समझ लेते.....
क्या कहूँ किससे कहूँ
यूं तो बस एक बात याद दिलाती हूँ
कि मैं स्त्री हूँ, मैं नारी हूँ, मै दुर्गा हूँ और मै ही काली हूँ....
मैं द्रोपदी हूँ, मै सीता हूँ और मैं ही भगवत गीता
यूं तो बहुत सुन रखी है मैंने तुम्हारी जुबानी अपनी कहानी
पर अब इस जग को सुनाऊँगी अपनी जुबानी अपनी कहानी....
क्योंकि अब ना दोहराउंगी ना पूछूंगी ना कहूँगी कि क्या कहूँ किससे कहूँ .....

शिफा हुसैन

मेहनत सीढ़ियों की तरह
होती हैं और भाग्य लिफ्ट
की तरह। लिफ्ट तो किसी
भी समय बंद हो सकती
है पर सीढ़ियाँ हमेशा
ऊँचाई की ओर ही ले
जाती हैं।

हमारा महाविद्यालय : मीडिया में

जी-20 देशों के राष्ट्राध्यक्षों के रूप में आईं छात्राएं, विश्व कूटनीति पर की चर्चा

नूतन कॉलेज • स्पीच कॉम्पिटिशन में 30 स्टूडेंट्स ने लिया भाग

एक राष्ट्र, एक चुनाव पर स्टूडेंट्स ने रखे तर्क, रक्षंदा खान बनीं विनर

होम साइंस का मतलब सिलाई या खाना बनाना नहीं

छात्राओं ने कार्यशाला में किया प्रतिनिधित्व

भोपाल। सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी कन्या महाविद्यालय (नूतन कॉलेज) शिवाजी नगर के प्राणी शास्त्र विभाग के तत्वावधान में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस एवं अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस के उपलक्ष्य महाविद्यालय के प्राणी शास्त्र विभाग की बीएससी एवं एमएससी समूह की छात्राओं ने संचालनालय पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय में आयोजित कार्यशाला तथा कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर में वन विभाग द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला में शामिल होकर नूतन कॉलेज का प्रतिनिधित्व किया। इन कार्यक्रमों में सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी कन्या महाविद्यालय (नूतन कॉलेज) की प्राचार्य डॉ. शैलबाला बघेल, विभागाध्यक्ष एवं आंतरिक गुणवत्ता प्रकोष्ठ के समन्वयक डॉ. मुकेश दीक्षित, डॉ. प्रतिमा खरे, डॉ. चन्दना बसु आदि उपस्थित थीं।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्राओं को मिला मार्गदर्शन

सरोजिनी नायडू गर्ल्स कॉलेज में मनाया राष्ट्रीय हैंडलूम दिवस

भोपाल। सोमवार को सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय के टैक्सटाइल्स एवं क्लोदिंग विभाग द्वारा राष्ट्रीय हैंडलूम दिवस मनाया गया। इस अवसर पर कॉलेजों की प्राचार्य डॉ. शैलबाला सिंह बघेल ने छात्राओं को हैंडलूम वस्तुओं की महत्ता व महिला सशक्तिकरण एवं रोजगार से अवगत कराया। राष्ट्रीय हैंडलूम दिवस 2023 की थीम को दृष्टिगत रखते हुए विभाग द्वारा भारतीय हैंडलूम वस्त्रों पर ऑनलाइन क्विज, डिजिटल पोस्टर निर्माण, मध्यप्रदेश के हथकरघा से निर्मित उत्पादों पर पावर पॉइंट प्रस्तुतिकरण आदि विधाओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभाग की छात्राएं, विभागाध्यक्ष डॉ. रंजना त्रिवेदी, डॉ. रंजना उपाध्याय एवं डॉ. निशी शर्मा उपस्थित रहीं।

कॉम्पिटिशन • नूतन कॉलेज में 'साइंस एंड एडवेंचर' थीम पर एकला का आयोजन

हैरी पॉटर, गुलिवर और पाइरेट्स ने किया एंटरटेन

नूतन कॉलेज में खुला बॉटनिकल गार्डन

औषधीय पौधों का पोषण कर रहे स्टूडेंट्स

सरोजिनी नायडू शा.क. महाविद्यालय का कार्यक्रम
तुलसीदास की जयंती पर छात्राओं ने उनके दोहे का सस्वर गायन किया

संथाली नृत्य की प्रस्तुति, स्टूडेंट्स ने दिखाई बिरसा मुंडा की कहानी

नुक्कड़ नाटक... समय रहते खोजें स्ट्रेस, डिप्रेशन से निकलने के उपाय

'लीगल ऐड क्लीनिक' दे रहा महिलाओं से जुड़ी समस्याओं का लीगल समाधान

City भास्कर
नूतन में 4 भाषाओं में पाठ

BOB organises Hindi speech competition at Nutan College

STAFF REPORTER ■ BHOPAL

On the occasion of Hindi Day 2023, a Hindi speech competition was organised by Bank of Baroda, Regional Office, Bhopal on Thursday at Sarojini Naidu Government Girls Post Graduate Autonomous College, Bhopal.

Undergraduate and post-graduate students participated enthusiastically in the competition. The five best performing students were rewarded by the Bank and all the participating students were given certificates of participation.

On behalf of the bank, Ajay Sharma, Branch Head of Housing Board Branch and Gaurav Singh Gurjar from Regional Office, Bhopal were present in the program. On behalf of the college, Principal Shailbala Singh Baghel, Chairperson of Hindi Department Dr. Kirti Sharma and other faculty members were present in the program.

नवप्रवेशित स्वयंसेवकों ने कई विधाओं में दिखाई प्रतिभा

कॅरियर काउंसलिंग कार्यशाला में बताए इंटरव्यू में सफलता हासिल करने के गुर
इंटरव्यू में जनरल अवेयरनेस की समझ भी जरूरी
रोज पढ़ें अखबार

सरोजिनी नायडू कन्या महाविद्यालय को मिला NSS 2021-22 अवॉर्ड

मनोदैहिक विकारों की वजह अस्त-व्यस्त जीवन शैली

एजुकेशन अपडेट
आज गांधीजी होते तो हमारे ग्रामीण क्षेत्र अत्यंत सशक्त होते

नाटक से बताया निर्धनता में मनुष्य कितना लाचार होता है

कविता पाठ | **प्रकृति और पर्यावरण विषय पर छात्राओं ने सुनाईं भावपूर्ण कविताएं**

कदर जो कुदरत की न हुई तो कहीं ये नजारा नहीं मिलेगा...

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. धरा पे चांद की चांदनी और चमन में तारा नहीं मिलेगा... कदर जो कुदरत की न हुई तो कहीं नजारा नहीं मिलेगा... जब प्रकृति विषय पर छात्रा ने अपनी ये कविता सुनाई तो पूरा हॉल तालियों से उत्साह वर्धन देने लगा। यह मौका नजारा देखने को सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में। यहां हिंदी और अंग्रेजी साहित्यिक सांस्कृतिक समिति तथा उर्दू और संस्कृत विभाग की ओर से कविता पाठ का आयोजन किया गया था। कविता पाठ का विषय प्रकृति और पर्यावरण था। कार्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न भाषाओं के रचनाकारों की रचनाओं में प्रकृति के अद्भुत और अद्वितीय सौंदर्य को प्रस्तुत करना तथा पर्यावरण के प्रति छात्राओं को जागरूक करना था। इस कविता पाठ में छात्राओं ने अत्यंत उत्साह से सहभागिता की तथा अति सुंदर रचनाओं का पाठ किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ शैल बाला सिंह बघेल ने छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रेरित किया। आयोजन में हिंदी और अंग्रेजी साहित्यिक सांस्कृतिक समिति की संयोजक डॉ कीर्ति शर्मा तथा डॉ सोनल तिवारी, उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ ... तथा डॉ ... प्राध्यापक उपस्थित थीं।

एचआईवी एड्स जागरूकता कार्यक्रम

सरोजिनी नायडू शा. कन्या विद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की ओर से एचआईवी एड्स जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें डिस्ट्रिक्ट कोऑर्डिनेटर डॉ राजीव पांडे ने जानकारियां दीं। उन्होंने बताया कि एचआईवी एड्स न तो छूने से, न साथ खाने से, न ही गले मिलने से फैलता है। इसके फैलने के जो कारण हैं, वह हैं - संक्रमित खून का चढ़ना, संक्रमित सुई का उपयोग करना, असुरक्षित यौन संबंध। मौके पर प्राचार्य डॉ शैल बाला सिंह बघेल, एनएसएस प्रभारी डॉ मंजुला विश्वास और डॉ मीना सक्सेना मौजूद थीं।

श्रीराम के जीवन पर पोस्टर मेकिंग और स्लोगन प्रतियोगिता

जागरण सिटी रिपोर्टर। अयोध्या धाम में भगवान श्रीराम के पावन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में नूतन कॉलेज में रचनात्मक विधाओं का आयोजन किया गया। इन विधाओं में पोस्टर मेकिंग तथा स्लोगन प्रतियोगिताओं का आयोजन महाविद्यालय में किया गया। पोस्टर मेकिंग तथा स्लोगन प्रतियोगिता श्रीराम जी के जीवन मूल्य पर आधारित थी। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. शैल बाला सिंह बघेल ने श्री भगवान् श्री रामजी के जीवन मूल्यों के महत्व से छात्राओं को अवगत कराया। पोस्टर मेकिंग में प्रथम स्थान पर छात्रा सलोनी राजपूत ने अयोध्या स्थित श्रीराम जी मंदिर में श्रीराम जी के प्रवेश को अत्यंत कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया।

कार्टून से किया संवाद, अरे भाई तुम्हारी इंद्र देव से दोस्ती है क्या

नूतन में गुजराती गीतों पर 280 छात्राओं ने किया गरबा नृत्य

रिपोर्टर ■ IamBhopal

Staff members enjoying picnic on January 21, 202

युवा संसद: मॉडल जी २० शिखर सम्मेलन

वाणी २०२२ का विमोचन

भारतीय नौसेना की प्रथम महिला ऑफिसर शहीद बेटी किरण शेखावत के जीवन से प्रेरित नाटक वीरा का मंचन – अगस्त १५, २०२३

First visit of Hon'ble Minister, Higher Education, M.P. in our Institute on January 9, 2024

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय
शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.)-462016, दूरभाष : 07552552560, 2552567
E-mail: hegsnpggcbho@mp.gov.in Website: www.snpgcollege.ac.in